RNI नं. : 7387/63
मुद्रण तिथि : 15-16 अगस्त 2023
डाक प्रेषण तिथि : 15-17 अगस्त 2023
ISSN : 2456-611X

वर्ष : 61 अंक : 09
मूल्य : ₹10/- पृष्ठ संख्या : 72
डाक पंजीयन संख्या : BIKANER/022/2021-23
Office Posted At R.M.S., Bikaner

राम चमकते भानु समाना

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ का मुखपत्र

श्रमणोपासक

धार्मिक पाक्षिक

क्षमा धर्म है सर्वोपरि, इससे बड़ा न कोई श्रेष्ठ।
पर्व पर्युषण के पावन अवसर पर, करें संकल्प नहीं रहे द्वेष।।
जैसा मैं हूँ, वैसे ही सब, जीव-जीव से प्रेम बढ़े।
क्षमा करना और क्षमायाचना, जीवन के ये अंग बनें।।

यदि एक हाथ में तलवार है तो
दूसरे हाथ में क्षमा भी होनी जरूरी है।

नींद के लिए अलग से गोली न लें,
श्रम उसकी श्रेष्ठ दवा है।

मन को साहसी नहीं, हिम्मती बनाएँ।

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

ज्ञान सार

आगमवाणी

अत्थो मूलं अणत्थाणं।

-मरणसमाधि (603)

अर्थ, अनर्थों का मूल है।

The material wealth is the cause of all evils.

जेण सिया, तेण णो सिया।

-आचारांग (1/2/4)

तुम जिन (भोगों या वस्तुओं) से सुख की आशा रखते हो, वस्तुत: वे सुख के हेतु नहीं हैं।

The things (means of sensual enjoyment) from which you expect pleasure are, actually, not the sources of pleasure (but, ultimately, they result is great misery for the uncumbered soul).

सम्मत्तदंसी न करेइ पावं।

-आचारांग (1/3/2)

सम्यग्दर्शी साधक पापकर्म नहीं करता।

The spiritual aspirant endowed with right-vision commits no sin.

नत्थि चरित्तं सम्मत्तविहूणं।

-उत्तराध्ययन (28/29)

सम्यक्त्व (सत्यदृष्टि) के अभाव में चारित्र नहीं हो सकता।

The (right) conduct is impossible in the absence of right-vision.

जं कुणदि सम्मदिट्ठी, तं सव्वं णिज्जरणिमित्तं।

-समयसार (193)

सम्यग् दृष्टि आत्मा जो कुछ भी करता है, वह उसके कर्मों की निर्जरा के लिए ही होता है।

Whatever the right-visioned soul does is for freedom from karmic bondage.

दंसणसुद्धो सुद्धो, दंसणसुद्धो लहेइ णिव्वाणं।
दंसणविहीण पुरिसो, न लहइ तं इच्छियं लाहं।।

-दर्शन पाहुड (39)

जो सम्यग्दर्शन से शुद्ध है, वही निर्वाण प्राप्त करता है। सम्यग्दर्शन-विहीन मानव इच्छित लाभ प्राप्त नहीं कर पाता है।

One who has attained the purity of right-vision can only liberate. The aspirant devoid of right-vision cannot gain the desired fruit of liberation.

साभार- प्राकृत मुक्तावली

श्रमणोपासक

अनुक्रमणिका

स्थायी स्तम्भ

07 जीवनी
A Revolutionary Transformation
-संकलित

09 धर्मदेशना
क्षमामूर्ति खंधक मुनि
-आचार्य प्रवर 1008 श्री जवाहरलाल जी म.सा.

13 धर्मदेशना
उत्तम क्षमा की उत्कृष्टता
-आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

18 धर्मदेशना
श्रेष्ठ श्रोता - बने उपभोक्ता
-आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

24 ज्ञान सार
ज्ञान पहेली

26 ज्ञान सार
ऐसी वाणी बोलिए
-संकलित

29 ज्ञान सार
श्रीमद् भगवतीसूत्र
-कंचन काँकरिया

30 तत्त्व ज्ञान
मनुष्य के भेद
-संकलित

39 किड्स कॉर्नर
बालमन में उपजे ज्ञान
-मोनिका जय ओस्तवाल

55 नीमच चातुर्मास समाचार
-महेश नाहटा

संस्कार सौरभ

31 महासती सुभद्रा
-संकलित

37 धर्ममूर्ति आनन्दकुमारी
-संकलित

41 क्षमा विवेक और अहिंसा
-कुमुद जैन

43 क्षमापर्व की सार्थकता
-संकलित

45 क्षमा विवेक
-डॉ. आभा किरण गाँधी

48 श्रवण विवेक
-सजग

50 क्षमा : अवसाद से दूर होने का मार्ग
-रोमिका नवलखा

52 जिज्ञासा-समाधान
- पंचम-समिति विषयक

भक्ति रस

42 गुरु वाणी का श्रवण
-राखी अलिझाड़

44 क्षमा : मूल भी, फूल भी
-मोनिका मिन्नी

47 क्षमा धर्म का प्राण है ....
-प्रतिभा तिलकराज सहलोत

51 क्षमा से होता बेड़ा पार
-लता बोथरा

53 क्षमा वीरस्य भूषणम्
-संध्या धाड़ीवाल

54 अंतगड सूत्र ....
-बी. शांतिलाल पोखरना

मुनित्व का प्राण क्षमा

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

प्राणों के रहने से शरीर प्राणवान-चैतन्य माना जाता है। प्राणों का वियोग होते ही देह चेतना रहित हो जाती है। तन की चैतन्यता प्राणों के बल पर निर्भर है। जैसे आयुष्य बल, प्राणादि से देह सजीव रहती है, उसमें सचेतनता बनी रहती है, वैसे ही क्षमादि दश यति-धर्म मुनित्व का प्राण हैं। उनके होने पर ही मुनित्व सचेतन-सजीव रह सकता है अन्यथा भावशून्य मात्र कलेवरवत् बना रह सकता है। क्षमा का भाव- वैर-विरोध का कोई आकार जो पहले कभी बना था वह रहे नहीं, वे लेश्याएँ रहें नहीं, उनकी गंध भी रहे नहीं, वह क्षमा है। यह नहीं कि आज तो खमत-खामणा कर लिया और कुछ समय पश्चात् जब कोई बात सामने आए तो पुरानी सारी बातें हरी हो जाएँ। इसका अर्थ है उस क्लेश को व्यक्ति ने अपने में जमाए रखा है, उसे नष्ट नहीं किया है। जैसे स्टोरेज में वस्तुएँ संग्रहित रखी जाती हैं, वैसे ही क्लेशमय बातों का भण्डारण कर रखा गया है। वह उसकी सम्पत्ति के रूप में मौजूद है, पर ऐसा नहीं होना चाहिए। नदी का जो पानी बहता हुआ समुद्र में चला गया, वह वापस नदी में नहीं आता। वैसे ही जिससे क्षमापना हो गया, सामने वाले ने क्षमापना की हो या न की हो पर उसने क्षमा कर दिया तो वह बात वापस कभी उठनी ही नहीं चाहिए। न ही उसके अन्तर में जमी ही रहनी चाहिए। यदि वह उसके अन्तर में जमी हुई हो तो मन अंतर से साफ हुआ ही कहाँ? अभी केवल पटाक्षेप किया गया है। अभी उसे निलम्बित किया है, पर उसकी मौजूदगी कायम है। उसे हटाया नहीं गया है। यह क्षमा नहीं बल्कि नासूर है जो ऊपर से तो ठीक लग रहा है, पर भीतर ही भीतर हरा-भरा रहता है, भीतर ही भीतर बढ़ता जाता है। ऐसी क्षमा आत्म-हितकर तो हो ही नहीं सकती। वह हित के स्थान पर अहितकर ही होती है। मुनित्व ऐसी क्षमा से जिंदा नहीं रह सकता। मुनित्व के लिए तो वह क्षमा चाहिए जो अन्तर को पवित्र-पावन कर दे। वही क्षमा सचमुच में क्षमा है।

> **"क्षमा का भाव- वैर-विरोध का कोई आकार जो पहले कभी बना था वह रहे नहीं, वे लेश्याएँ रहें नहीं, उनकी गंध भी रहे नहीं, वह क्षमा है।"**

वैशाख शुक्ल 11, शनिवार, दिनांक 06.05.2017

साभार- उपांशु

सुनहरी कलम से...

जय जिनेन्द्र!

हम सभी के समक्ष 'क्षमा पर्व' उपस्थित है। क्षमा के अर्थ से हम सभी भली-भाँति परिचित हैं। कई बार हम क्षमा के बारे में पढ़ चुके हैं, परन्तु जानने योग्य यह है कि क्षमायाचना दिवस को 'पर्व' क्यों कहा गया है। सामान्यत: पर्व को त्यौहार शब्द से भी परिभाषित किया जाता है साथ ही इसके लिए महोत्सव, उत्सव, मंगल कार्य, जलसा व समारोह आदि शब्द भी उपयोग में लिए जाते हैं। प्राय: पर्व किसी विशेष औचित्य, प्रसंग व खुशी के अवसरों पर मनाए जाते हैं।

चिन्तन का विषय है कि क्या क्षमायाचना करना आनन्द का विषय है? क्या क्षमायाचना करने से हमें मंगल की अनुभूति होती है? क्या हम यह पर्व उत्सव के भाव से मनाते हैं?

इन प्रश्नों के अनेक उत्तर प्राप्त हो सकते हैं, परन्तु अन्तर का मर्म यह है कि क्षमा देने से हमें शान्ति का अनुभव होता है या क्षमा मांगने से हमें आनन्द मिलता है। यदि हम इस विचार से क्षमायाचना करते हैं कि क्षमा के पश्चात् हमारे मन में उस व्यक्ति के प्रति किसी तरह का कषाय, राग-द्वेष नहीं रहेगा अर्थात् सामान्य शब्दों में उस व्यक्ति के प्रति क्रोध, चिड़चिड़ापन, बदले की भावना नहीं रहेगी तो ही हमारे द्वारा क्षमायाचना करना सार्थक होगा।

असल में देखा जाए तो क्षमा एक यात्रा है, जो कई स्थितियों से होकर गुजरती है। इस यात्रा के विभिन्न पड़ावों में सर्वप्रथम उस व्यक्ति के प्रति आक्रोश को खत्म करना, जो हुआ उसे सिर्फ एक स्थिति मानना और स्वीकार करना, उस व्यक्ति के प्रति समभाव लाना, उसे क्षमा करना तथा उस कृत्य की पकड़ को छोड़कर सबसे अन्तिम पड़ाव सद्भावना को स्वयं में समाहित करना है।

मंथन करें कि क्षमा की यह यात्रा सफलतापूर्वक समाप्त होती है या हमारी गाड़ी बीच में ही अटककर रह जाती है? यदि हमारी यात्रा पूर्ण हो जाती है तो मंजिल स्वरूप हमें उस परमानंद की प्राप्ति होती है, जिसकी हमारी आत्मा को आवश्यकता है और जिससे आत्मा हल्की होकर अपने कल्याण पथ पर अग्रसर होती है।

कहा जाता है कि 'कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती', परन्तु यह कहना भी अनुचित नहीं है कि 'क्षमायाचना किए बिना नौका पार नहीं होती'।

परम पूज्य आचार्य भगवन् फरमाते हैं कि कोई हमारे साथ कितना भी गलत करे, गाली-गलौच करे, धोखा दे, परन्तु हमारे मन में द्वेष की भावना नहीं आनी चाहिए। फिर देखिए कि आनन्द की कैसी लहर आती है!

क्षमा की इस यात्रा को मंगलमय बनाने हेतु हमारे आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर सहित समस्त चारित्रात्माएँ अनवरत प्रयास कर रहे हैं। अत: इस क्षमापना पर्व को मंगलकारी समारोह बनाने हेतु हम अपने समस्त राग-द्वेष त्याग कर इसे उत्सव रूप में मनाएँ।

-सह-सम्पादिका

Pujya Hukmesh

A REVOLUTIONARY TRANSFORMATION

– Golden Glimpses of ACHARYA SHRI HUKMICHAND JI M.SA.

Continued from 15-16 July 2023 :

After the "Achar Vishuddhi Mahotsav" the English translated series of "Pujya Hukmesh" is presented below to make the readers aware about the life of Acharya Shri Hukmichand Ji M.Sa.

Dear children!

Influenced by the transformative revolution led by Pujya Acharya Shri Hukmesh, Pujya Shri Sheetaldas Ji M.Sa., Shri Tej Singh Ji M.Sa., and others also became supportive participants in the transformative revolution and began to explore and determine the role of being informants. Along with this, a dedicated practitioner in the Marwad, Pujya Shri Udaysagar Ji M.Sa., after witnessing a mismatch in the practice of Deeksha of his associate Sadhu Shri Rajmal Ji M.Sa.; left that Sangh and was influenced by the aroma of this transformative movement, embarked on an intense journey from Jodhpur towards Bikaner. Upon reaching, he surrendered himself completely at the feet of Pujya Shri Ji, expressing their earnest desire to seek him under Pujya Shri's guidance. At that moment, Pujya Acharya Hukmesh signaled to Yuvacharya Shivlal Ji M.Sa.

Additionally, Sadhvi Shri Nand Kanwar Ji M.Sa., influenced by Pujya Hukmesh's revolutionary movement, started wandering with complete devotion. She was born into the Pugalia family in Bikaner and married into the Surana family. She had taken Deeksha in Indore under Mahasati Ram Kanwar Ji M.Sa. but due to significant differences in conduct and practices, she, along with her fellow Sadhvis, Sadhvi Shri Rangu Ji M.Sa. and Shri Kheta Ji M.Sa., returned to Bikaner.

Wherever Pujya Shri Ji's feet touched a new land, the people of those areas were attracted by the influence of his penance and fervour and joined with complete devotion and surrendered to the revolutionary movement. Pujya Hukmesh had set out alone, but the mantra "Truth alone triumphs" started to manifest its meaningful significance. Because of the tremendous impact of Pujya Shri's austere discipline, apart from him, there were a total of 39 saints now.

No record was found of female deekshas, as Acharya Shri had entrusted all the arrangements to his leading sadhvis.

The names of those saints are as follows:

1. Acharya Shri Hukmichand Ji M.Sa.
2. Shri Dayalchand Ji M.Sa.
3. Pujya Shivlal Ji M.Sa.
4. Shri Mannalal Ji M.Sa.
5. Shri Chaturbhuj Ji M.Sa.
6. Shri Ummedmal Ji M.Sa.
7. Shri Uttamchand Ji M.Sa.
8. Shri Maganmal Ji M.Sa.
9. Shri Harakchand Ji M.Sa.
10. Shri Motilal Ji M.Sa.
11. Shri Shardul Ji M.Sa.
12. Shri Lalchand Ji M.Sa.
13. Shri Lalchand Ji M.Sa.
14. Shri Saalagram Ji M.Sa.
15. Shri Kevalchand Ji M.Sa.
16. Pujya Udaysagar Ji M.Sa.
17. Shri Rajmal Ji M.Sa.
18. Aacharya Shri Chauthmal Ji M.Sa.
19. Shri Jaychand Ji M.Sa.
20. Shri Pyarchand Ji M.Sa.
21. Shri Chaturbhuj Ji M.Sa.
22. Shri Roopchand Ji M.Sa.
23. Shri Dulichand Ji M.Sa.
24. Shri Hansraj Ji M.Sa.
25. Shri Kevalchand Ji M.Sa.
26. Shri Pannalal Ji M.Sa.
27. Shri Thaavar Ji M.Sa.
28. Shri Kunwar Ji M.Sa.
29. Shri Ghasilal Ji M.Sa.
30. Shri Chatro Ji M.Sa.
31. Shri Ramlal Ji M.Sa
32. Shri Dabar Ji M.Sa.
33. Shri Jhanvarlal Ji M.Sa.
34. Shri Ratanchand Ji M.Sa.
35. Shri Devilal Ji M.Sa.
36. Shri Swaroop Ji M.Sa.
37. Shri Rikhabdas Ji M.Sa.
38. Shri Vridhichand Ji M.Sa.
39. Shri Heerachand Ji M.Sa.
40. Shri Ghasilal Ji M.Sa.

Continued....

ZENITH

– PARAM PUJYA ACHARYA PRAVAR 1008 SHRI NANALAL JI M.SA.

Never lose patience. Ones who work diligently in spite of hurdles on the path of righteousness gets success for sure. When work is done selflessly, then it is rewarded from all ends thereby taking the person to the zenith of success and glory.

I have to 'so and so' task but do not have the means to accomplish it fully. Such thoughts are the signs of immaturity of that mind. If that immature mind engrosses himself with pure intent in his work, then all the required means would easily come his way, just like ants on sugar.

31-05-1951 Book – Deep Imprints

क्षमामूर्ति खंधक मुनि

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री जवाहरलाल जी म.सा.

(क्रोध, मान, माया तथा लोभ - ये चार कषाय भवचक्र में भ्रमण कराते हैं। अगर हम भवचक्र में भ्रमण नहीं करना चाहते हैं और आत्मा को शान्ति देना चाहते हैं तो क्षमा आदि साधनों द्वारा क्रोध आदि कषायों को दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए।

क्रोध आदि को जीतने का मार्ग तो बतलाया, परन्तु क्रोध आदि के उत्पन्न होने पर किस प्रकार सहनशीलता और क्षमा धारण करनी चाहिए, यह बात खंधक मुनि के उदाहरण द्वारा समझाता हूँ। सहनशीलता सीखने के लिए खंधक मुनि की सहनशीलता अपने लिए आदर्श है। इस आदर्श का अनुसरण करने में ही अपना कल्याण है।)

खंधक मुनि गृहस्थावस्था में राजकुमार थे। वे राजकाज करने में निपुण थे। उनके राज्य संचालन से प्रजा संतुष्ट और सुखी थी। एक बार उन्हें किसी विद्वान् मुनि का उपदेश सुनने का अवसर मिल गया। मुनिवर के उपदेश का प्रभाव उनके जीवन पर पड़ा। उन्होंने विचार किया- मैं अपनी धीरता और वीरता का उपयोग केवल दूसरों के ही लिए करता हूँ। मुझे अपने इन गुणों का उपयोग अपनी आत्मा के लिए भी करना चाहिए। इस प्रकार विचार कर उन्होंने माता-पिता से अनुरोध किया- 'मैं आत्मा का श्रेयस् करना चाहता हूँ, अतएव ऐसा करने की आज्ञा दीजिए।' माता-पिता ने कहा- 'पुत्र! तू आत्मा का श्रेयस् करना चाहता है, यह अच्छी बात है, प्रसन्नतापूर्वक ऐसा कर। खंधक जी बोले- 'संसार में रहकर आत्मश्रेयस् साधना मुझे कठिन प्रतीत होता है, अतएव मैं संसार का त्याग करके आत्मकल्याण करने की इच्छा करता हूँ।' पुत्र का यह कथन सुनकर उनके माता-पिता दुःखित हो कहने लगे- 'बेटा! संसार का त्याग थोड़े ही हो सकता है।' खंधक जी बोले- 'ऐसा है तो आप यह कहिये कि आत्मकल्याण न साध अथवा कहिये कि संसार का त्याग करके आत्मकल्याण नहीं किया जा सकता।' खंधक जी का यह कथन सुनकर माता-पिता उनका निश्चय समझ गए और उन्होंने संसार त्याग करके आत्मकल्याण करने की आज्ञा दे दी। साथ ही कहा- 'बेटा! तू क्षत्रिय पुत्र है। अतएव सिंह की भांति ही संयम का पालन करना।' खंधक जी ने माता-पिता की शिक्षा शिरोधार्य करते हुए कहा- 'मैं आपके आदेशानुसार संयम-पालन में सिंहवृत्ति धारण करने का अभ्यास करूँगा।'

खंधक जी ने उत्साह और वैराग्य के साथ संयम स्वीकार किया। पिता ने विचार किया- 'खंधक ने आज तक किसी प्रकार का कष्ट सहन नहीं किया है। अतएव मुझे ऐसी व्यवस्था कर देनी चाहिए कि उसे किसी प्रकार का उपद्रव न सतावे।' इस प्रकार पिता ने पुत्रमोह से प्रेरित

होकर पाँच सौ सैनिकों की व्यवस्था कर दी। ऐसा प्रबन्ध किया गया कि खंधक जी को इस बात का पता न लगे, मगर उनकी बराबर रक्षा होती रहे। सैनिक गुप्त रूप से खंधक मुनि के साथ रहने लगे। खंधक मुनि को इन रक्षक सैनिकों का पता नहीं था। वह तो यही मानते थे कि मेरी रक्षा करने वाली मेरी आत्मा ही है, दूसरा कोई नहीं है। इस प्रकार खंधक मुनि तप:श्चरण करके आत्मकल्याण करने लगे और आत्मा को भावित करते हुए ग्रामानुग्राम विचरने लगे।

विहार करते-करते वे अपनी संसारावस्था की बहिन के राज्य में पधारे। उनके पीछे गुप्त रूप से चले आने वाले सैनिक विचार करने लगे- 'अब खंधक जी अपनी बहिन के राज्य में आ पहुँचे हैं, अब किसी प्रकार के उपद्रव की सम्भावना नहीं है।' इस प्रकार निश्चिन्त होकर सैनिक अपनी-अपनी इच्छा के अनुसार दूसरे कार्यों में लग गए। इधर खंधक मुनि आत्मा और शरीर का भेदविज्ञान हो जाने के कारण तप:श्चरण द्वारा शरीर को सुखाकर आत्मा को बलवान बनाने में लग गए।

एक बार खंधक मुनि भिक्षाचरी करने के लिए राजमहल के पास से निकले। उस समय राजा और रानी राजमहल की अटारी पर बैठकर नगर-निरीक्षण करने के साथ-साथ मनोविनोद कर रहे थे। रानी की दृष्टि अकस्मात् मुनि पर पड़ गई। मुनि को देखते ही रानी विचारने लगी कि मेरा भाई भी इन्हीं मुनि की तरह भ्रमण करता होगा। इस तरह विचारमग्न होने के कारण रानी क्षणभर के लिए मनोविनोद को भूल गई। राजा सोचने लगा कि साधु को देखकर यह मुझे भूल गई है, दूसरे ही विचारों में डूब गई है। यह साधु शरीर से तो कृश है, पर इसका ललाट तेजस्वी है। इस मुंडित साधु के प्रति रानी का प्रेम भाव तो नहीं होगा? अतएव इस साधु को समाप्त कर देना ही ठीक है। इस प्रकार विचार कर राजा ने नौकर (चाण्डाल) को बुलाकर आज्ञा दी- 'उस साधु को वधभूमि पर ले जाओ और मारकर उसकी खाल उतार लाओ।'

राजा की यह कठोर आज्ञा सुनकर चांडाल काँप उठा। वह मन ही मन विचार करने लगा- 'आज मुझे कितना जघन्य काम सौंपा गया है। अगर मैं राजा की आज्ञा का उल्लंघन करता हूँ तो मैं उनका कोपभाजन बनूँगा और शायद मुझे प्राणदण्ड दिया जायेगा।' इस प्रकार विचार कर वह खंधक मुनि के पास आया और उन्हें पकड़ने लगा। मुनि ने पूछा- 'मुझे किस कारण पकड़ा जा रहा है?' चांडाल ने कहा- 'राजा ने पकड़ने की आज्ञा दी है। अतएव चुपचाप मेरे पीछे चले आओ।'

मुनि ने पूछा- 'चलना कहाँ है?'

चांडाल- 'श्मशान भूमि में।'

मुनि- 'किसलिए?'

चांडाल- 'राजा की आज्ञा के अनुसार वहाँ तुम्हारा वध किया जाएगा और तुम्हारे शरीर की खाल उतारी जायेगी।'

यह हृदयविदारक वचन सुनकर मुनि को आघात पहुँचना स्वाभाविक था, परन्तु खंधक मुनि को शरीर और आत्मा का भेदविज्ञान ज्ञात था। अतएव वह विचारने लगे- 'यह शरीर नश्वर है। किसी न किसी दिन जीण-शीर्ण हो जाएगा। ऐसी स्थिति में अगर आज ही

हओ न संजले भिक्खू, मणं पि न पओसए।
तितिक्खं परमं नच्चा, भिक्खू धम्मं समायरे।।

अर्थात् कोई प्राणों का हरण करे तो भी भिक्षु उस पर क्रोध न करे, यहाँ तक कि मन में भी द्वेष न लाये। बल्कि तितिक्षा (सहनशीलता) को उत्तम गुण समझकर क्षमाशील साधु क्षमाधर्म का ही पालन करे।

चाहत जीव सबै जग जीवन, देह समान नहीं कद प्यारो।
संयमवंत मुनिश्वर को, उपसर्ग ए तन-नाशन हारो।।
तो चिंतवे हम आतमराम, अखंड अबाधित ज्ञान भंडारो।
देह विनाशक सो हम तो नहीं, शुद्ध चिदानंद रूप हमारो।।

यह नष्ट होता है तो इसमें मुझे दु:ख मानने की क्या आवश्यकता है? मेरी आत्मा तो अजर-अमर है। उसे कोई नष्ट नहीं कर सकता।' इस प्रकार विचार करके और धैर्य धारण कर खंधक मुनि चुपचाप नौकर के पीछे-पीछे चलने लगे। जब दोनों वधस्थल पर पहुँचे तो मुनि ने चाण्डाल से कहा- 'भाई! मेरे शरीर में रक्त नहीं है, इस कारण चमड़ी हाड़ों के साथ चिपट गई है। अत: खाल उधेड़ने के लिए कोई साधन साथ में लाये हो या नहीं? अगर कोई साधन नहीं लाये हो तो तुम्हें बहुत कष्ट होगा।' मुनि का यह मार्मिक कथन सुनकर वह मन में विचार करने लगा- 'कितना पापी हूँ मैं! मुझे अपने इन पापी हाथों से एक महात्मा के शरीर की खाल उतारनी पड़ेगी।' वह नम्र भाव से मुनि से कहने लगा- 'आप महात्मा हैं। आपके हृदय में मुझ जैसे पापात्मा के प्रति भी करुणा है, परन्तु मुझे अनिच्छा और दु:खी मन से भी आपके वध का पाप करना पड़ेगा।'

वधस्थल पर ले जाकर चांडाल ने दु:खी हृदय से मुनि का वध किया और उनके शरीर की खाल उतार ली, परन्तु वह शांतमूर्ति मुनिराज परमात्मा के ध्यान से तनिक भी विचलित नहीं हुए। शरीर नाश के समय उन्होंने अपनी आत्मा का परमात्मा के साथ ऐसा अनुसन्धान किया कि परमात्मा का ध्यान करते हुए उन्हें मृत्यु का दु:ख मालूम ही नहीं हुआ। मुनि के मन में किसी के प्रति न क्रोधभाव उत्पन्न हुआ और न ही वैरभाव उत्पन्न हुआ। उस समय खंधक मुनि क्षमा की साक्षात् मूर्ति बन गये। क्षमाशीलता का इससे ऊँचा आदर्श और क्या हो सकता है? क्षमाशील रहना तो साधु का धर्म है। समर्थ साधु ही ऐसा वध-परीषह सह सकते हैं। क्षमाशील साधु कैसे होते हैं, इस सम्बन्ध में शास्त्र में कहा है:-

हओ न संजले भिक्खू, मणं पि न पओसए।
तितिक्खं परमं नच्चा, भिक्खू धम्मं समायरे।।

अर्थात् कोई प्राणों का हरण करे तो भी भिक्षु उस पर क्रोध न करे, यहाँ तक कि मन में भी द्वेष न लाये। बल्कि तितिक्षा (सहनशीलता) को उत्तम गुण समझकर क्षमाशील साधु क्षमाधर्म का ही पालन करे।

खंधक मुनि ने दस प्रकार के साधु धर्मों में प्रथम और प्रधान क्षमाधर्म को सर्वोत्कृष्ट समझकर प्राण अर्पण कर दिये और जगत् के समक्ष क्षमा का अनूठा आदर्श उपस्थित करने के साथ अपने जीवन को धन्य बना लिया। खंधक मुनि ने प्राण त्याग करते समय ऐसी उच्च भावना भायी थी कि:-

चाहत जीव सबै जग जीवन, देह समान नहीं कद प्यारो।
संयमवंत मुनिश्वर को, उपसर्ग ए तन-नाशन हारो।।
तो चिंतवे हम आतमराम, अखंड अबाधित ज्ञान भंडारो।
देह विनाशक सो हम तो नहीं, शुद्ध चिदानंद रूप हमारो।।

खंधक मुनि ने इस प्रकार की उच्च भावना भाते हुए केवलज्ञान प्राप्त किया। जिस उद्देश्य के लिए उन्होंने संसार त्याग किया था, वह आत्मश्रेय-साधन का उद्देश्य सिद्ध करके मोक्ष प्राप्त किया। इस प्रकार खंधक मुनि सिद्ध, बुद्ध और मुक्त हो गये।

वह नौकर, जिसने मुनि का वध किया था, मुनि की खाल लेकर राजा के सामने उपस्थित हुआ। राजा मुनि की खाल देखकर काँप उठा। कहने लगा- 'हाय! मैंने यह कैसा कुकृत्य किया कि एक महात्मा के शरीर की खाल उतरवा ली!' नौकर ने महात्मा की धीरता, वीरता और क्षमा की सब बातें कही। नौकर की बातें सुनकर राजा पश्चात्ताप करने लगा। उसे इतना संताप हुआ कि आँखों से अश्रुधारा बहने लगी। जब रानी को विदित हुआ कि किसी मनुष्य की खाल उतरवाई गई है और रानी ने उसे जाकर प्रत्यक्ष देखा तो वह भी रुदन करने लगी।

इसी बीच एक चील राजा के महल पर उड़ती-उड़ती आई। उसने रक्त रंजित मुनि की मुखवस्त्रिका या दूसरा कोई वस्त्र उठा लिया था। मगर उस चीज में उसे कोई स्वाद नहीं आया। अतएव उसने वह वस्त्र राजा के महल पर ही छोड़ दिया और वह उड़ गई। खून से लथपथ वह

वस्त्र मंगवाकर देखा तो जान पड़ा कि यह वस्त्र किसी मुनि का मालूम होता है। रानी राजा के पास गई और कहने लगी– 'महाराज! आपके राज्य में किसी मुनि का घात हुआ है। यह वस्त्र उसी मुनि का मालूम होता है।' रानी ने यह भी कहा– 'उस मुनि ने ऐसा क्या अपराध किया था कि उन्हें प्राणदण्ड दिया?' रानी के प्रश्न के उत्तर में राजा ने सारा वृत्तान्त कह सुनाया। राजा का कथन सुनकर रानी के दु:ख का पार न रहा।

रानी ने कहा– 'मुनि को प्राणदण्ड देने से पहले जाँच तो कर लेते कि मैंने मुनि की ओर किसलिए देखा था? मुनि को देखकर मेरे मन में विचार आया कि मेरा भाई मुनि भी इन मुनि की तरह घर-घर भिक्षा के लिए भटकता होगा! आपने मेरी दृष्टि में विकार देखा, मगर वास्तव में मेरी दृष्टि में अथवा मुनि की दृष्टि में किसी प्रकार का विकार नहीं था।'

> **"तुम क्षमाशील बनकर आत्मा का कल्याण साधो, इसी में तुम्हारा कल्याण है।"**

राजा ने खोज कराई तो मालूम हुआ कि वह मुनि रानी के संसारावस्था के भाई थे। यह जानकर राजा को और अधिक पश्चात्ताप हुआ।

रानी ने कहा– 'अब पश्चात्ताप करने से मुनि फिर जीवित होने वाले नहीं। अतएव पश्चात्ताप करना छोड़ो और इस मुनि के मार्ग का अनुकरण करो। इसी में अपना कल्याण है।' आखिर राजा-रानी दोनों ने संयम मार्ग ग्रहण करके आत्मकल्याण किया।

आशय यह है कि मुनि के मन में जो क्षमा होती है, उसका प्रभाव दूसरे पर पड़ता है। राजा कितना कठोर हृदय था कि मुनि का किसी प्रकार का अपराध न होने पर भी उसने मुनि के शरीर की चमड़ी उधेड़ लेने की आज्ञा दे दी! परन्तु मुनि की अनुपम क्षमा का वृत्तान्त सुनकर उस कठोर हृदयी राजा का हृदय भी परिवर्तित हो गया। इस प्रकार खंधक मुनि ने क्षमा का आदर्श उपस्थित करके स्व-पर कल्याण साधन किया। इस प्रकार की क्षमा धारण करने वाले ही वास्तव में महान हैं। संसार में उन्हीं पुरुषों का जीवन धन्य बनता है, जो स्वयं क्षमाशील बनकर दूसरों को भी क्षमाशील बनाते हैं।

तुम क्षमाशील बनकर आत्मा का कल्याण साधो, इसी में तुम्हारा कल्याण है।

साभार– श्री जवाहर किरणावली भाग-16

टिप्पणी संशोधन

विगत कुछ माह से ज्ञान सार बिन्दु के अन्तर्गत 'ऐसी वाणी बोलिए' पुस्तक का श्रमणोपासक में धारावाहिक रूप में प्रकाशन किया जा रहा है, जिसमें पूर्व में दी गई संपादकीय टिप्पणी में 'आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. द्वारा लिखित' के स्थान पर सुधार कर 'आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. एवं उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. के पावन वचनों से संकलित' पढ़ने का कष्ट करें।

धर्मदेशना

उत्तम क्षमा की उत्कृष्टता

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

धर्म के स्वरूप में उत्तम क्षमा से लेकर पाँच समिति, तीन गुप्ति, ब्रह्मचर्य आदि को सम्मिलित किया गया है। इस कारण मन, वचन एवं काया के योगों की साधना को सच्चा धर्म कह सकते हैं। यह योग-साधना ही जीवन को धर्ममय बनाती है तथा इसी योग-साधना की उत्कृष्टता से धर्म का दैदीप्यमान स्वरूप प्रकट होता है। जो अपने जीवन में अपनी वृत्तियों तथा प्रवृत्तियों को पूर्णत: नियंत्रित एवं संयमित बना लेता है, उसके जीवन में ही धर्म का सच्चा स्वरूप प्रतिबिम्बित होता है। ऐसा धार्मिक पुरुष ही प्रतिक्षण अपनी निष्ठापूर्ण साधना में लगा रहता है। अष्ट प्रवचन माता की गोद में बैठकर ऐसा पुरुष ही अपने जीवन को पूर्ण पवित्र बनाकर उसे व्यापक लोकहित की दृष्टि से समर्पित कर देता है।

उत्तम क्षमा धर्म की जड़ हैं

जीवन को समुन्नत बनाने वाले धर्म की जड़ उत्तम क्षमा को बताया गया है। उत्तम क्षमा का तात्पर्य है- श्रेष्ठ सहनशीलता। कहा है कि **"शक्त्यौ अपकारमहनं क्षमा।"** शक्ति होने पर भी अपकार सहन कर लेने की जिसमें क्षमता होती है, उसे ही क्षमाशील कहा जा सकता है। अपमान की स्थिति को समाहित करने के लिए समभाव का प्रवाह क्षमा के रूप में प्रस्फुटित होता है। ऐसी क्षमा का रूप जघन्य, मध्यम एवं उत्तम दृष्टि से तीन प्रकार का हो सकता है। कुछ व्यक्ति क्षमा करने की मानसिक अवस्था में नहीं होते हुए भी संसार को अपने क्षमाशील होने का तथ्य बतलाना चाहते हैं तो वह केवल बाहर से प्रकट की जाने वाली क्षमा तामस या राजस गुण से युक्त हो सकती है, किन्तु वह सात्विक नहीं कहला सकती है। जहाँ तामसिक वृत्ति है, वहाँ क्षमा के सच्चे स्वरूप का अस्तित्व मानना भी कठिन होता है। किसी ने कुछ कहा और जिसको कहा, उसको वह सहन नहीं हुआ, जिससे मन ही मन वह छटपटाने लगा कि इसका मैं प्रतिशोध लूँगा, परन्तु शक्तिहीनता के कारण वह वैसा नहीं करता है और क्षमा साध लेता है। मन में तो उसके यही है कि ज्योंही मैं बदले के योग्य शक्ति प्राप्त कर लूँ तो अवश्य बदला लूँगा। ऐसी अल्प सामयिक क्षमा, जो दुनिया को दिखायी देती है, वह वास्तविक क्षमा नहीं होती है। ऐसी आन्तरिक भावना के साथ वह ऊपर से कुछ नहीं बोलता है और दुनिया को दिखाने का स्वांग करता है कि वह क्षमाशील है। यह कैसी क्षमाशीलता? अन्दर से तो वह प्रतिशोध लेने का षड्यंत्र रचता है और प्रसंग आने पर दुगुना बदला लेने की सोचता है, तो वैसी दिखायी देने

वाली क्षमा तामसिक क्षमा कहलाती है।

क्षमा का राजस रूप वह है कि जब एक व्यक्ति देखता है कि प्रतिशोध लेने की शक्ति तो है, किन्तु वातावरण उसके विपरीत पड़ता है कि बदला लेगा तो जनमानस उसके विरुद्ध हो जाएगा। इस कारण वह क्षमा धार लेता है। वैसा व्यक्ति गुप्त उपायों से प्रतिशोध एवं प्रतिकार करने की चेष्टा करता रहता है। तात्कालिक रूप से क्षमा का बाना पहिनकर वह जनदृष्टि से दूर हो जाता है और फिर अवसर देखकर प्रतिकार की घात से कार्य करना चाहता है। लोग तो यही समझते हैं कि उसने अपराधी को क्षमा कर दिया। प्रकारान्तर से तब वह दूसरों के कन्धों पर बंदूक रखकर चलाता है। क्षमा का जो यह दृश्य दिखायी देता है, वह राजस क्षमा होती है, किन्तु उसके साथ भी सच्चा धर्मतत्त्व जुड़ा हुआ नहीं होने से वह भी वास्तविक क्षमा नहीं होती है।

सात्त्विक क्षमा का स्वरूप किन्हीं-किन्हीं मानव-हृदयों में प्रकट होता है। ऐसा मानव अपकार का प्रतिकार करने की शक्ति होते हुए भी सच्चे करुणामय हृदय से न तो प्रतिशोध लेने की भावना पैदा होने देता है और न प्रत्यक्ष में वह जनता को भ्रमित करता है तथा अपराधी के प्रति पूर्णरूप से क्षमा को ही व्यक्त करता है। प्रतिकार करने का सामर्थ्य है, किन्तु सात्त्विक भावना के साथ वह प्रतिकार के बारे में सोचता भी नहीं तथा हृदय से सदा के लिए उसको क्षमा कर देता है, यही वास्तविक एवं सात्विक क्षमा होती है। समयान्तर में उसके अपराधी की किसी अन्य कारण से भी कोई हानि होती है, तब भी वह यदि प्रसन्नता का अनुभव करे तो वह क्षमा जघन्य कहलाती है। इस जघन्य क्षमा के कारण सात्विक क्षमा के रूप में कुछ न्यूनता रह जाती है।

पूर्ण उत्तम क्षमा की दृष्टि से ऐसे क्षमाशील पुरुष को दूसरों के हाथों अपने अपराधी को बाद में दंड मिलने पर भी प्रसन्नता का नहीं, किन्तु दयाभाव का ही अनुभव करना चाहिए। यदि फिर भी उसकी वृत्तियों में आवश्यक कोमलता का अभाव रहता है, तो उसे मध्यम श्रेणी की क्षमा कह सकेंगे। उत्तम श्रेणी की क्षमा का प्रसंग वहाँ आयेगा, जहाँ वह व्यक्ति प्रतिकार की दृष्टि से पूर्णरूप से शक्तिसम्पन्न होकर भी प्रतिकार नहीं करता है और प्रकारान्तर से भी प्रतिकार नहीं चाहता है, बल्कि अपराधी की हानि होने पर भी समभाव रखता है और उससे भी बढ़कर कोमल वृत्ति का प्रकटीकरण करता है। उत्तम क्षमा की स्थिति समता से भी ऊपर उठ जाती है। वह अपने शत्रु की शत्रुता भूल जाता है और जब उस पर कोई विपत्ति आती है, तो उसको सभी प्रकार का सहयोग देने के लिए तत्पर हो जाता है। जब विचार और व्यवहार में इस प्रकार कोमलता से समता उतरती है, तभी उत्तम क्षमा का स्वरूप व्यक्त होता है।

> **"उत्तम क्षमा के दो पक्ष होते हैं- एक तो दूसरे के अपराध को अपने प्रति अपराध न मानना और उसके प्रति प्रतिकार या प्रतिहिंसा के भाव न जगाना तथा दूसरा पक्ष होता है- उसे उसके अज्ञान से बाहर निकालकर अपने प्रेमपूर्ण सहयोग के जरिये सुधार और उत्थान के मार्ग पर लगा देना।"**

उत्तम क्षमा की उत्कृष्टता

उत्तम क्षमा के दो पक्ष होते हैं- एक तो दूसरे के अपराध को अपने प्रति अपराध न मानना और उसके प्रति प्रतिकार या प्रतिहिंसा के भाव न जगाना तथा दूसरा पक्ष होता है- उसे उसके अज्ञान से बाहर निकालकर अपने प्रेमपूर्ण सहयोग के जरिये सुधार और उत्थान के मार्ग पर लगा देना। उत्तम क्षमावान अपने अपराधी को भी अपना आत्मीय मानता है। वह शत्रुता के भाव को उत्पन्न ही नहीं होने देता है तथा उसको सज्जनता में ढ़ालकर समतामय

व्यवहार करता है। ऐसी उत्तम क्षमा-भावना का निर्माण पाँच समिति एवं तीन गुप्तियों की यौगिक प्रक्रियाओं के माध्यम से ही किया जा सकता है। जब चित्तवृत्ति में ऐसी उत्तम क्षमा जन्म लेती है तो अभ्यास एवं साधना से वह उत्कृष्ट स्वरूप धारण करती हुई आश्रव के द्वारों को बंद करके संवर की क्रिया को सजग बना देती है।

ऐसी उत्तम क्षमा का उत्कृष्ट स्वरूप प्रभु महावीर के साधनामय जीवन में प्रकट हुआ था। उनके जीवन में कई प्रसंग आए, जब इस उत्तम क्षमा का साकार रूप दिखायी दिया। जब प्रभु बीहड़ वन में ध्यानस्थ खड़े थे, तो एक ग्वाला अपने बैलों को चराने के लिए उधर से निकला। उस समय उसे कड़ी प्यास लग रही थी। उसने सोचा कि इस खड़े हुए बाबा को बैल सम्भलाकर कहीं वह पानी की तलाश करे और अपनी प्यास बुझा ले, तो ठीक रहेगा। वह अपने कीमती बैलों को वहाँ खड़ा करके यह कहता हुआ पानी की तलाश में चला गया कि अरे ओ जंगली बाबा! मैं वापिस आता हूँ, तब तक मेरे इन कीमती बैलों का बराबर ध्यान रखना। प्रभु तो पाँच समिति और तीन गुप्ति की साधना में निमग्न थे। वे इस 'जंगली' शब्द को सुनकर भी बिल्कुल अप्रभावित रहे। मन में जरा भी ऊँचा-नीचा परिणाम नहीं आया। आज के मनुष्य को कोई ऐसा शब्द कह दे तो वह कितना उत्तेजित हो जाता है तथा बदला लेने की तैयारी कर लेता है। साधारण अवस्था का प्रसंग तो छोड़िए, किन्तु कदाचित् कोई सामायिक, पौषध आदि किसी धार्मिक अनुष्ठान में भी बैठा हो और उस समय भी अपने लिए किसी के द्वारा कहा गया 'जंगली' शब्द सुन ले, तब भी कहा नहीं जा सकता कि वह अपने मन को नियंत्रित रख सकेगा या नहीं? धार्मिक वृत्ति में नियोजित होने के बावजूद उत्तम क्षमा का निर्वाह करना बहुत कठिन होता है।

आपसे क्या कहूँ? हम संतों ने तो अपने सर्वस्व का परित्याग किया है। परिवार, धन-वैभव आदि सब कुछ छोड़कर हम दीक्षित हुए हैं, फिर भी कहीं अपने लिए ऊँचा-नीचा सुनने में आ जाए तो शायद संत-जीवन की साधना का हमको भी ख्याल रहे या नहीं रहे। और तो दूर रहा, किसी ने ठीक से वन्दन नहीं किया हो या अप्रत्यक्ष रूप से भी अवहेलना की हो तो चित्त में कुछ अजीब-सी उथल-पुथल मच सकती है। इस स्थिति के संबंध में संतों को भी अपने जीवन में सूक्ष्म अवलोकन करना चाहिए। यदि इस प्रकार के साधु-जीवन एवं साधुवेश के रहते हुए भी ऊँची-नीची परिस्थिति में साधु के मन में ऊँचे-नीचे परिणाम आ जाएँ या उसका मन इस प्रकार के चंचल परिणामों में आन्दोलित बन जाए तो यह समझना चाहिए कि उसके पास अभी नाम की समिति और गुप्ति है। अभी तक उसने उनकी साधना नहीं की है। साधुवृत्ति की उत्तम क्षमा का प्रवेश द्वार तो अभी उससे बहुत दूर है। साधु यदि वीतराग वाणी के माध्यम से जनमानस को पवित्र बनाने का इच्छुक है तो उसे अपने मानस को पवित्र बनाने का कार्य तो पहले करना चाहिए। उस वाणी पर आचरण करने से ही जीवन में उत्तम क्षमा-भावना का संचार होता है।

महावीर प्रभु की उत्तम क्षमा

उत्तम क्षमा का प्रसंग यदि आपको देखना है तो महावीर प्रभु के चरित्र में देखिए। उस ग्वाले ने प्रभु को केवल 'जंगली' ही नहीं कहा, किन्तु बाद में उसने उन्हें जो क्लेश पहुँचाया, तब महावीर की जो उत्तम क्षमा प्रकट हुई, वह सारे संसार के लिए आदर्श रूप कही जा सकती है। ग्वाला अपने बैलों को ध्यानस्थ महावीर के सामने छोड़कर पानी पीने चला गया और जब वह काफी देर बाद लौटकर आया एवं उसे जब वहाँ अपने बैल नहीं मिले तो वह आगबबूला हो गया। अब तो वह ठीक प्रभु के सामने खड़ा होकर चीखने लगा- अरे ओ जंगली! तू मेरे बैलों को छिपाकर अब वापिस इस तरह खड़ा हो गया है जैसे तूने तो बैल देखे ही न हों! जल्दी बता, तूने मेरे बैल कहाँ छिपाए हैं? अगर जल्दी से तूने मेरे बैलों का पता नहीं बताया तो यहीं जंगल में मैं तेरी खूब खबर लूँगा।

अज्ञानी क्या समझें कि ये महापुरुष कौन हैं? विशिष्ट व्यक्तियों की परख विशिष्ट दृष्टि से ही संभव होती है। एक गंवार को हीरे और काँच के टुकड़े का भेद ज्ञात नहीं होता है। अन्तर्हृदय के प्रकाश में ही विशिष्टता का भली-भाँति ज्ञान हो सकता है। अज्ञानी ग्वाला अपनी ही भावना को प्रभु में आरोपित करने की कुचेष्टा कर रहा था कि वे उसके बैल कहीं छिपा आये हैं। ग्वाले के इस तरह बोलने पर भी वे शांत और गंभीर रहकर अपने चिन्तन से तनिक भी विचलित नहीं हुए। ग्वाला तो बावला हो रहा था। वह अपने चाबुक से तड़ातड़ भगवान के शरीर पर प्रहार करने लगा। उस समय प्रभु के मन में जिस प्रकार की उत्तम क्षमा का प्रादुर्भाव हुआ, उसका वाणी से कथन करना शक्य नहीं है। प्रभु फिर भी शांत और सहज बने रहे। तब वह ग्वाला लकड़ी की दो कीलें कहीं से लाया और उन्हें वह प्रभु के दोनों कानों में ठोकने लगा। तब भी भगवान ध्यान से बिना विचलित हुए, शांत भाव से ध्यान में ही लीन खड़े रहे।

"उत्तम क्षमा की तीन स्थितियाँ हैं- सतोगुणी, तमोगुणी और रजोगुणी। इन तीनों में सतोगुणी यानी सात्विक क्षमा सर्वश्रेष्ठ होती है, किन्तु इससे भी उत्कृष्ट होती है उत्तम क्षमा। भगवान के इस प्रसंग में उत्तम क्षमा का ही रूप प्रकट होता है।"

यह उत्तम क्षमा का लक्षण होता है। इस क्षमा की तीन स्थितियाँ हैं- सतोगुणी, तमोगुणी और रजोगुणी। इन तीनों में सतोगुणी यानी सात्विक क्षमा सर्वश्रेष्ठ होती है, किन्तु इससे भी उत्कृष्ट होती है उत्तम क्षमा। भगवान के इस प्रसंग में उत्तम क्षमा का ही रूप प्रकट होता है।

शक्ति का स्रोत स्वयं में हैं!

यह शाश्वत सत्य है कि जीवन में शक्ति का उद्भव कहीं बाहर से नहीं होता, बल्कि अपनी ही आत्मा के भीतर से प्रस्फुटित होता है, क्योंकि वास्तव में शक्ति का स्रोत स्वयं में है। जब तक किसी दूसरे व्यक्ति से ताड़ना, तर्जना या अपमान-तिरस्कार नहीं भुगता जाता, तब तक साधना में परिपक्वता एवं पुष्टता नहीं आती है।

इसी प्रकार आध्यात्मिक क्षमता का निर्माण भी अपनी ही आन्तरिक संकल्प शक्ति के बल पर किया जा सकता है। जब अपने ही भीतर छिपे हुए शक्ति के स्रोत को समझा और प्रकट किया जाता है तो वह अमित शक्ति अद्भुत आध्यात्मिक क्षमता प्रदान करती है। एक आध्यात्मिक साधक अपनी आन्तरिक परीक्षा के लिए यह अवसर ढूँढ़ता है कि कोई उसको भला-बुरा कहे और तब उसे अपने मानस का ज्ञान हो कि उसमें ऊँचे-नीचे परिणाम तो पैदा नहीं हो जाते हैं। उसकी इच्छा रहती है कि उसकी क्षमा निरन्तर कसौटी पर चढ़ती रहे ताकि वह अपनी उत्तमता को प्राप्त कर सके। ऐसी उत्तम क्षमा की साधना में ही स्वयं का शक्ति-स्रोत प्रवाहमान बनता है।

आजकल के युग में भी क्या ऐसी उत्तम क्षमा की साधना संभव है? इस युग का भी एक रूपक मैं आपके सामने रखना चाहता हूँ। स्वर्गीय आचार्य श्री जवाहरलाल जी म.सा. के दर्शन मैं समझता हूँ कि कई भाइयों ने किये होंगे। जलगाँव में उनके हाथ में एक जहरीला फोड़ा हो गया था, जिसकी वजह से भीनासर के चातुर्मास में भी उनको काफी पीड़ा थी। ऑपरेशन के बाद उनकी अंगुली टेढ़ी हो गयी थी और वे स्वत: उठ-बैठ नहीं सकते थे। एक बार आचार्यश्री थोड़ा-सा पीछे की ओर हाथ देकर पाटे पर विराजे हुए थे। इधर सन्त उन्हें उठाने लगे तो उनको विवेक नहीं रहा कि अंगुली नीचे की ओर मुड़ी हुई है। वैसी अवस्था में उठाने से उनकी अंगुली में एकदम चीरा पड़ गया और उन्हें भयंकर वेदना होने लगी। इससे सन्त घबरा गये कि आचार्यदेव की आशातना हो गयी, किन्तु उन

महापुरुष को तनिक भी उत्तेजना नहीं आयी, बल्कि उन्होंने इतना भी नहीं कहा कि सन्तों ने विवेक नहीं रखा। वे उपालंभ तो दे सकते थे, किन्तु उन्होंने ऐसा भी नहीं किया। यह मेरी आँखों से देखा हुआ दृश्य है, जिसे उत्तम क्षमा का प्रेरक रूप ही कह सकते हैं।

वर्तमान समय में भी ऐसी-ऐसी आत्माएँ मेरे दृष्टिपथ में आई हुई हैं, जो उत्तम क्षमा की धारक हैं। ऐसे अनेक रूपक स्व. आचार्य श्री गणेशीलाल जी म.सा. के जीवन में भी मुझे देखने को मिले हैं। महापुरुषों की यही महानता होती है कि वे स्वयं की आन्तरिक शक्ति को सुदृढ़ बनाकर उत्तम क्षमाशील एवं आत्मोद्धारक बन जाते हैं।

> **"प्रभु महावीर ने यही संकेत दिया कि तुम जिसके नाश की सोच रहे हो, वह उसका नाश नहीं, तुम्हारा ही नाश है।"**

करेंगे आप, भोगेंगे आप

आत्मा स्वयं कर्म करती है और जैसा वह करती है, वैसा फल भी उसी को भोगना पड़ता है। जैसा बीज आप बोओगे, वैसा वृक्ष लगेगा और वह वृक्ष वैसा ही फल धारण करेगा। नीम का बीज बोया है तो नीम का फल ही मिलेगा, आम का फल नहीं। एक इन्सान लुक-छिपकर बुरा करता रहे और बाहर से दुनिया को बताए कि वह तो भला ही भला कर रहा है, तो उस बाहरी प्रदर्शन से न तो उसे अच्छा फल मिलेगा और न ही वह बुरे फल-भोग से बच सकेगा।

> **"उत्तम क्षमाशीलता के सद्गुण से न केवल आत्मा को सच्ची शांति और समता-लाभ मिलेगा, अपितु आत्मा को अपना चरम विकास भी उपलब्ध हो सकेगा।"**

किसी का बुरा करने या सोचने से उसका बुरा तो आप कर सकेंगे या नहीं, यह अलग बात है, किन्तु अपना बुरा तो उसी समय कर लेंगे, यह निश्चित बात है। प्रभु महावीर ने यही संकेत दिया कि तुम जिसके नाश की सोच रहे हो, वह उसका नाश नहीं, तुम्हारा ही नाश है। किसी को कुएँ में ढकेलने की सोचते हो तो अपने लिए ही गहरा कुआँ खोदते हो। व्यवहार में भी देखते हैं कि कोई कुआँ खोदता है तो पहले वह स्वयं ही नीचे जाता रहता है। इसलिए यह ध्यान रखिए कि जो कुछ जिस रूप में आप कर रहे हैं, उसका वैसा ही फल आपको मिलेगा।

उत्तम क्षमाशीलता से सुफल

आपके प्रति कोई बुरा व्यवहार करता है, उसका कुफल उसको मिलेगा, किन्तु यदि आप उसके बुरे व्यवहार के प्रति भी स्वयं क्षमाशील बन जाते हैं और उसके प्रति आप सद्व्यवहार करते हैं तो उसका सुफल आपको मिलेगा। उत्तम क्षमाशीलता के सद्गुण से न केवल आत्मा को सच्ची शांति और समता-लाभ मिलेगा, अपितु आत्मा को अपना चरम विकास भी उपलब्ध हो सकेगा। सोचिए कि एक कुआँ खोदने वाला नीचे से नीचे पहुँचता है तो एक भव्य भवन बनाने वाला ऊपर से ऊपर पहुँचता जाता है। कुआँ बुराई का प्रतीक है तो भव्य भवन अच्छाई का प्रतीक। यह मानकर चलें तो आप जितने दूसरों के प्रति सहनशील एवं सहयोगी बनेंगे, उतना ही अपने मानस को उत्तम क्षमा की भावना से परिपूर्ण रख सकेंगे।

आप अपने मानस को टटोलिए और जीवन में उत्तम क्षमा की सहायता से आश्रव के द्वारों को बंद कीजिए। संवर की आराधना में ज्योंही आप आगे बढ़ेंगे, आत्मा का आध्यात्मिक मंगल समीप आ जाएगा।

14-11-1972

साभार- नानेशवाणी-19 (ज्योतिर्मय की ज्योतिर्धारा)

श्रेष्ठ श्रोता - बने उपभोक्ता

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा।
वीरियं उवओगो य, एयं जीवस्स लक्खणं।।

ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, वीर्य और उपयोग - ये जीव के लक्षण हैं। इन लक्षणों के माध्यम से हमने अपनी पहचान किस रूप में की, कितनी की, यह परीक्षा का विषय है। लक्षणों के रहते हुए भी यदि हम अपनी पहचान नहीं कर सके; अध्ययन बहुत किया, किन्तु समझ में कुछ नहीं आया तो उस अध्ययन का क्या लाभ हुआ? कोई निरंतर अध्ययन भले ही करे, किन्तु विषय को समझ ही नहीं सके तो आप जानते हैं कि वह यदि परीक्षा में बैठे तो उत्तीर्ण नहीं हो सकता। उत्तीर्ण होने के लिए अध्ययन करना ही पर्याप्त नहीं होता, विषय को समझना भी अनिवार्य होता है। अध्ययन वही श्रेष्ठ माना गया है, जिसमें विषय इस प्रकार दिमाग में बैठ जाए कि अध्ययनकर्ता दूसरे को वापस अध्ययन करा सके। यदि दूसरे को अध्ययन कराने की क्षमता हासिल हो गई तो कहना पड़ेगा कि उसने अध्ययन किया है, उसने उस विषय को हृदयंगम भी किया है।

राजा भोज के जमाने में ऐसे-ऐसे रत्न मौजूद थे जो एक बार कोई बात सुन लेते थे उसे हूबहू पुन: प्रस्तुत कर सकते थे। ऐसी भी विभूतियाँ थीं जो दो बार सुनकर पूरे विषय को उसी प्रकार प्रस्तुत कर सकती थीं। तीन बार, चार बार, पाँच बार सुनकर वैसा का वैसा ही पुन: प्रस्तुत करने वाली विभूतियाँ भी थीं। किन्तु वर्तमान में ऐसी विभूतियाँ विरल ही होंगी, जो एक बार, दो बार या तीन बार सुनकर पूर्णतया, एक भी अक्षर, एक भी शब्द की अदला-बदली किए बिना अथवा बिना कोई परिवर्तन किए बात को वैसी की वैसी ही प्रस्तुत कर सकें। कहा जाता है कि भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद कांग्रेस के एक अधिवेशन में सम्मिलित हुए थे। प्रथम दिन की जो रिपोर्ट तैयार की गई थी उसको दूसरे दिन खुले अधिवेशन में प्रस्तुत करना था। रिपोर्ट तैयार हो गई, किन्तु संयोग की बात थी कि वह रिपोर्ट गुम हो गई। कर्मचारीगण परेशान हो गए कि अब क्या किया जाए! बड़ी खोज की गई, पर रिपोर्ट नहीं मिल पाई। तब डॉ. राजेन्द्र प्रसाद से हाथ जोड़कर, सिर नवाकर, संकोच करते हुए उन्होंने कहा कि साहब, रिपोर्ट गुम हो गई है। इस पर डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने कहा- चिन्ता करने की कोई बात नहीं है, आपने वह रिपोर्ट मुझे पढ़ने के लिए दी थी, तब मैंने उस रिपोर्ट को पूरा पढ़ा था। यदि वह रिपोर्ट नहीं मिल रही है तो बैठो, मैं लिखा देता हूँ। इस प्रकार डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने वह रिपोर्ट पूरी की पूरी लिखवा दी। इधर रिपोर्ट लिखाने का कार्य पूर्ण हुआ, उधर एक व्यक्ति दौड़ा हुआ आया और बताया कि वह रिपोर्ट मिल गई है। दोनों रिपोर्ट जब सामने आ गईं तब कुछ व्यक्तियों के मन में उत्सुकता जगी कि पूर्व की रिपोर्ट मिल गई है और इधर डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने जो रिपोर्ट लिखाई है, इन दोनों का मिलान कर लिया जाये। जब दोनों का मिलान किया गया तो लोगों को आश्चर्य हुआ कि दोनों रिपोर्ट एक जैसी थीं। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने

तो केवल एक बार उस रिपोर्ट को पढ़ा था, फिर भी शब्दश: उसको पुन: लिखवा दिया था। वर्तमान में ऐसी विभूतियों का दर्शन कठिन हो गया है। ऐसे लोग दृष्टिगत नहीं हो पाते हैं।

बन्धुओ! मैं बतला रहा था कि हमारा अध्ययन कैसा होना चाहिए? परीक्षा में रिजल्ट लाने मात्र से जीवन नहीं बन जाता। अध्ययन कर लिया, परीक्षा में बहुत अच्छे अंकों से उत्तीर्ण हो गए, इतने मात्र से हमें संतुष्टि नहीं होनी चाहिए। संतुष्टि तब होती है जब वह विषय पूर्णतया हृदयंगम हो गया हो और जीवन में आचरण करने योग्य बन गया हो।

द्रोणाचार्य विद्यार्थियों को पाठ पढ़ा रहे थे कि क्रोध नहीं करना चाहिए, क्रोध मत करो। जब उस पाठ को पुन: सुनाने का उन्होंने आदेश दिया तो एक-एक राजकुमार ने धड़ाधड़ से उस पाठ को सुना दिया और कह दिया- हमने इसको कंठस्थ कर लिया है। जब युधिष्ठिर का नम्बर आया तब युधिष्ठिर ने कहा- गुरुदेव, मुझे अभी पाठ याद नहीं हुआ है। तब द्रोणाचार्य ने कहा- अरे, तुम तो बड़े राजकुमार हो, तुम्हें एक छोटा-सा पाठ भी याद नहीं हुआ है, ऐसे कैसे काम चलेगा? उस दिन केवल उपालम्भ देकर छोड़ दिया। दूसरे दिन जब पुन: पूछा तो फिर वही उत्तर मिला- गुरुदेव! अभी पूरा याद नहीं हुआ है। द्रोणाचार्य थोड़े आक्रोशित हुए और कहा- युधिष्ठिर! यह मैं क्या सुन रहा हूँ? तुम एक छोटा-सा पाठ याद नहीं कर पाए हो? यदि यह पाठ कल याद नहीं हुआ तो फिर खैर नहीं है। तीसरे दिन जब पुन: पूछा गया तब फिर युधिष्ठिर ने कहा कि गुरुदेव! पूरा याद नहीं हुआ है। तब द्रोणाचार्य ने वहीं चाँटा जड़ दिया और चाँटा लगने के साथ ही युधिष्ठिर ने कहा- गुरुदेव! मुझे पाठ याद हो गया। ऐसे अध्ययन करने वाले कितने व्यक्ति होते हैं? द्रोणाचार्य की कक्षा में विद्यार्थी तो बहुत थे, किन्तु युधिष्ठिर जैसा विद्यार्थी एक ही था। ऐसे ही धर्मसभा में श्रोता तो बहुत होते हैं, किन्तु उपभोक्ता बहुत कम होते हैं।

उपभोक्ता जानते हैं कौन होता है? उपभोक्ता किसको कहते हैं? ग्रहण करने वाले को, खाने वाले को, उपयोग करने वाले को उपभोक्ता कहते हैं। आप यह मत समझ लेना कि यह पंचम आरा है इसलिए उपभोक्ता नहीं है। चौथे आरे में भी जितने श्रोता होते थे, उतने उपभोक्ता नहीं होते थे। सुनने वाले कितने होते थे? भगवान महावीर की पहली सभा में श्रोताओं की कमी नहीं थी, किन्तु उपभोक्ता कितने निकले? एक भी नहीं। भगवान महावीर की प्रथम देशना के समय श्रोता भरे हुए थे, किन्तु उपभोक्ता नहीं। बाद की सभाओं में उपभोक्ता जरूर रहे, किन्तु श्रोताओं की संख्या सदा अधिक ही रही और उपभोक्ताओं की संख्या कम रही। इसलिए उपभोक्ताओं की जीवनचर्या और उनके जीवन का दर्शन इस पर्व पर्युषण के दिनों में आपके सामने विभिन्न तरीकों से प्रस्तुत किया जा रहा है। चाहे वे अरिष्टनेमि भगवान के समय के उपभोक्ता हों, चाहे भगवान महावीर के समय के बहुत सारे उपभोक्ता वैभव में पले। अनेक रमणियों के साथ जिन्होंने शादी की, किन्तु उन सारे वैभव को तत्काल फेंककर, सब कुछ छोड़कर उन्होंने प्रभु की शरण को प्राप्त कर लिया।

आपने यह भी सुना है कि गजसुकुमाल जैसा राजकुमार, जिसको एक क्षण भी देवकी महारानी अपनी आँखों से ओझल नहीं करना चाहती थी, जो अभी यौवन में प्रवेश करने की तैयारी कर रहा था, माता, पिता, भ्राता उसके बारे में क्या-क्या विचार संजो रहे थे और कृष्ण महाराज, वे तो उसकी शादी के लिए कन्याओं को एकत्र करने में लगे हुए थे। किन्तु उस प्रवेश पाती हुई जवानी में गजसुकुमाल ने कभी जमीन पर पैर नहीं रखा होगा, वे भी बढ़ चले इस कंटाकाकीर्ण संयम-पथ पर। गुलाब काँटों में ही खिलते हैं और जब परीषह-

उपसर्ग आते हैं तभी संयम में चमक आती है, तभी उस संयम की परीक्षा होती है, तभी कसौटी होती है त्याग और वैराग्य की। त्याग और प्रत्याख्यान एक व्यक्ति लेकर चलता है; यदि उपसर्ग के समय में भी वह व्रत पर दृढ़ रहता है, अडिग रहता है, तब ही उसे परीक्षा में उत्तीर्ण माना जाता है। **साधुओं को ही उपसर्ग नहीं आते हैं, श्रावकों के जीवन में भी अनेक उपसर्ग आते हैं। उन उपसर्गों के क्षणों में व्यक्ति स्वयं कितना धैर्य रख पाता है, यह महत्त्वपूर्ण है। शांतक्रान्ति के अग्रदूत आचार्य पूज्य श्री गणेशीलाल जी महाराज के पिता श्री साहिबलाल जी पौषध लिए हुए थे, तभी घर से सूचना आई कि उनकी पुत्री का वियोग हो गया, परन्तु वे अपने पौषध में तल्लीन रहे।** पूज्य गुरुदेव फरमाया करते थे कि बगड़ी में धारीवाल परिवार के श्रावक लक्ष्मीचंद जी, जिन्होंने चातुर्मास करवाया आचार्य पूज्य श्री जवाहरलाल जी महाराज का, आचार्य पूज्य श्री गणेशलाल जी महाराज का और उन्होंने ही रायपुर में आचार्य श्री नानालालजी महाराज का चातुर्मास करवाया था, किन्तु बगड़ी की एक घटना मैं बताऊँ। एक भाई को हैजे की बीमारी हो गई। सेठ और सेठानी स्वयं उसकी सेवा में जुट गए। यह नहीं कि नौकर के भरोसे छोड़ दिया। उन्होंने स्वयं उस बीमार को संभाला। ऐसे सेवा सजाने वाले विरले ही श्रावक होते हैं।

बन्धुओ! कभी हम सोच लेते हैं कि हम ऐसे आरम्भ-समारम्भ में क्यों पड़ें? पर्व पर्युषण चल रहा है, हमें तो संवर करना है, पौषध करना है। यह सोचने की बात है कि किस समय कौन से दायित्व का निर्वाह करना है? स्वाध्याय साधु-जीवन का एक प्रमुख कर्त्तव्य माना गया है, किन्तु उसके लिए भी शास्त्रकार सूचना करते हैं कि जैसे ही सूर्योदय होता है, शिष्य को चाहिए, साधु को चाहिए कि गुरु महाराज को वंदना-नमस्कार करे और वंदना-नमस्कार करते हुए निवेदन करे कि भंते! मैं किस कार्य में संयुक्त होऊँ? मुझे कोई सेवा या वैयावृत्य का कार्य करना है या स्वाध्याय का कार्य करना है? गुरु महाराज यदि कोई सेवा-वैयावृत्य का कार्य सौंपें तो अग्लान भाव से, मन में उतार-चढ़ाव लाए बिना, मन में ग्लानि लाए बिना कि अरे! मुझे ऐसा ओछा काम सौंप दिया? और भी बहुत-से साधु थे, मैं तो पढ़ा-लिखा हूँ और मुझे स्वाध्याय में रस ज्यादा आता है। मेरा स्वाध्याय छूट जाएगा। मन में यदि ऐसा उतार-चढ़ाव रखकर वह सेवा करता है तो वह सेवा के लाभ से अपने आपको वंचित रखता है। क्योंकि तब उसकी काया तो सेवा में लगी हुई होती है, किन्तु उसका मन सेवा में नहीं लगा हुआ होता। ऐसा व्यक्ति, ऐसा साधक अपनी साधना में प्रवीण नहीं हो सकता। यदि गुरु महाराज ने किसी रुग्ण की सेवा में लगा दिया और मान लो, उसके शरीर से रस्सी या पीप झर रहा है, उसे दस्तें लग रही हैं, उसके मुँह से लार पड़ रही है, तो ऐसे रुग्ण साधु को भी अग्लान भाव से संभालना, उसकी सेवा करना और मन में किसी प्रकार का उतार-चढ़ाव नहीं लाना। यदि ऐसी स्थिति बनती है तो समझना चाहिए कि उस साधक की साधना सम्यक् गति से आगे बढ़ी है और यदि ऐसे समय में कोई मुँह मोड़ता है, कोई ऊँचा-नीचा विचार करता है, काम को टालने की कोशिश करता है, सोचता है कि मैं यदि सामने रहूँगा तो ऐसे साधु की सेवा मुझे सौंप देंगे, अत: कोई दूसरा नियुक्त हो जाए, उसके बाद गुरुजी के सामने आऊँ तो मेरा बचाव हो जाएगा, ऐसा सोच करके चलता है या टालमटोल करता है तो वह अपने साधु-जीवन को धूमिल करने वाला होता है। उसकी साधना सफल नहीं हो सकती। हमारे मन में समभाव की आराधना कैसे बनेगी? चाहे कैसा ही निकृष्ट से निकृष्ट कार्य हो (हम जिसको निकृष्ट मानते हैं वस्तुत: वह निकृष्ट नहीं होता), उस कार्य को करने वाला अपने आप में महान् बनता है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम का हम स्मरण क्यों करते हैं? क्या वे अयोध्या के राजा बनने वाले थे इसलिए? नहीं, उन्होंने अयोध्या के राज्य को छोड़कर जंगलों की, वनों की धूल अपने पैरों से छानी थी। इसलिए आज मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में उनके नाम का स्मरण किया जाता है।

तो बन्धुओ! चिन्तन करने की आवश्यकता है कि केवल श्रोता बनने से काम नहीं चलेगा। परीक्षा वह होती है जिसमें उपभोक्ता के रूप में हमारी उपस्थिति दर्ज हो। यदि हम सुन रहे हैं कि कषाय नहीं करना है तो समय आने पर हम अपने आप में उपशम भाव को कैसे बनाए रखते हैं, इससे हमारी परीक्षा हो पाएगी। किसी ने गाली दे दी, उस समय भी आप दीवार की भाँति, पृथ्वी की भाँति अडिग बने रहें तो समझा जाएगा कि वस्तुत: आप केवल श्रोता नहीं हैं, बल्कि उपभोक्ता हैं। शास्त्रकार कहते हैं– **पुढवी समो मुणि हविज्जा।** मुनि को पृथ्वी के समान होना चाहिए। आपके सामर्थ्य होते हुए भी यदि कोई अपमान कर दे, तिरस्कार कर दे, गाली दे दे तो भी संयम बनाए रखें, क्रोध न आने दें और क्षमाशील बने रहें। भगवान महावीर कहते हैं कि हे साधक! यदि तुमने भी प्रतिकार करने का सोचा और यह नीति अपनाई कि जो मेरे साथ जैसा व्यवहार करता है मैं भी उसके साथ वैसा ही व्यवहार करूँगा, तो तुम भी अज्ञानी के समान उनके सरीखे हो गए हो। फिर तुम्हारी क्षमता कहाँ गई? वह तो मूढ़ था ही और तुमने भी मूढ़ता में दो कदम बढ़ाए तो तुमने साधना करके पाया क्या? इसलिए बन्धुओ! यदि आप श्रोता हैं तो केवल श्रोता ही नहीं बने रहें, उपभोक्ता बनने की तैयारी भी करें और यदि आप उपभोक्ता हैं तो सात दिन या एक महीने प्रयोग कीजिए कि कोई व्यक्ति आपको कुछ भी कह दे, चाहे कितनी भी गलत बात कह दे, फिर भी आपके मन में उस व्यक्ति के प्रति कोई द्वेष की भावना नहीं आए। अपने आप में आप पूर्णतया आत्मनिष्ठ बनकर रहें। फिर देखिए कि आनन्द की कैसी लहर आती है और कैसी तृप्ति मिलती है!

बंधुओ! पर्व पर्युषण के शुभ अवसर पर आप इस स्थिति पर गंभीरता से चिन्तन करें तथा उपभोक्ता बनने की प्रेरणा प्राप्त करें। एवन्तामुनि (अतिमुक्तक कुमार) गेंद खेल रहे हैं। अचानक कौन आ गए? गणधर गौतम स्वामी। अतिमुक्तक कुमार जैसे ही गणधर गौतम को देखते हैं, उनके व्यक्तित्व से प्रभावित हो जाते हैं। बालक हैं, 8 वर्ष की वय है। वे गेंद को छोड़कर गौतम स्वामी के पास आते हैं और पूछते हैं– 'आप कौन हैं?' उत्तर मिलता है– 'मैं श्रमण भगवान महावीर का शिष्य हूँ।' बालक पुन: प्रश्न करता है– 'कहाँ पधार रहे हैं?' उत्तर मिला– 'भिक्षा के लिए जा रहा हूँ।' बालक का आग्रह– 'चलिए मेरे घर, मैं आपको बहुत-सी भिक्षा दिलाऊँगा।' बालक अंगुली को पकड़ लेता है और अंगुली पकड़कर चलता है।

आचार्य भगवन् द्वारा फरमाए अनुसार इस प्रवचन अंश को पढ़ने वाले प्रत्येक पाठक ये प्रण लें कि अगले 21 दिनों तक कोई भी आपको कितना भी गलत कह दे तो आपके मन में द्वेष की भावना न आए।

वह अतिमुक्तक, महाराज गौतम स्वामी को अपने घर ले गए। माता श्रीदेवी ने पूछा– 'क्या ले आया बालूड़ा?' माता देखती है कि वह महाराज को लेकर आया है। माता श्रीदेवी प्रसन्न हो गई कि बालूड़ा मेरे घर में गौतम स्वामी जैसे महाराज को ले आया है। माता हर्षित हुई। बालक जो भी क्रिया करता है, काम करता है, जब वह माता उसको देखती है, उसके कार्य से माता कितनी हर्षित होती है या माता दु:ख व्यक्त करती है? यदि माता हर्ष व्यक्त करे तो बालक में वैसी वृत्ति बढ़ती चली जाती है। यदि एक बालक संतों के दर्शन करता है। माता बड़ी खुश होती है तो वह संतों के दर्शन करने के लिए प्रेरित होगा। उसकी वृत्ति संत के अनुसार बन जाएगी।

बालक को कैसा बनाना? संत, श्रोता या सरोता, यह माता की बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। आचार्य प्रवर पूज्य श्री जवाहरलाल जी म.सा. फरमाया करते थे कि माता बालक के लिए पहली गुरु होती है। धर्मगुरु और अध्ययन कराने वाले टीचर बाद में होते हैं। सबसे बड़ी गुरु माता होती है। माता श्रीदेवी ने सोचा कि इसने भला काम किया है और जब भिक्षा के बाद पूछा कि 'भगवन्! कहाँ जाओगे?' तो उत्तर मिला– 'मैं अपने गुरु के पास,

> अतिमुक्तक कुमार केवल एक वचन सुनकर सिर्फ श्रोता नहीं रहे, उपभोक्ता बन गए।

धर्मगुरु, धर्माचार्य के पास जाने की तैयारी कर रहा हूँ।' तब अतिमुक्तक कुमार ने कहा कि मैं भी आपके साथ चलना चाहता हूँ और साथ हो गया। भगवान के पास पहुँचने पर अतिमुक्तक कुमार ने जब भगवान महावीर को देखा तो देखता ही रह गया। फिर भगवान महावीर की वाणी भी सुनी। वाणी-श्रवण का उस छोटे-से बालक पर ऐसा चमत्कारिक प्रभाव पड़ा जैसा बड़ों-बड़ों पर भी नहीं पड़ता है। सारी बात संस्कारों और भावना की होती है। अतिमुक्तक कुमार केवल एक वचन सुनकर सिर्फ श्रोता नहीं रहे, उपभोक्ता बन गए और माता से आकर कहने लगे कि 'माँ! मैं तो दीक्षा लूँगा।' माँ को बालक की बात सुनकर हँसी आ गई। वह बोली- 'तुम अभी संयम को क्या जानो? तुम तो यह गेंद लो और खेल खेलो।' तब अतिमुक्तक कुमार ने कहा- **''जं चेव न जाणामि, तं चेव जाणामि। जं चेव जाणामि, तं चेव न जाणामि।''**

माता- 'यह कैसी पहेली बुझा रहे हो? मैं ऐसी पहेली नहीं समझ रही हूँ।'

अतिमुक्तक कुमार- 'माता, यह पहेली नहीं है, बल्कि जीवन का सत्य है।'

माता- 'बेटा, संयम का मार्ग इतना आसान नहीं है। नंगी तलवार पर चलना आसान है, पर संयम-मार्ग पर चलना दुरूह है।'

कुमार ने कहा- 'माँ, आपकी बात सत्य है, पर इससे मुझे प्रेरणा ही मिली है। कायर व्यक्ति ही ऐसी बात सुनकर कम्पायमान हो सकता है, वीर नहीं। मैंने आपका दुग्धपान किया है, किसी कायर माता का नहीं। इसलिए आपके द्वारा दर्शायी गई बात को सुनकर मेरा पौरुष मुझे उस पर अग्रसर होने को ही प्रेरित करता है।'

माता- 'बेटा, लोहे के चने चबाने के समान यह संयम-मार्ग कठिन है। तुम्हारे दाँत मोम के समान हैं, इसलिए यह मार्ग तुम्हारे योग्य नहीं है।'

पुत्र- 'नरक गति में मेरी आत्मा ने कितनी कठोर यातनाएँ सही हैं, उससे बढ़कर लोहे के चने चबाना कठिन नहीं है।'

बंधुओ! माता और पुत्र का संवाद आप सुन चुके हैं और यह तो वर्तमान में सुनते रहे हैं। आज यदि कोई दीक्षार्थी दीक्षा के लिए तैयार होता है तो परिवार वाले, आज के माता-पिता समझाइश करते हुए कहते हैं- कांई पड्यो है साधवां में, आपस मांय मुनियां में ही कळेस भर्‌यो है। कोई कुछ कहता है, कोई कुछ बोलता है। लेकिन श्रीदेवी माता ने आज की माता की तरह यह नहीं कहा कि साधु बनकर क्या करेगा? अब आप सोचिए कि क्या ऐसा कहना उचित है? यदि कहीं, कभी, किसी कारण से किसी अच्छे कार्य का अच्छा परिणाम नहीं निकलता है तो आप इस भय से कि अच्छा परिणाम नहीं निकलेगा, अच्छा काम करना बंद कर देते हैं? फिर पता नहीं क्यों, दीक्षा लेने की आज्ञा मांगते हैं तो कहते हैं- कांई पड्यो है दीक्षा में? क्या आपको अपने जिगर के टुकड़े पर विश्वास नहीं है? आप अपने जिगर के टुकड़े पर विश्वास कीजिए। आप उसको संयम-मार्ग की तकलीफें बता सकते हैं। संयम-जीवन कठिन है, संयम-जीवन पर चलना लोहे के चने चबाने जैसा है, यह भी कह सकते हैं, पर जो संयम-जीवन पर चढ़ जाता है वह प्रेम रस को प्राप्त कर लेता है। नहीं चलता है तो जिन्दगी क्या रह जाती है, ऐसी बातें भी समझाइए? पर ये बातें आप स्वयं समझें तभी समझा सकते हैं।

आज स्थिति यह है कि हम धर्म की, ज्ञान की, दर्शन की बातें नहीं जानते हैं। बंधुओ! अपनी प्रवृत्ति को बदलिए। अपने धर्म की स्थापना और धर्म के विरोध का प्रतिकार आप तब ही कर पाएँगे जब आप अपने धर्म की बात गहराई से जानते होंगे। यदि अपनी एक संतान को आप धर्म-मार्ग में लगाते हैं तो आप कितना पुण्य कमाते हैं! आप नहीं, आपके परिवार के कितने सदस्य धर्म के सम्मुख हो जाते हैं?

बंधुओ! चिन्तन करने की आवश्यकता है, यदि आपके सामने धर्म के लिए चुनौती आ जाए तो ऐसे समय में उस चुनौती को झेलने का प्रयत्न कीजिए, किन्तु उसके लिए शास्त्रों का गंभीर ज्ञान होना आवश्यक है। बिना शास्त्रों के स्वाध्याय की चुनौती आप नहीं झेल सकते। यदि आपके पास शास्त्रों का ज्ञान नहीं है तो आप चुनौती का जवाब कैसे देंगे? अत: जो शास्त्रों के अच्छे मर्मज्ञ हों, ऐसे श्रावकों की, ऐसे विद्वानों की आज बड़ी आवश्यकता है।

"बंधुओ! चिन्तन करने की आवश्यकता है, यदि आपके सामने धर्म के लिए चुनौती आ जाए तो ऐसे समय में उस चुनौती को झेलने का प्रयत्न कीजिए, किन्तु उसके लिए शास्त्रों का गंभीर ज्ञान होना आवश्यक है। बिना शास्त्रों के स्वाध्याय की चुनौती आप नहीं झेल सकते। यदि आपके पास शास्त्रों का ज्ञान नहीं है तो आप चुनौती का जवाब कैसे देंगे? अत: जो शास्त्रों के अच्छे मर्मज्ञ हों, ऐसे श्रावकों की, ऐसे विद्वानों की आज बड़ी आवश्यकता है।"

माता श्रीदेवी ने देख लिया कि अतिमुक्तक कुमार को धर्म का रंग ऐसा लग गया है कि अब इसके ऊपर संसार का रंग चढ़ नहीं पाएगा। इसने एक व्याख्यान में तत्त्वज्ञान प्राप्त कर लिया है। अत: माता श्रीदेवी उन्हें ठाठ-बाट के साथ भगवान महावीर के पास ले गईं और दीक्षा दिलवाई। दीक्षित होकर एक दिन ऐवंतामुनि ने क्या किया? नाव तिराई। हाँ, पूज्य गुरुदेव इस दिन फरमाया करते थे-

ऐवंता मुनिवर नाव तिराई
बहता नीर में
पोलासपुरी नगरी का राजा
विजयसेन भूपाल
श्रीदेवी अंग उपन्यासरे
ऐवन्ताकुमार जी।

ऐवन्ता कुमार बहते पानी में छोटी पातरी डालकर कहने लगे- 'नाव तिरे, मेरी नाव तिरे'। उनके ऐसे कृत्य पर संतों के मन में विचार भी पैदा हुआ, पर भगवान के समाधान से वे सावधान हो गए। हकीकत में ऐवन्ता कुमार चरमशरीरी थे। उस घटना से उनका अन्तर्मन जागृत हो गया। इसलिए हमको भी ऐवंता मुनि का अनुसरण करना है। यदि हम वैसा करेंगे, दर्पण में अपनी छवि को देखकर नाव को तिराने की तैयारी करेंगे तो वस्तुत: हम अपनी जिन्दगी को सफल कर पाएँगे अन्यथा स्थिति वैसी की वैसी ही रहेगी। इसलिए हम चिन्तन करें, मनन करें और केवल श्रोता नहीं बनें, हम केवल परीक्षा देने के लिए परीक्षार्थी नहीं बनें, हम उपभोक्ता भी बनें। ऐवन्ताकुमार मुनि की तरह सच्चे मायने में उपभोक्ता बनें, जिन्होंने सिद्ध स्वरूप को प्राप्त कर लिया था। हम भी वैसे ही 'श्रेष्ठ श्रोता बने उपभोक्ता' की उक्ति को चरितार्थ करें। इस प्रकार से वीतराग वाणी को अपने कण्ठ में उतार कर यदि जीवन में अमृत को ग्रहण करेंगे तो हमारा जीवन भी मंगलमय बनेगा।

"हम भी वैसे ही 'श्रेष्ठ श्रोता - बने उपभोक्ता' की उक्ति को चरितार्थ करें।"

01-09-2000

साभार- श्री राम उवाच-9

(गंगा लौट हिमालय आए)

'श्रोता से श्रेष्ठ उपभोक्ता' बनने की उक्ति को यदि आपने या आपके आस-पास किसी ने चरितार्थ किया हो तो कृपया हमें भेजें जिससे उस उक्ति से प्रेरणा लेकर अधिक से अधिक पाठकगण आत्मकल्याण कर सके।

ज्ञान पहेली

नियम :-

*यह ज्ञान पहेली पाठकों के ज्ञानवर्धन के लिए है। इस ज्ञान पहेली को भरकर अपने नाम, पते एवं मोबाइल नंबर सहित **31 अगस्त 2023** से पूर्व मो.नं. **9314055390** पर व्हॉट्सएप्प के माध्यम से भिजवाने का लक्ष्य रखें।*

नाम : ..... **मोबाइल नं. :** .....

पता : .....

1	2		3	4	5		■	6	■	7	8
9		■	10			■	11		12	■	
	■	13		■	■	14		■		■	
15	16		■	■	17			■	18		
19			■	20						■	■
21		■	22			■		■	23		■
■	■	24						■		■	25
26	27		■		■	■	■	28		■	
29		■	30			31		■	■	32	
	■	33	■	■	■		■	■	34		■
35	36		37		38		39	40		■	41
42				■		■	43				

* संकेत *

बाएँ से दाएँ

1. इस नाम के चार महासती जी म.सा. है, जिनका चातुर्मास मेवाड़, मालवा, और गुजरात में हो रहा है। (3,3,1)
7. महापुरुषों के चरणों की धूल (2)
9. मित्र, सजन (2)
10. प्राप्त करना, वरना (3)
11. महापुरुषों के लिए आदरभरा शब्द (2,1)
13. किनारा, बाण (2)
14. उल्टा दित (2)
15. बीकानेर क्षेत्र में चातुर्मास हेतु विराज रहे एक संत श्री ..... मुनि जी म.सा. (3)
17. एक भावना (3)
18. वस्तु या जमीन के टूटने पर पैदा होती है (3)
19. आचार्य भगवन् की जन्मस्थली में चातुर्मास हेतु विराज रहे एक साध्वी श्री ..... श्री जी म.सा. (3)
20. आचार्य श्री नानेश ने भावनगर में कौन-से आचार्य के साथ संयुक्त चातुर्मास किया था? (3,2,1)
21. जीने की क्रिया, सीढ़ी (2)
22. अंगूठी, छोटी मुद्रा (3)
23. मुमुक्षु नानालाल जी को गणेशलाल जी म.सा. के प्रथम दर्शन कहाँ हुए? (2)
24. सूरत में दीक्षित एक साध्वी श्री जो मेवाड़ में चातुर्मास हेतु विराज रहे हैं (4,1,1)
26. रतलाम में चातुर्मास हेतु विराज रहे एक संत श्री ..... मुनि जी म.सा. (3)
28. क्रम, खिड़की (2)
29. श्रावकों द्वारा की जाने वाली एक व्रत आराधना, उल्टा याद (2)
30. आचार्य श्री नानेश ने जयपुर में पूरे चातुर्मास में इस विषय पर प्रवचन फरमाया था (1,4)
32. साध्वी श्री दर्शना श्री जी म.सा. का चातुर्मास कहाँ है? (2)
34. अग्नि (2)
35. आचार्य भगवन् के उदयपुर चातुर्मास में पूरे चातुर्मास तपस्या करने वाले वीर भ्राता (4,1,5)
42. आचार्य श्री नानेश का आचार्य पद पर प्रथम चातुर्मास यहाँ हुआ था (4)
43. कर्नाटक में चातुर्मास हेतु विराज रहे एक साध्वी श्री.....(3,1,1)

ऊपर से नीचे

1. एक सन्त म.सा. जिनका चातुर्मास जन्मभूमि में है (3,2,1)
2. स्पर्शनेन्द्रिय का एक विषय (2)
3. राजकुमार के लिए सम्मानजनक सम्बोधन (3)
4. दुल्हा (2)
5. संग्राम (2)
6. एक उरपरिसर्प जीव (2)
8. आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. का आचार्य पद पर प्रथम चातुर्मास कौन-से शहर में हुआ? (4)
11. एक सन्त म.सा. जिनका चातुर्मास पिता मुनिश्री के साथ है (3,2,1)
12. आचार्य भगवन् के दुर्ग चातुर्मास में चलते प्रवचन में दीक्षा लेने वाले श्रावक (1,2,1,3)
13. एक पक्षी (3)
14. जरा-सा (3)
16. प्रदर्शन करना (3)
17. उपकार का विपरीत शब्द (4)
20. छत्तीसगढ़ में चातुर्मास हेतु विराज रहे एक साध्वी श्री जी (3,1,1)
22. बिना य की यमुना (2)
24. यह, बिना बिन्दी का अंत (2)
25. मुनि अवस्था में नानालाल जी म.सा. का प्रथम चातुर्मास यहाँ हुआ था (3)
26. आचार्य श्री नानेश का अंतिम चातुर्मास यहाँ हुआ था (5)
27. दीपक (2)
31. नया, नवीन (3)
32. एक अनाज (2)
33. कोयल (3)
34. आयात शब्द का बिगड़ा हुआ रूप (3)
36. बुरी आदत, व्यसन (2)
37. अंधकार (2)
38. उलझन, पहेली (2)
39. जो ज्ञान देते, स्पर्शनेन्द्रिय का एक विषय (2)
40. एक छोटा-सा फल, अंग्रेजी में मिर्ची उल्टी हो गई (2)
41. तत्त्व का ताला, ज्ञान की ..... (2)

मधुर वचन

ऐसी वाणी बोलिए

15-16 जुलाई 2023 अंक से आगे....

'ऐसी वाणी बोलिए' धारावाहिक वाणी पर संयम, नियंत्रण एवं संतुलन का संदेश देता है। इस धारावाहिक के कई शीर्षक भाषा सुधार हेतु प्रस्तुत किए जा चुके हैं। 'मित वचन' पूर्ण होने के पश्चात् **'मधुर वचन'** प्रस्तुत किए जा रहे हैं। आप सभी इन वचनों को जीवन में उतारेंगे तो निश्चय ही व्यवहार संतुलन की नई दिशा प्राप्त करेंगे। आगे प्रस्तुत है.....

(C) बड़ों के द्वारा कुछ हितकारी समझाये जाने पर छोटे सोचते हैं – ये तो हमें दिनभर टोकते हैं, इन्हें हमारी लाइफ में इन्टरफेयर करने की जरूरत ही क्या है? ऐसा सोचकर वे उनकी बातों का उलटा जवाब दे देते हैं।

(i) पिता : बेटा! ऑफिस का काम तो सबके ही रहता है, पर थोड़ा धर्म के लिए भी समय निकाला करो। यही काम आएगा।

बेटा (गुस्से में) : मैंने आपको कितनी बार कह दिया, मेरे पीछे मत पड़ा करो। आप लोग इतना धर्म करते हो, आपका जीवन कौन-सा बदल गया?

सही तरीका : सही बात है। धर्म तो करना चाहिए। मैं ही आलस्य कर देता हूँ।

Note - बड़ों की आदत हमको पसंद नहीं हो तो भी उनकी बात सुन लेनी चाहिए, जवाब देंगे तो उन्हें भी दुःख होगा और हमें भी दुःख होगा।

एक परिवार में पिता अपने बेटे को कुछ भी समझाते तो वो तुरंत भड़क जाता – 'मैं कोई बच्चा थोड़े ही हूँ, जो आप मुझे समझाते रहते हो।' पोता जब देखता कि पापा, दादा के साथ गलत व्यवहार करते हैं, तो उसे बहुत दुःख होता। एक बार वो बिना बताए कहीं चला गया। तीन दिन तक मिला ही नहीं। घर वाले परेशान हो गए। चौथे दिन अचानक वह घर आ गया। उसके पिता उसे देखते ही रो पड़े। परेशान होकर उसे कहने लगे- 'तू कहाँ चला गया था। बताकर जाना चाहिए, मुझे इतनी चिंता हो गई थी।' बच्चे ने तुरंत जवाब दिया- 'मेरे को इतना समझाया मत करो। मैं कोई बच्चा नहीं हूँ, बड़ा हो गया हूँ।'

पिता को शब्द सुनते ही अपनी बात याद आ गई। उसे मन ही मन रियलाइज हुआ कि 'मैं भी तो अपने पिता को ऐसे ही जवाब देता हूँ, मेरी बात से उन्हें भी कितना दुःख होता होगा? बच्चे ने बाद में अपने पापा के पास जाकर कहा- Sorry पापा, मैंने मिस बिहेव (गलत व्यवहार) किया। मैं आपसे इतनी-सी रिक्वेस्ट करना चाहता हूँ कि आप दादा को अच्छे से Answer (उत्तर) दिया करो। बच्चे के मुँह से ऐसी बातें

सुनकर पिता के आँखों में आँसू आ गए। उस दिन से उन्होंने सोच लिया कि मुझे पिताजी की बात पसंद नहीं आएगी तो भी मैं उसे सुन लूँगा।

Note 1 - आपकी आने वाली पीढ़ी आपको कॉपी करती है।

2 - कई माता-पिता अपने बच्चों को आज्ञाकारी और विनम्र बनाना चाहते हैं, परंतु वे खुद माता-पिता के प्रति आज्ञाकारी और विनम्र नहीं बनना चाहते। ये दो विरोधी बातें कैसे संभव होंगी?

(D) सालों से संघ में जुड़े कुछ लोग अपनी विनम्रता को बढ़ाने के बजाय अपने अहम् (Ego) को इतना बढ़ा लेते हैं कि वे कुछ भी सुनने के लायक नहीं बचते। थोड़ा-सा बोलते ही भड़क जाते हैं।

(i) Situation 1 : गुरुदेव के चरण स्पर्श करते हुए अपने सामने वाले श्रावक से एक अन्य श्रावक ने सहज में पूछ लिया, भाई साहब! आपकी घड़ी कौन-सी है?

श्रावक (तड़ककर बोला) : क्या बात करते हो? 40 सालों से दर्शन करने आ रहा हूँ। मैं कोई बेवकूफ थोड़ी हूँ। मैं भी सारे नियम जानता हूँ।

सही तरीका : चाबी की है।

Note - आप कितने भी ज्ञानी हो, पर आपका ये रवैया आपके ज्ञानी होने पर पानी फेर देता है। यदि आपसे किसी ने इतना-सा पूछ लिया तो क्या हो गया? 40 सालों तक आने से तो हमारा मन इतना शांत हो जाना चाहिए था कि कोई कुछ भी कहे, हमें गुस्सा ही नहीं आए।

(ii) Situation 2 : सालों से संघ में पढ़ाने-लिखाने और संघ का कार्य संभालने वाले किसी श्रावक को एक नये श्रावक ने सहज में कह दिया - 'ये काम ऐसे सही नहीं लग रहा। समय के अनुसार ऐसे करना सही रहेगा।'

श्रावक 2 (चिढ़कर) : तुमसे ज्यादा अनुभव मेरे को है। इतने सालों से मेरा काम हमेशा एवन (Avon) रहा है।

सही तरीका - जो सुझाव दे रहा है उसकी बात ध्यान से सुनना-समझना और कहना हाँ जरूर, ऐसे अच्छा रहेगा तो ऐसे करके देख लेते हैं। हमारा उद्देश्य तो यही है कि संघ का विकास होना चाहिए।

Note - आप संघ में छोटे से छोटे व्यक्ति की बात सुनेंगे तो सब आपका सम्मान करेंगे, आपको पूछेंगे और अपनी ही चलाएँगे तो वे आपको संघ विकास में बाधक तत्त्व मानने लगेंगे। इसलिए सबकी बात सुनें। सुनने से आप छोटे नहीं होंगे।

✶ सच्चा श्रावक सरल और विनम्र होता है। वह व्यर्थ में किसी की बातों का उलटा मतलब निकालकर कलह नहीं करता, बल्कि वह सबका सम्मान करता है।

श्री उपासकदशांग सूत्र में चुलनीपिता का उदाहरण आता है - पौषध में देव ने उन्हें उपसर्ग दिया और वे विचलित हो गए। माता के पूछने पर सारी बात बताई तब माता ने कहा- ''तुम्हारा पौषध नियम भंग हो गया है। अत: तुम जाओ, आलोचना करो, प्रायश्चित स्वीकार करो।'' चुलनीपिता बहुत ज्ञानवान श्रावक थे, परंतु उन्होंने ये नहीं कहा कि मुझे सब पता है। उन्होंने माता की बात को स्वीकार करते हुए कहा- 'आप ठीक कहती हैं।' **(कहानी को विस्तार से जानने के लिए देखें- उपासकदशांक सूत्र- अध्ययन 3)**

✶ मद्रुक श्रमणोपासक के प्रसंग को हम पुन: याद कर सकते हैं। उन्हें भी अन्यतीर्थिक ने गलत तरीके से कहा था कि 'तू कैसा श्रमणोपासक है कि तू जिस तत्त्व को देखता नहीं है, उसे भी तू मानता है?' परंतु मद्रुक ने उनके प्रश्न सुनकर कुछ भी उलटा-सीधा नहीं कहा, बल्कि बड़ी शालीनता के साथ उनका उत्तर दिया।

मद्रुक श्रमणोपासक और अन्यतीर्थिक की चर्चा

यहाँ हम देखेंगे कि मद्रुक श्रमणोपासक ने :-

- किस प्रकार सिद्धांत के अनुरूप उत्तर दिया।
- वह आक्षेप किये जाने पर भी उग्र नहीं हुआ, बहस नहीं की, बल्कि शालीनता से उत्तर दिया।
- समझाने की शैली इतनी श्रेष्ठ थी कि पहले उन्होंने अन्यतीर्थिक से ही कुछ ऐसे प्रश्न पूछे, जो उसे स्वीकार्य थे। वे उससे हाँ भरवाते गए। अंत में जब समाधान निकला, तब वह हतप्रभ रह गया।
- भगवान के पास पहुँचने पर भगवान ने उनकी प्रशंसा की। साथ ही, यह भी फरमाया कि सिद्धांत के विरुद्ध कथन करने का क्या परिणाम है।

अन्यतीर्थिक - तुम्हारे धर्माचार्य... 5 अस्तिकायों की प्ररूपणा करते हैं... यह बात कैसे मानी जाये?

मद्रुक श्रमणोपासक- किसी भी पदार्थ को हम उसके कार्य से जान-देख पाते हैं। जो पदार्थ कुछ भी कार्य न करे (निष्क्रिय रहे), उसे हम नहीं जान सकते। यानी हम उसे नहीं जानते, नहीं देखते।

अन्यतीर्थिक (आक्षेप करते हुए) : तू कैसा श्रमणोपासक है कि तू इस तत्त्व (धर्मास्तिकाय आदि) को न तो जानता है और न प्रत्यक्ष देखता है, फिर भी मानता है?

मद्रुक श्रावक ने अकाट्य युक्तियों के साथ उत्तर दिया : आयुष्मन्! यह ठीक है ना कि हवा बहती है?

अन्यतीर्थिक : हाँ, यह ठीक है।

मद्रुक : हे आयुष्मन्! क्या तुम बहती हवा का रूप देखते हो?

अन्यतीर्थिक : वायु का रूप देखना शक्य (Possible) नहीं है।

मद्रुक : आयुष्मन्! नासिका के सहगत गन्ध के पुद्गल हैं, है ना?

अन्यतीर्थिक : हाँ, हैं।

मद्रुक : आयुष्मन्! क्या तुमने उन गंध के पुद्गलों का रूप देखा है?

अन्यतीर्थिक : गंध का रूप देखना भी शक्य नहीं है।

इसी प्रकार उन्होंने कुल 5 प्रश्न पूछे : अरणि में रही हुई अग्नि, समुद्र के उस पार रहे हुए पदार्थ, देवलोक के पदार्थों आदि को आप प्रत्यक्ष जानते-देखते हैं? नहीं जानते, फिर भी आप उन पदार्थों को मानते हैं।

मद्रुक : यदि आपके मतानुसार जिन चीजों को हम, आप या अन्य छद्मस्थ मनुष्य प्रत्यक्ष नहीं जानते-देखते, उन्हें न मानें, तब तो संसार के बहुत से पदार्थ का अभाव हो जाएगा, अत: छद्मस्थ को प्रत्यक्ष नहीं जानने-देखने मात्र से उनका अभाव सिद्ध नहीं होता। इस प्रकार का उत्तर देकर उन्होंने अन्यतीर्थिक को निरुत्तर कर दिया। जब वे भगवान के पास गए तो भगवान ने फरमाया- हे मद्रुक! तुमने अच्छा किया कि अस्तिकाय को प्रत्यक्ष न जानते हुए 'नहीं जानते' ऐसा सत्य-सत्य कहा। यदि तुमने नहीं जानते हुए भी 'हम जानते हैं' ऐसा कहा होता तो अरिहंत आदि के तुम आशातनाकर्त्ता हो जाते। जो व्यक्ति बिना जाने, बिना देखे तथा बिना सुने किसी अज्ञात, अदृष्ट, अश्रुत, असम्मत एवं अविज्ञात अर्थ हेतु प्रश्न या विवेचन का उत्तर बहुत से मनुष्यों के बीच कहता है, वह अरिहंत भगवंतों की आशातना करता है। वह केवलियों की आशातना में प्रवृत्त होता है। वह अरिहंत प्रज्ञप्त धर्म की आशातना करता है, वह केवलियों की आशातना करता है। वह केवली प्ररूपित धर्म की भी आशातना करता है। हे मद्रुक! तुमने अन्यतीर्थिक को इस प्रकार उत्तर देकर बहुत अच्छा किया। तुमने बहुत अच्छा कार्य किया है। इस प्रकार भगवान ने मद्रुक के गुणों का अनुमोदन किया। उसे प्रोत्साहित (Appreciate) किया।

★ **उक्त बिन्दुओं को समझकर सुज्ञ श्रावक हर बात का शालीनता से उत्तर दें, वरना मौन रहें।** -क्रमश:

श्रीमद् भगवतीसूत्र

15-16 जुलाई 2023 अंक से आगे...

संकलनकर्ता- कंचन काँकरिया, कोलकाता

ज्ञान का वर्णन शतक 8 उद्देशक 2

पूर्वापर संबंध - ज्ञान के ही भेदों का वर्णन किया जा रहा है। इस उद्देशक के मूल पाठ में श्रीमद् नंदीसूत्र का अतिदेश (भोलावण) किया गया है, तदनुसार प्रस्तुत वर्णन है।

मन:पर्ययज्ञान

प्र. 2376 ऋजुमति मन:पर्यय ज्ञान का वर्णन कीजिए।

उत्तर

1. ऋजुमति मन के अल्प भावों को जानता है। जैसे-अमुक प्राणी ने घड़े का चिन्तन किया है।
2. ऋजुमति उत्सेध अंगुल से अढ़ाई अंगुल कम अढ़ाई द्वीप के पर्याप्त संज्ञी पंचेंद्रिय के मनोगत भावों को जानता है। (उत्सेध अंगुल का उल्लेख श्रीमद् नंदीसूत्र की चूर्णि में है।)

प्र. 2377 विपुलमति मन:पर्यय ज्ञान का वर्णन कीजिए।

उत्तर

1. विपुलमति मन:पर्यय ज्ञानी ऋजुमति से कुछ अधिक विस्तार सहित, विशुद्ध और स्पष्ट रूप से जानता-देखता है। जैसे- अमुक प्राणी ने घड़े का विचार किया। वह घड़ा चांदी का है। पाटलीपुत्र में ग्रीष्म ऋतु में बना, दूध से भरा हुआ है, फल से ढका हुआ है इत्यादि।
2. विपुलमति संपूर्ण अढ़ाई द्वीप के पर्याप्त संज्ञी पंचेंद्रिय के मनोगत भावों को जानता है।

प्र. 2378 ऋजुमति मन:पर्यय ज्ञान कितने प्रकार का होता है?

उत्तर

ऋजुमति मन:पर्यय ज्ञान तीन प्रकार का होता है। यथा- जघन्य, मध्यम और उत्कृष्ट।

1. जघन्य ऋजुमति मनोवर्गणा के अनंतप्रदेशी के अनंत स्कंधों को जानते हैं।
2. उत्कृष्ट ऋजुमति उससे अनंतगुणा अधिक को जानते हैं।
3. मध्यम ऋजुमति जघन्य ऋजुमति से षट्स्थान पतित अधिक व उत्कृष्ट ऋजुमति से षट्स्थान पतित हीन जानते हैं।

इसी प्रकार विपुलमति का भी समझना चाहिए।

प्र. 2379 क्या ऋजुमति विशुद्ध वर्द्धमान परिणामों से विपुलमति हो सकता है?

उत्तर हाँ, हो सकता है।

प्र. 2380 क्या ऋजुमति प्रतिपाती होकर नरक, निगोद में जा सकता है?

उत्तर हाँ, जा सकता है।

प्र. 2381 क्या विपुलमति अप्रतिपाती है?

उत्तर शास्त्र में इसका उल्लेख उपलब्ध नहीं है किन्तु श्री नंदीसूत्र के विवेचन के अनुसार विपुलमति अप्रतिपाती है और उसी भव में मोक्ष जाता है।

प्र. 2382 आराधक को मन:पर्यय ज्ञान की प्राप्ति उत्कृष्ट कितनी बार हो सकती है?

उत्तर उत्कृष्ट आठ बार हो सकती है, क्योंकि आराधक चारित्र के उत्कृष्ट 8 भव ही होते हैं।

साभार- श्रीमद् भगवतीसूत्र प्रश्नमाला

-क्रमश:

मनुष्य के भेद

15-16 जुलाई 2023 अंक से आगे.....

टिप्पणी : जैन धर्म, तत्त्व ज्ञान, जैनधर्म का मौलिक इतिहास तथा लोकालोक आदि के बारे में सूक्ष्म से सूक्ष्म जानकारी जन-जन के आत्मकल्याण हेतु देने का प्रयास किया जा रहा है। इसे अवश्य पढ़ें और श्रमणोपासक से जुड़े रहें।

प्रश्न 45. अन्तरद्वीप के मनुष्य का आयुष्य कितना है?

उत्तर पल्योपम के असंख्येयतम भाग जितना।

प्रश्न 46. अन्तरद्वीप के युगलिकों की अवगाहना कितनी होती है?

उत्तर 800 धनुष।

प्रश्न 47. अन्तरद्वीप के युगलिक मरकर कहाँ जाते हैं?

उत्तर देवगति में (भवनवासी या वाणव्यन्तर में)।

प्रश्न 48. सभी युगलिकों की जघन्य (कम से कम) अवगाहना कितनी होती है?

उत्तर जघन्य अंगुल का असंख्येयतम भाग।

प्रश्न 49. युगलिकों के कुल क्षेत्र कितने हैं?

उत्तर 86 (30 अकर्मभूमि और 56 अन्तरद्वीप)।

प्रश्न 50. मनुष्य के कुल कितने क्षेत्र हैं?

उत्तर 101 (86 युगलिक और 15 कर्मभूमि)।

प्रश्न 51. मनुष्य के 101 क्षेत्र में से जम्बूद्वीप में कितने क्षेत्र हैं?

उत्तर 9 (3 कर्मभूमि और 6 अकर्मभूमि)।

प्रश्न 52. लवण समुद्र में मनुष्य के कितने क्षेत्र हैं?

उत्तर छप्पन अन्तरद्वीप।

प्रश्न 53. धातकी खण्ड में मनुष्य के कितने क्षेत्र हैं?

उत्तर 18 (6 कर्मभूमि और 12 अकर्मभूमि)।

प्रश्न 54. कालोदधि में मनुष्य के कितने क्षेत्र हैं?

उत्तर एक भी नहीं।

प्रश्न 55. अर्द्धपुष्कर द्वीप में मनुष्य के कितने क्षेत्र हैं?

उत्तर 18 (6 कर्मभूमि और 12 अकर्मभूमि)।

प्रश्न 56. अढ़ाई द्वीप के बाहर मनुष्यों के कितने क्षेत्र हैं?

उत्तर एक भी नहीं यानी अढ़ाई द्वीप के बाहर मनुष्य है ही नहीं।

प्रश्न 57. सम्मूर्च्छिम किसे कहते हैं?

उत्तर जो मनुष्य या तिर्यंच जीव माता-पिता के संयोग के बिना अपने योग्य उत्पत्ति स्थान में स्वत: उत्पन्न हो जाते हैं, उन्हें सम्मूर्च्छिम कहते हैं।

प्रश्न 58. ऐसे अशुचि के स्थान कितने और कौन-कौन से हैं?

उत्तर 14 अशुचि स्थान हैं। मनुष्य के- 1. मल में, 2. मूत्र में, 3. कफ में, 4. नाक का मैल (श्लेष्म) में, 5. उल्टी में, 6. पित्त में, 7. मवाद में, 8. खून में, 9. वीर्य में, 10. वीर्य के सूखे पुद्गल भीगने में, 11. मनुष्य के जीव रहित शरीर में, 12. स्त्री पुरुष के संयोग में, 13. नगर की नाली में, 14. सर्व मनुष्य संबंधी अशुचि के स्थान में सम्मूर्च्छिम मनुष्य उत्पन्न होते हैं।

प्रश्न 59. क्या युगलिकों के मल-मूत्र आदि में सम्मूर्च्छिम मनुष्य उत्पन्न होते हैं?

उत्तर हाँ, होते हैं।

प्रश्न 60. सम्मूर्च्छिम मनुष्य को तुमने देखा है?

उत्तर नहीं, उनका शरीर बहुत सूक्ष्म (छोटा) है।

प्रश्न 61. उनकी अवगाहना कितनी होती है?

उत्तर अंगुल का असंख्येयतम भाग।

साभार- जैन तत्त्व निर्णय -क्रमश:

महासती सुभद्रा

15-16 जून 2023 अंक से आगे.....

वसंतपुर का नगर सेठ था जिनदास। उसके एक अत्यन्त रूप लावण्यवती सुशील कन्या थी सुभद्रा! नगर में सुभद्रा के समान रूपवती और गुणवती कोई दूसरी कन्या नहीं थी। वह जिधर से भी निकलती बिजली-सी चमक जाती। उसके सामने अप्सराओं का रूप भी फीका पड़ जाता।

चंपानगरी का एक धनाढ्य युवक व्यापार के लिए वसंतपुर में आया। सुभद्रा के सौन्दर्य ने उसे मोहित कर लिया। पता लगाकर वह सेठ जिनदास के घर पहुँचा। बात ही बात में सुभद्रा की चर्चा चली। युवक ने आश्चर्यपूर्वक पूछा- ''तो क्या सुभद्रा अभी तक अविवाहित ही हैं?''

''जी! विवाह के लिए तो हजारों निमंत्रण आए, पर... प्यारी बिटिया की एक शर्त है।''

''क्या...?''

''यही कि वह ऐसा जीवनसाथी पसंद करेगी, जो उसी के समान भगवान महावीर का अनुयायी हो, धर्म का विद्वान् हो और धर्माचरण में दृढ़ हो।''

युवक की आशाओं पर पानी फिर गया। वह भी दिखने में बड़ा सुन्दर था, व्यवहार कुशल था, धनाढ्य भी था, किन्तु था तथागत बुद्ध का अनुयायी। सुभद्रा के पिता जिस प्रकार अपने को 'जिनदास' कहने में गौरव अनुभव करते, उसी प्रकार यह युवक भी बुद्ध की भक्ति में विभोर होकर अपने को 'बुद्धदास' कहने में गौरवान्वित समझता था। युवक ने अपनी चिंता को भीतर ही छिपा लिया और अन्य बातें करते हुए उठकर अपने स्थान पर चला गया। कुछ देर वह विचारों की उधेड़-बुन में उलझ गया। एक ओर सुभद्रा के दिव्य सौन्दर्य की लालसा, दूसरी ओर धर्मपरिवर्तन का प्रश्न! बुद्धदास को रातभर नींद नहीं आई। सोचते-सोचते एक रास्ता उसे सूझ गया। ''सुभद्रा को पाने के लिए कुछ दिन के लिए जैनधर्म स्वीकार कर लूँ?''

अपना मतलब साधने के लिए मनुष्य धर्म और भगवान को भी धोखा दे सकता है, फिर यह तो बहुत ही मामूली-सी बात है। बस, बुद्धदास प्रातः उठते ही जैन मुनियों के पास पहुँचा। बड़ी भक्ति और श्रद्धा के साथ वह जैनधर्म का ज्ञान प्राप्त करने लगा। जब देखो, तब वह साधुओं की संगति में बैठा ज्ञान और वैराग्य की गम्भीर चर्चा करता दिखाई देता। असली भक्ति से भी नकली भक्ति में ज्यादा आकर्षण होता है। कुछ ही दिनों में बुद्धदास सेठ जिनदास की आँखों में चढ़ गया। सुभद्रा भी जब कभी मुनियों के पास इस सुन्दर

युवक को तत्त्व चर्चा करते देखती तो कुछ क्षण रुककर वह भी उसमें रस लेने लगती।

बुद्धदास की नकली भक्ति ने अपना रंग जमा लिया। सेठ जिनदास ने बुद्धदास से सम्पर्क बढ़ाया और एक दिन सुभद्रा का पाणिग्रहण बुद्धदास के साथ सम्पन्न हो गया। सुभद्रा भी अत्यन्त प्रसन्न थी कि रूप-यौवन-धन के साथ धर्म सम्पन्न पति पाकर वह सौभाग्यवती बनी है और बुद्धदास के तो मनमाने पासे गिर ही गये।

बुद्धदास सुभद्रा को लेकर अपने घर चंपानगरी को आया। सास-ननद आदि ने बहूरानी की बलैया ली, बिरादरी में मिठाइयाँ बाँटी।

ससुराल में पहले ही दिन सुभद्रा अपने नियमानुसार प्रात: चार बजे उठी। हाथ-मुँह धोकर शुद्ध हुई और एकान्त में आसन पर बैठकर **'नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं'** जपने लगी। बुद्धदास की आँखें खुली, सुभद्रा अपना मंगलपाठ करती जा रही थी- **''अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि''**। चौंककर उठा- ''हे! यह क्या कर रही हो? देखती नहीं, चारों ओर **'बुद्धं शरणं गच्छामि, संघं शरणं गच्छामि'** के स्वर्ण लेख लिखे हुए हैं, उन्हें नहीं पढ़कर तुम यह क्या जपने लगी हो?''

सुभद्रा अपने मौन में थी, वह चुपचाप अपना पाठ करती रही। सास-ननद ने भी उसका यह क्रियाकांड देखा तो बस वे तो आगबबूला हो उठीं। सुभद्रा को बड़ा आश्चर्य और खेद हुआ कि जो बुद्धदास जैन मुनियों के चरणों में बैठकर गम्भीर धर्मचर्चा करता था, वह तो कट्टर बौद्ध है और उसके रग-रग में जैनधर्म के प्रति घृणा भरी है। असहिष्णु तो इतना कि किसी को अपनी धर्माराधना करते फूटी आँख भी नहीं देख सकता। जिसे सोना समझा, वह मिट्टी निकला। जब पति की यह स्थिति है तो ननद और सास की बात ही क्या? स्त्री जितनी धर्मपरायणा होती है, उतनी ही पर-धर्म-असहिष्णु भी। अब पग-पग पर सुभद्रा को टोका जाने लगा। उसके धर्म और भगवान पर व्यंग्य कसे जाने लगे। सुभद्रा ने उनकी परवाह नहीं की तो सास आपे से बाहर होकर उसके भगवान को गालियाँ देने लगी- ''बहूरानी! महावीर का नाम मेरे घर में लिया तो खबरदार है। भगवान बुद्ध का स्मरण करो, वही तुम्हें सद्बुद्धि और सद्गति देंगे।''

सुभद्रा के धैर्य का प्याला भरने लगा। उसने विनयपूर्वक सास से कहा- ''माताजी! आपकी आज्ञा का पालन करना मेरा कर्त्तव्य है, क्योंकि मैं आपकी बहू बनकर घर में आई हूँ। किन्तु धर्म और भगवान तो अपनी आत्मा की वस्तु है। किसी के कहने से वह मैं नहीं छोड़ सकती। मेरा धर्म आपके लिए कभी अहितकर नहीं होगा, फिर क्यों आप उससे इतनी जलती हैं? क्या किसी के धर्म का उपहास करना और किसी को जबरदस्ती धर्म बदलवाना मानवता है?''

सुभद्रा की बातों से सास आगबबूला हो उठी- ''अच्छा! मुझे भी तुम मानवता की बात सिखा रही हो। अंडा बोले चिड़िया से कि चींचीं मत कर। लगता है लातों के देव बातों से नहीं मानते। मेरी प्यार भरी बातों से नहीं, किन्तु बुद्धदास की लातों और डंडों से ही तेरी बुद्धि ठिकाने लगेगी।''

सास को कलह करते देखकर सुभद्रा चुप हो गई और मन ही मन नवकार महामंत्र जपने लगी। सुभद्रा के मौन जाप ने आग में घी का काम कर डाला। सास ने अच्छी तरह से बुद्धदास के कान भर दिये।

बुद्धदास ने सुभद्रा से कहा- ''सुभद्रा! मैंने कई बार तुम्हें समझा दिया है कि एक म्यान में दो तलवार नहीं रह सकती। एक घर में दो धर्म नहीं चल सकते। तुम अपना भला चाहती हो तो महावीर को ठिकाने लगा दो और भगवान बुद्ध का स्मरण करो। **'अरिहंते सरणं'** की जगह **'बुद्धं शरणं गच्छामि'** बोला करो। इससे तुम्हारा मान-सम्मान भी बढ़ेगा, सब लोग तुम्हारा आदर करेंगे और मुझे भी तुम अधिक प्यारी लगोगी।''

सुभद्रा ने पति के चरण छूकर कहा- ''पतिदेव! घर में आप जो आज्ञा करेंगे वही काम मैं कर सकती

हूँ। किन्तु धर्म के विषय में आप मुझे कुछ मत कहिए। वह मैं किसी अन्य के लिए नहीं, किन्तु अपनी आत्मा के लिए करती हूँ। मेरी आत्मा जब तक 'महावीर' पुकारेगी तब तक किसी को खुश करने या मान-सम्मान के लिए मैं किसी अन्य भगवान का नाम नहीं ले सकती।''

बुद्धदास- ''प्रिये! मैं कभी नहीं चाहता कि तुम मेरे घर में रहकर दूसरे भगवान को पूजो। तुम्हें मेरे ही भगवान की पूजा करनी होगी। वरना तुम्हारी जिद तुम्हारे ही गले की फाँसी बन जाएगी।''

सुभद्रा इस बार कुछ दृढ़ता के साथ बोली- ''पतिदेव! यदि आपको मेरे धर्म से द्वेष है तो फिर मुझे पाने के लिए जैनधर्म स्वीकारने का स्वांग क्यों रचा था? उस समय आपका भगवान कहाँ गया था, जिसे छोड़कर आप मेरे भगवान का नाम जपते थे? क्या वह छल-प्रपंच, ढोंग और धोखा सिर्फ मुझे पाने के लिए ही किया था? क्या अपने स्वार्थों के लिए मनुष्य इतना धोखा भी दे सकता है?''

बुद्धदास ने तेवर बदलकर कहा- ''सुभद्रे! तुम छोटे मुँह बड़ी बात करने लगी हो। जानती हो इस जिद का फल क्या होगा? अपमान, कष्ट और...! जब तक '**बुद्धं शरणं गच्छामि**' नहीं कहोगी, मैं तुमसे नहीं बोलूँगा...!''

सुभद्रा मौन होकर सुनती रही। बुद्धदास मन-ही-मन फुसफुसाता चला गया। सुभद्रा ने भी दृढ़ निश्चय कर लिया था कि चाहे जो हो जाए, वह धर्म को नहीं छोड़ेगी। मनुष्य को सबसे प्यारी अपनी जान होती है, किन्तु जान से भी प्यारा ईमान (धर्म) होता है। सुभद्रा ने जान देकर भी ईमान रखने का दृढ़ निर्णय कर लिया था। वह उसी प्रकार निर्भय होकर अपने व्रत-नियमों का पालन करती रही, सामायिक पाठ आदि समय पर सम्पन्न करती रही। पति, सास और घर के सभी लोग पग-पग पर सुभद्रा को तंग करने की चेष्टा करते। बात-बात में उस पर सितम ढाहते, पर वह पत्थर बनकर इस आशा के साथ सब कुछ सहती गई कि समय पर सबको सद्बुद्धि आएगी और उसके संकट दूर टलेंगे।

एक दिन सुभद्रा सामायिक-पाठ आदि करके उठी ही थी कि प्रात:काल की पुण्यबेला में एक अभिग्रहधारी मुनि को अपने घर की ओर आते देखा। सुभद्रा मुनि को आते देखकर पुलक उठी। उसने वंदना कर भिक्षा ग्रहण करने की प्रार्थना की। मुनि ने भिक्षा पात्र को नीचे रखा और स्थिर होकर खड़े हो गये।

सुभद्रा ने भावपूर्वक शुद्ध आहार दिया और फिर हर्षविभोर हो वंदना करके मुनि के मुख की ओर देखा। मुनि की एक आँख पीड़ा से लाल होकर सूज रही थी, सुभद्रा देखकर अचंभित हो गई। एक काँटा मुनि की आँखों में लगा था। भक्ति के उद्वेग में सुभद्रा ने अपने आँचल के छोर से मुनि की आँख का काँटा निकाल दिया। (किसी-किसी कथाकार ने काँटा जीभ से निकालने का भी उल्लेख किया है। चूँकि मुनि अभिग्रहधारी थे इसलिए अपने हाथ से निकालते नहीं थे।) मुनि चले गये और पवित्र हृदया सुभद्रा भी आज के दिन को धन्य मानती हुई जैसे ही मुनि को वंदना कर पीछे लौटी तो बस सास ने कोहराम मचा दिया- ''कुलटा कहीं की! मुनि से भी नहीं चूकी। हाय! इस डायन ने तो मेरे कुल पर ही कालिख पोत दी।''

सुभद्रा स्तंभित थी, यह क्या गजब हो गया? पवित्र एवं करुणार्द्र हृदय से मुनि की आँख का काँटा निकाल देने पर कैसे आज मेरा कुल कलंकित हो गया...?'' वह बड़ी विकट स्थिति में थी और इस स्थिति में कुछ बोलना आग में घी होमना था। वह मौन खड़ी-खड़ी देखती रही। मौका पाकर बुद्धदास ने भी मन का गुब्बार निकाला- ''कलंकिनी! कुलटा! उस साधु से प्रेम था तो घर के भीतर ले जाना था या चली जाना था उसके पीछे! पति और सास की नाक के नीचे यह दुराचार करते तुझे शर्म नहीं आई? क्या यही तेरे जैन धर्म ने शिक्षा दी है? हाय! हाय! मैं तेरे रूप के जाल में फँस गया। इसीलिए आज मुँह काला कराना पड़ा है।''

सुभद्रा भूमि में आँखें गड़ाये मौन खड़ी रही। चारों ओर से गालियों की वर्षा हो रही थी। कोई उसको, कोई उसके माँ-बाप को, कोई जैनधर्म को और कोई जैन मुनियों को कोस रहा था। बुद्धदास बोला- ''कलमुँही! पहले तो साधु से आँखें मिलाते शर्म नहीं आई! और अब मुँह नीचे किए खड़ी है। जबान पर ताला लगाएगी नहीं तो क्या बोलेगी अब तू! जा चली जा मेरे घर से, कहीं चुल्लूभर पानी में डूब मर और ले डूब अपने जैनधर्म को...।''

सहने की भी कुछ हद होती है। सुभद्रा अपनी और अपने माता-पिता की निन्दा सुनती रही, सहती रही, पर धर्म पर आक्षेप आने लगा तो उसका हृदय हूक उठा। उसने दृढ़तापूर्वक कहा- ''पतिदेव! आप सब लोग ईर्ष्या से जल रहे हैं, इसीलिए तिल का ताड़ बना रहे हैं। मैंने तो शुद्धभाव से मुनि की आँख का काँटा निकाला है। मेरे मन में कोई भी बुरी भावना नहीं थी। मैं सर्वथा निर्दोष हूँ। मेरे गुरु बड़े पवित्र और महान तपस्वी थे। आप लोग उन पवित्र साधुओं पर और महान जैनधर्म पर कलंक लगा रहे हैं। यह आपका दुष्प्रयत्न सूर्य पर कीचड़ उछालने जैसा है। मेरी तरफ आज कोई बोलने वाला नहीं है, पर इससे क्या हुआ...? सत्य आखिर सत्य है। समय आएगा, जब असत्य के ये बादल छटेंगे और सत्य का सूर्य चमक उठेगा।''

बुद्धदास आदि सुभद्रा की बात सुनकर खिसियाकर बोले- ''चोरी और सीना जोरी! पाप करके अब निर्दोष बन रही है। तेरी जैसी कुलटाएँ ही तो इस धर्म को डुबो रही हैं!''

सुभद्रा अब मौन थी! अपने कमरे में जाकर वह प्रभु के ध्यान में लीन हो गई। विपत्ति और संकटों का मुकाबला करने की हिम्मत उसने अपने धर्मगुरुओं से पाई थी। वह निर्भय होकर दृढसंकल्प के साथ उस समय की प्रतीक्षा करने लगी, जब उसके सिर का यह कलंक दूर होगा। सोना आखिर अग्नि में तपकर ही तो निखरता है। संसार में हर सती, साध्वी और सत्पुरुष को संकटों की अग्नि में तपना पड़ा है। सुभद्रा भी उस अग्नि में तपकर निखर रही थी। वह दिन भी आया जब वह विशुद्ध सोने की तरह चमक उठी!

इस घटना के दूसरे दिन प्रात: नगर में सहसा कोलाहल मच गया। चंपानगरी के चारों दरवाजे रात्रि में अपने आप बंद हो गए। न उन पर ताला है, न कोई साँकल, पर खोले नहीं खुल रहे हैं। घन की चोटें लगाते-लगाते पहलवानों के हाथों में छाले पड़ गए, सेना के विस्फोटक अस्त्र-शस्त्र उन्हें हिला नहीं सके और मदमस्त हाथियों की टक्करों से भी दरवाजे चूँ तक नहीं हुए। सब लोग भयभीत थे। राजा और समस्त अधिकारी चिंतासागर में डूबे थे। नगर पर अचानक यह क्या दैवीय आपत्ति आ गई? हजारों प्रयत्न करने पर भी दरवाजे टस से मस नहीं हुए। दरवाजों पर हजारों नर-नारियों की भीड़ लगी थी। चारों ओर भय, चिंता की रेखाएँ छाई हुई थी। उसी समय राजा को सम्बोधित करती हुई एक आकाशवाणी सुनाई दी- ''राजन्! तुम्हारे सब प्रयत्न विफल हों जाएँगे! ये दरवाजे बल और छल से नहीं खुलेंगे। इन्हें तो कोई महासती का शील-बल ही खोल सकेगा। सुनो, इस चंपानगरी में यदि कोई ऐसी सती हो, जो कच्चे सूत से छलनी बांधकर कुएँ में से पानी निकाले

और उस पानी के छींटे इन दरवाजों पर लगाये तभी ये दरवाजे खुल सकते हैं, अन्यथा नहीं।''

आकाशवाणी सुनकर राजा और प्रजा में खलबली मच गई कि सच में यह कोई दैवीय प्रकोप है। राजा ने नगर में घोषणा करवाई- ''जो सती साध्वी कच्चे सूत से छलनी बांधकर कुएँ से पानी निकालेगी और नगर द्वार खोलेगी, उस महासती का समूची प्रजा उपकार मानेगी और राजा उसे अपनी धर्म बहन बनाएँगे।''

घोषणा सुनकर नगर की हजारों कुलवधुएँ इस प्रयत्न में जुट गईं। किन्तु कच्चे सूत से पानी निकालना, छलनी बांधना तो असम्भव-सा था। सुबह से शाम होने आई, लेकिन नगर के कुओं पर कुलनारियों का जमघट लगा था और कच्चे सूत एवं छलनियों के अंबार लगे थे, पर किसी का भी प्रयत्न सफल नहीं हो पा रहा था। संध्या होते-होते सुभद्रा ने भी उद्घोषणा सुनी। उसके मन में प्रेरणा जगी कि ''यह स्वर्ण अवसर आया है, जब मैं अपने शीलधर्म का परिचय देकर नगर का संकट दूर करूँ और अपने धर्म पर लगे कलंक को मिटाऊँ।'' सुभद्रा संकल्प करके उठी। सास के पास आई और प्रणाम करके बोली- ''माताजी! आप मुझे आशीष दीजिए! मैं भी अपने शीलधर्म के बल पर नगर की विपत्ति टालने का प्रयत्न करूँगी।''

सास कड़वी हँसी हँसती हुई बोली- ''तेरे जैसी सतियाँ ही तो इस नगर का बेड़ा पार लगाएँगी? जा-जा कलंकिनी! शर्म भी नहीं आई तुझे ऐसी बात कहते। चुप-चाप बैठी रह मुँह छिपाकर।''

सुभद्रा ने धीरता के साथ कहा- ''माताजी! आपके मन में झूठा वहम घुस गया है, मैं इसी को दूर करूँगी। मैं अपने व्रत में सच्ची हूँ, मेरा धर्म और मेरे देव-गुरु सच्चे हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि मैं नगर का संकट दूर करके आपके कुल की निर्मल कीर्ति में चार चाँद लगाऊँगी! मुझे रोकिए मत, जाने दीजिए!''

''जा-जा! बड़ी-बड़ी राजरानियाँ और सेठानियाँ तो अपना-सा मुँह लेकर आ गई, तू भी जा और अपने कुल का नाम डुबोकर आ जा। जा यह सीधी नाक-सी राह पड़ी।'' सास ने तिरस्कारपूर्वक सुभद्रा की ओर देखकर कहा। सुभद्रा का हृदय दृढ़ विश्वास से हिलोरें ले रहा था। उसे अपने धर्म एवं नियम पर अडिग आस्था थी। सास को प्रणाम कर अरिहंत का नाम लेकर वह चल पड़ी।

भीड़ को चीरती हुई सुभद्रा कुएँ पर पहुँची। पास-पड़ोस वाली अनेक कुलनारियाँ कनखियों से झाँककर सुभद्रा पर हँस रही थी- ''यह आई है सती! जैनमुनि के साथ दुराचार करने वाली नई महासती!''

सुभद्रा ने सब कुछ सुनकर कानों के नीचे दबा लिया। कच्चा सूत लेकर छलनी को बांधा और मन में नवकार महामंत्र का स्मरण करके हाथ जोड़कर संकल्प किया- ''मैंने मन-वचन-कर्म से शुद्ध शीलव्रत का पालन किया है तो यह छलनी पानी से भरकर बाहर आ जाए!'' बस, दृढ़संकल्प के साथ सुभद्रा ने छलनी को कुएँ में डाला और देखते-ही-देखते पानी से छलछलाती भरी हुई छलनी बाहर आ गई। व्यंग्य और मजाक करने वाली नारियों के मुँह पर ताले लग गए।

हजारों लोग आश्चर्यपूर्वक देख रहे थे। तभी राजा और मंत्री दौड़कर आए- ''चलिए महासती! अपने शीलव्रत का चमत्कार दिखाइए। इस जल को नगर द्वार पर छिड़ककर नगरी का उद्धार कीजिए।''

आगे-आगे सुभद्रा थी, पीछे राजा, मंत्री और नर-नारियों की उमड़ती भीड़! सुभद्रा पूर्व दिशा के द्वार पर पहुँचकर नवकार महामंत्र का स्मरण करके उच्च स्वर में बोली- ''अरिहंत मेरे देव हैं, निर्ग्रन्थ मेरे गुरु हैं, उन द्वारा प्ररूपित सत्य, अहिंसा, संयम रूप मेरा धर्म है। मैं आज तक अखण्ड रूप से अपने धर्म, नियम एवं शील का पालन करती आई हूँ। यदि मैं अपने शील में सच्ची हूँ तो जल के छींटे लगते ही नगर के द्वार खुल जाएँ।'' इन्हीं शब्दों के साथ सुभद्रा ने दरवाजों पर जल छिड़का और चरमराते हुए दरवाजे खुल पड़े। सती सुभद्रा की जय-जयकार से धरती और आकाश गूँज उठे।

सुभद्रा ने नगर की तीन दिशाओं के द्वारों पर पानी छिड़ककर उन्हें खोल दिया। किन्तु एक द्वार यों ही छोड़ दिया। राजा ने उसे भी खोलने का आग्रह किया तो सुभद्रा ने कहा- ''महाराज! इसको बंद ही रहने दीजिए! भविष्य में यदि किसी सती पर विपत्ति आए तो वह इस द्वार को खोलकर अपने शीलधर्म का माहात्म्य प्रकट कर सकेगी और अपनी सच्चाई का परिचय दे पाएगी।''

राजा ने सुभद्रा को धर्म बहन बनाकर बहुत सम्मान दिया। वस्त्राभूषणों से सज्जित कर राजकीय सम्मान के साथ उसे अपने घर भेजा और महासती के पद से विभूषित किया।

सुभद्रा का संकल्प पूर्ण हुआ। सत्य का सूर्य चमक उठा। चारों ओर सती सुभद्रा की जय ध्वनियाँ गूँज रही थीं। लोग चरणों में आ-आकर क्षमा माँग रहे थे- ''महासती! हमारा कोई भी अपराध हुआ हो तो क्षमा करना।'' तभी बुद्धदास और उसकी माता दौड़कर आए। दोनों ही सुभद्रा के चरणों में गिरे तो सुभद्रा ने उनको रोककर स्वयं चरणों में झुककर कहने लगी- ''यह सब आपकी कृपा का ही फल है!''

सास और बुद्धदास आँखों में आँसू लिए कहने लगे- ''देवी! तुम महान् सती हो। हमने तुम्हें और तुम्हारे धर्म को ईर्ष्यावश कलंकित किया है। हमें माफ कर दो और हम दुष्टों को भी अपने धर्म का महामंत्र देकर हमारा उद्धार करो।''

सुभद्रा ने परिवार को एक साथ जैनधर्म का पवित्र महामंत्र दान किया- बोलो, ''**नमो अरिहंताणं**''।

सास, बुद्धदास और परिवारजनों के सैकड़ों स्वर एक साथ भाव-विभोर होकर गूँज उठे- ''**नमो अरिहंताणं**'' अरिहंतों को मेरा नमस्कार है...!

आधार ग्रंथ: दशवैकालिक निर्युक्ति, अध्ययन 1, गाथा 73-74

नमो अरिहंताणं

पाठकों के ज्ञानार्जन हेतु श्रमणोपासक में प्रारम्भ की गई सोलह सतियों के जीवन चरित्र की यह सीरीज इस अंक में सम्पन्न हो रही हैं। पाठकगण इस अंक में प्रकाशित 'महासती सुभद्रा' के जीवन चरित्र का पठन कर स्व-मूल्यांकन अवश्य करें कि हमारा प्रयास कितना सार्थक हो पाया है और आप अपने जीवन में जैन धर्म की इस अमूल्य धरोहर को कितना स्थान दे पाए हैं।

(आप सभी के समक्ष 'धर्ममूर्ति आनन्दकुमारी' धारावाहिक के रूप में प्रकाशित हो रहा है, जिसमें आचार्य श्री हुक्मीचंद जी म.सा. की प्रथम शिष्या महासती श्री रंगू जी म.सा. की पट्टधर महासती आनन्दकँवर जी का प्रेरक जीवन चरित्र प्रतिमाह पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है।)

सत्यता के द्वार पर

महासती जी के प्रभावोत्पादक वचनामृत सुनकर फूलकँवर बाई गद्‌गद् हो उठी। वह समझने लगीं, मानो कई दिनों से भूखे को आज भोजन मिला हो, वह भी स्वादिष्ट। उनकी ज्ञानपिपासा जाग उठी। अब तो महासती जी के पास प्रतिदिन आने लगीं और उनके धर्मोपदेश बड़ी रुचि से सुनतीं। एक दिन अवसर पाकर फूलकँवर बाई ने महासती जी से श्राविका के व्रत ग्रहण कर लिये और महासती जी से सविनय प्रार्थना की- ''महासती जी! मेरी एक छोटी बहन है। वह अभी 16 वर्ष की है और उसके पति का वियोग हो गया है। आप उचित समझें तो उसमें जैनधर्म के दृढ़ संस्कार भरने का प्रयत्न करें और उसे कल्याण का मार्ग बताएँ।'' महासती जी ने कहा- ''क्यों नहीं! तुम उसे अपने साथ लाओगी तो मैं अपना कर्त्तव्य पालन करूँगी।''

> **"जब मैं उन महासती जी म.सा. के सम्पर्क में आई तो मेरी जीवन दिशा ही पलट गई। पहले मैं रामभक्त (रामस्नेही) होने के कारण जैनधर्म से अलग-सी रहती थी, परन्तु महासती जी म.सा. के उच्च विचार, पवित्र आचार और दया भावना से भरा हुआ हृदय आदि कुछ गुण ऐसे थे, जिन्होंने मुझे जैनधर्म की ओर सहसा खींच लिया।"**

फूलकँवर बाई अपने पीहर आईं। आते ही माताश्री से बातें होने लगी। प्रसंगवश महासती जी की बातें भी छिड़ गई। फूलकँवर बाई कहने लगीं- ''वास्तव में महासती जी का त्याग और वैराग्य सराहनीय है। उनकी प्रकृति बड़ी मिलनसार और भद्र है। मुझे तो उनकी बातें बड़ी रुचिकर लगीं।''

माता जी ने आपकी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया और दूसरे कार्य लग गई, पर आनन्दकुमारी जी अपनी बहन की बातें ध्यान से सुन रही थी। वे गम्भीरता से बहन की बातों पर विचार कर रही थी। उनके मन में भी महासती जी के दर्शन करने की उत्सुकता जाग गई। प्रबुद्ध आत्माओं के लिए एक इशारा ही काफी होता है। वे अच्छी बातों को ग्रहण करने के लिए तैयार रहती हैं। आनन्दकुमारी जी ने भी यह बात हृदयंगम कर ली और अवसर पाकर अपनी बहन से महासती जी के विषय में विशेष पूछताछ भी की।

फूलकँवर बाई अपनी बहनों के प्रति बड़ी उदार थीं। वह तो यही चाहती थीं कि मेरी छोटी बहिन के मन में धर्मपिपासा जागे तो मैं उन महासती जी के पास ले जाऊँ। फूलकँवर बाई ने जैनधर्म सम्बन्धी बातों के साथ-साथ महासती जी का परिचय भी दिया। आनन्दकुमारी जी ने साध्वीवर्या की सेवा में ले जाने के लिए अपनी बहन से कहा, पर अड़चन यह थी कि

संस्कार सौरभ

धर्ममूर्ति

15-16 जुलाई 2023 अंक से आगे....

आपके पति का देहावसान हुए थोड़े ही महीने हुए थे इसलिए दिन में कहीं बाहर आ-जा नहीं सकती थीं। मारवाड़ में इस प्रथा का पालन बड़ी कट्टरता के साथ किया जाता था। अत: मौका पाकर एक रात को अपनी बड़ी बहिन फूलकँवर बाई के साथ आप महासती जी म.सा. की सेवा में गई और उनके दर्शन किये। महासती जी ने आपके ऊपर स्नेह दृष्टि डाली। आपसे जीवन सम्बन्धी कुछ बातें कीं और आपको जैनधर्म एवं चारित्रात्माओं की चर्या के सम्बन्ध में कई बातें बतलाईं। आप महासती की पवित्र वाणी को सुनकर अपने जीवन की तरफ दृष्टिपात करने लगीं और गम्भीर विचार में डूब गईं। महासती जी के उपदेश सुनकर कई बार तो आपकी आँखों से अश्रुओं का झरना बह निकलता। वास्तव में आपको सच्चे धर्म का स्वरूप यहीं प्राप्त हुआ था।

आनन्दकुमारी जी कहा करती थीं- ''जब मैं उन महासती जी म.सा. के सम्पर्क में आई तो मेरी जीवन दिशा ही पलट गई। पहले मैं रामभक्त (रामस्नेही) होने के कारण जैनधर्म से अलग-सी रहती थी, परन्तु महासती जी म.सा. के उच्च विचार, पवित्र आचार और दया भावना से भरा हुआ हृदय आदि कुछ गुण ऐसे थे, जिन्होंने मुझे जैनधर्म की ओर सहसा खींच लिया। मैं प्रतिदिन महासती जी म.सा. की संगति करने लगी। जैन साध्वियों के निष्कलंक जीवन को देखकर मेरा हृदय उनके प्रति श्रद्धा से भर गया। मैंने मन में कहा- ''**साध्वियाँ तो ये हैं।** साध्वी जीवन तो इनका है। अब तक तो मैं चन्दन के भ्रम में कंटीले झाड़ों में ही उलझी हुई थी।''

महासती जी म.सा. के दर्शन पाकर मानो आपने कवि की इस उक्ति को चरितार्थ कर लिया था-

''साधवो न हि सर्वत्र, चन्दनं न वने वने।''

यह है आनन्दकुमारी जी की सम्यक्त्व के बीजारोपण की कहानी। सत्य का प्रकाश जब आपको मिला तो आपने उसे अपनाने से इनकार नहीं किया। आपने उसके लिए अपने हृदय का दरवाजा खोल दिया और जैनधर्म के तर्कसंगत सिद्धान्तों और गुत्थियों को समझने के लिए आपकी चिन्तनशील मानसशक्ति तैयार हो गई।

जैनधर्म जहाँ आचार प्रधान धर्म है, वहाँ उच्च कोटि का विचार प्रधान धर्म भी है। वह मनुष्य की प्रतिभा और तर्कबुद्धि को पंगु नहीं बनाता अपितु अधिकतर वेग प्रदान करता है। यही कारण है कि जहाँ पुस्तकों को रट-रटकर विषय को दिमाग में ठूँसने वाले व्यक्ति सिद्धान्तों को समझने में असफल हो जाते हैं, वहीं साधारण-सा चरित्रशील व्यक्ति इसके उपयोगी तत्त्वों की हृदयंगम कर लेता है। आनन्दकुमारी जी की धार्मिक भावना, जो अभी तक इने-गिने मिथ्या विश्वासों और असंस्कृत साधुओं तक ही सीमित थी, वह अब तर्क का वास्तविक रूप लेकर शुद्ध सत्य की ओर मुड़ने लगी। जैनधर्म पर आपकी श्रद्धा द्वितीया के चन्द्रमा की भाँति निरन्तर बढ़ती चली गई।

आनन्दकुमारी जी अब प्रतिदिन महासती जी म.सा. के दर्शनार्थ आने लगीं। आपने अपनी तीव्र बुद्धि के कारण थोड़े ही दिनों में सामायिक, प्रतिक्रमण का अभ्यास कर लिया। आपने अपने आवश्यक कार्य करने के बाद बचे हुए दिवस में महासती जी म.सा. के पास जैनधर्म के नौ तत्त्व, पच्चीस बोल, लघुदण्डक आदि थोकड़े सीखने शुरू कर दिये। आपके हृदय में धर्म का रंग पक्का हो गया था, जो किसी तरह छूटने वाला नहीं था। आप अब प्रतिदिन सामायिक करना, महासती जी का व्याख्यान सुनना एवं अन्य धार्मिक कार्य रसपूर्वक करना नहीं भूलती थी। महासती जी म.सा. की सत्संगति आपके जीवन की कायापलट करने में कितनी कामयाब होती है एवं सत्संगति से आप सत्य के दरवाजे तक तो पहुँच चुकी हैं, अब कितनी आगे बढ़ती हैं, यह पाठक आगे देखेंगे।

साभार- धर्ममूर्ति आनंदकुमारी

-क्रमश:

आनंदकुमारी

जय जिनेन्द्र बच्चो! आप सभी के समक्ष 'बालमन में उपजे ज्ञान' शीर्षक के अन्तर्गत निरन्तर विभिन्न विषयों पर जानकारी प्रदान की जा रही है। आईए, आगे जानते हैं कि सौरभ की माताजी ने बच्चों को आज किस विषय पर जानकारी दी।

हमेशा की तरह चारों Friends स्कूल में मिलते हैं।

नीलिमा – जय जिनेन्द्र Friends !

सौरभ – (आश्चर्य से) नीलिमा, वाह तुम तो आज बड़ी खुश लग रही हो और तुमने आज 'जय जिनेन्द्र' भी बोला।

पंकज – हाँ, हाँ, बताओ नीलिमा क्या बात है?

नीलिमा – अरे, तुम सब भूल गए। एक साल पहले हमने आज ही के दिन अपनी Transformation Journey स्टार्ट की थी।

(सभी थोड़ा मुँह बनाते हुए)

नितिन – हाँ, याद आया। एक साल पहले जब चातुर्मास प्रारंभ हुआ था तो हम यहीं School में सौरभ का मजाक बना रहे थे।

ये प्रतिक्रमण क्या होता है?

रात को खाना क्यों नहीं खाना?

Parties के बिना कैसे रहोगे?

(चारों हाँ में हाँ मिलाते है)

सौरभ – पर अब तक तुम सबने भी जैन धर्म के बारे में कई सारी जानकारियाँ प्राप्त कर ली है।

(सभी दोस्त सालभर की सभी बातें याद करते हुए अपनी-अपनी Classes में जाते हैं और शाम को सौरभ के घर पर मिलते हैं।)

Kids Corner

बालमन में उपजे ज्ञान

- मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

सौरभ की माताजी- जय जिनेन्द्र बच्चो! आज आप सभी के साथ एक साल का सफर पूरा होने पर मैं बहुत खुश हूँ, आप लोगों ने अच्छे से हर एक जानकारी को समझा। आप लोगों को एक ऐसी चीज बताने जा रही हूँ जो जैन धर्म का सबसे Important Part है और वो है **'क्षमा' यानी Forgive**। क्षमा/माफी मांगना व क्षमा कर देना दोनों ही बहुत जरूरी है।

आपसे कोई भी गलती हो जाए, आप किसी को कुछ गलत बोल दो, कोई वस्तु आपसे टूट जाए या खो जाए तो अपनी गलती मानकर Sorry बोल दो।

परन्तु सिर्फ Sorry बोलना ही नहीं है अपितु पश्चात्ताप के साथ क्षमा मांगनी है। अक्सर हम डांट या अपमान के डर से अपनी गलती छुपा लेते हैं और झूठ बोल देते हैं अथवा किसी और का नाम ले लेते हैं। परन्तु हम सभी जानते हैं कि ये सब गलत है। अपनी गलती Accept करना उतना ही आवश्यक है जितना अपने अच्छे कार्यों के बारे में बताना।

If any one is rude, unfair with you तो उसे तुम माफ कर दो, क्योंकि हमारे पास अच्छी चीज है **'माफी'**। किसी की बुरी आदत के कारण हम अपनी अच्छी आदत क्यों छोड़ें? कोई आपके साथ कितना भी गलत करे, आप उसे माफ कर दो। (सभी हँसते हुए)

अत: आज हम सब ये प्रतिज्ञा करते हैं कि आज से हम किसी के लिए भी अपने मन में राग-द्वेष, कषाय, क्रोध नहीं रखेंगे। सभी के लिए समान और शुद्ध भाव रखेंगे। आप खुद महसूस करेंगे कि आपको कितना अच्छा लग रहा है।

सभी बच्चों ने आज क्षमा का महत्त्व समझ लिया था।

::: प्रतिज्ञाएँ :::

1. अपने ऐसे पाँच दोस्त या रिश्तेदार जिनका आपने कभी दिल दु:खाया हो तो उनसे Sorry कह दो।
2. किसी के लिए भी अपशब्दों का उपयोग नहीं करना।
3. रोज रात को 5 मिनट चिंतन करना कि आज मैंने कोई गलती तो नहीं की, किसी का मन तो नहीं दु:खाया। यदि ऐसा किया हो तो उसी क्षण मन ही मन सबसे क्षमा मांगना और अगले दिन प्रत्यक्ष रूप से क्षमायाचना करना।

तू वही है, जिसे तू हनन योग्य मानता है। अहिंसा, धर्मरूपी महल की नींव की ईंट है। यह धर्म का मूल आधार है। अहिंसा क्षमा का मूल आधार है। आगम शास्त्रों में इसका सूक्ष्म विवेचन मिलता है। पंचमहाव्रतधारी चारित्रात्माएँ अहिंसा के उत्कृष्टतम रूप को अंगीकार कर अपने जीवन का, आत्मा का विकास करती हैं। उनके अहिंसामय जीवन की प्रेरणा से समाज में धर्म का स्पंदन होता है। जिस साधक का अहिंसा व्रत सुरक्षित होता है, उस साधक के अन्य सभी व्रत सुरक्षित होते हैं।

संस्कार सौरभ

क्षमा विवेक और अहिंसा

परस्परोपग्रहोजीवानाम्

-कुमुद जैन, हैदराबाद (तेलंगाना)

परम पूज्य आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. की संकलित वाणी में दर्ज है कि तीर्थंकरों ने विराट और व्यापक अहिंसा व्रत को धारण किया। वे साधु बने तो पहला प्रण **'सव्वं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि'** किया। सावद्य योग का अर्थ है मन, वचन एवं काया से सब प्रकार के हिंसादिक कार्यों का परित्याग किया जाए। बड़े प्राणियों के साथ-साथ इसमें उन प्राणियों की हिंसा का भी त्याग है जो मनुष्य की दृष्टि में नहीं आ रहे हैं तथा जो ज्ञानियों के ज्ञान में अभिव्यक्त हुए हैं। ऐसे सूक्ष्म जीव पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और वनस्पति में हैं। ये तथा अन्य त्रस काया के चलते-फिरते जीव मिलकर छः काया के जीव हैं। इन छः काया के जीवों की हिंसा का त्याग उन्होंने तीन करण से भी किया। इनकी हिंसा न स्वयं करना, न दूसरों से करवाना तथा न ही करते हुए की अनुमोदना करना।

भगवान महावीर ने परिज्ञा का उपदेश दिया है। कोई व्यक्ति इस जीवन के लिए, प्रशंसा-सम्मान और पूजा के लिए, जन्म-मरण और मुक्ति के लिए या दुःख का प्रतिकार करने के लिए छः काय के जीवों की स्वयं हिंसा करता है, दूसरों से करवाता है तथा हिंसा करने वालों की अनुमोदना करता है तो वह हिंसा वृत्ति उसके अहित के लिए होती है। उसकी अबोधि के लिए कारणभूत अर्थात् ज्ञान बोधि, दर्शन बोधि और चारित्र बोधि की अनुपलब्धि के लिए कारणभूत होती है।

अहिंसा की व्यापक दृष्टि का विवेचन करते हुए आचारांग में **'तुमं सि णाम तं चेव....'** सूत्र में भगवान महावीर ने आत्मौपम्यवाद का निरूपण करके सर्व प्रकार की हिंसा से विरत होने का उपदेश दिया है।

शास्त्रानुसार दो भिन्न आत्माओं के सुख या दुःख की अनुभूति की समता सिद्ध करना इस सूत्र का उद्देश्य है। इसका तात्पर्य है- दूसरे के द्वारा किसी भी रूप में तेरी हिंसा की जाने पर जैसी अनुभूति तुझे होती है, वैसी ही अनुभूति उस प्राणी को होगी, जिसकी तू किसी भी रूप में हिंसा करना चाहता है।

इसका एक अर्थ यह भी है कि तू किसी अन्य

की हिंसा करना चाहता है, पर वास्तव में यह उसकी हिंसा नहीं, किन्तु तेरी शुभवृत्तियों की हिंसा है। तेरी यह हिंसा-वृत्ति एक प्रकार से आत्म-हिंसा, स्व-हिंसा ही है। उक्त **'तुमं सि णाम तं चेव....'** सूत्र का अर्थ बताया गया है- तू वही है जिसे तू हनन योग्य मानता है। तू वही है जिसे तू आज्ञा में रखने योग्य मानता है। तू वही है जिसे तू परिताप देने योग्य मानता है। तू वही है जिसे तू दास बनाने हेतु ग्रहण करने योग्य मानता है। तू वही है जिसे तू मारने योग्य मानता है।

ज्ञानी पुरुष ऋजु होते हैं। वे परमार्थत: हन्तव्य और हन्ता की एकता का प्रतिबोध पाकर जीने वाले होते हैं। इस आत्मैक्य के प्रतिबोध के कारण वह स्वयं हनन नहीं करते, न दूसरों से हनन करवाते हैं और न ही हनन करने वाले का अनुमोदन करते हैं। क्योंकि कहा गया है कि कृत-कर्म के अनुरूप स्वयं को ही उसका फल भोगना पड़ता है। इसलिए किसी का हनन करने की इच्छा मत करो।

तीर्थंकर भगवन्तों द्वारा की गई अहिंसा व्रत की परिपक्व साधना से एक पवित्र परंपरा ढली तथा उसी परंपरा में निर्ग्रंथ श्रमण संस्कृति का प्रवाह प्रस्फुटित हुआ है।

तीर्थंकरों की वाणी के आधार पर श्रमण निर्ग्रंथ पंचमहाव्रतों को धारण करते हैं। वे अहिंसा व्रत एवं अन्य व्रतों की परिपूर्ण साधना में निमग्न हैं। हम श्रावक-श्राविकाएँ भी आगमोल्लेखित अपने अणुव्रतों की पालना करते हुए साधना पथ पर आगे बढ़ें। साधुमार्ग की अविच्छिन्न परंपरा में पूर्वाचार्यों सहित वर्तमान आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. के इंगित मार्ग पर साधु-साध्वी और श्रावक-श्राविकाएँ अहिंसा की शुद्ध साधना करने तथा इसमें किसी भी तरह की अपवित्रता का प्रवेश नहीं होने देने के प्रति पूर्णत: सजग हैं।

भक्ति रस

गुरुवाणी का श्रवण

-राखी अलिझाड़, मुक्ताईनगर

आओ करें शांत हृदय से गुरुवाणी का श्रवण।
जीवन परिवर्तित कर देगा जिनवाणी का ग्रहण।।
दुनिया में सुनते हैं कई, अच्छे-बुरे विचार,
पर उन्हीं को मन में धार, जो करे जीवन सुधार।
गुरुवाणी से बनता, सत्य सरल आचरण,
आओ करें शांत हृदय से गुरुवाणी का श्रवण।।
संसार की मोहमाया में फँसे हम अज्ञानी,
कैसे होता कर्मों का बंध, यह बात गुरुवर से जानी।
सुनकर, समझकर शुद्ध करें अपना अंत:करण,
आओ करें शांत हृदय से गुरुवाणी का श्रवण।।
समझें हम सही-गलत को, जानें सच्चे धर्म का मर्म,
आडम्बर, कषायों में उलझकर, ना बाँधे अपने कर्म।
करते हैं गुरु गाँव-गाँव, शहर-शहर, घर-घर जन जागरण,
आओ करें शांत हृदय से गुरुवाणी का श्रवण।।
गुरुमुख से बहती है, सत्य धर्म की धारा,
ग्रहण कर पा सकते हैं, संसारी दु:खों से किनारा।
ऐसा बने आचरण कि महोत्सव बन जाए मरण,
आओ करें शांत हृदय से गुरुवाणी का श्रवण।।

संस्कार सौरभ

क्षमापर्व की सार्थकता

-संकलित

जैन परम्परा में क्षमापर्व की अपनी पृथक् विशेषता है। हम दैनिक कार्य-व्यवहार तथा व्यवसाय से सम्बद्ध रहकर इन्द्रिय सुखों, स्वार्थ एवं कषायों के वशीभूत होकर अन्य जीवों, परिजनों, सम्बन्धियों तथा परिचित/अपरिचित व्यक्तियों को वचन, कायिक क्रियाओं, मन आदि के माध्यम से जाने-अनजाने में कष्ट पहुँचा सकते हैं व दु:खी बना सकते हैं। ऐसी स्थिति में अप्रत्यक्ष रूप से हम स्वयं भी क्रोध, मान, माया और लोभ के कारण प्रभावित होते हैं। स्वास्थ्य, मानसिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से हम अपनी भी हानि कर सकते हैं, अत: जैन साधना में प्रतिक्रमण का विधान है। तदनुसार हम प्रतिदिन प्रात:काल, सायंकाल, पक्खी के दिन, वर्षभर तीन बार चातुर्मासिक और एक बार संवत्सरी के दिन समस्त जीवों को क्षमा करते हुए उनसे क्षमायाचना करते हैं।

वस्तुत: क्षमायाचना और क्षमा प्रदान करने का केवल धार्मिक महत्त्व नहीं है। क्षमा भाव की जागृति तभी होती है जब 'स्वदोष दर्शन' की ओर कदम बढ़ाते हैं। क्रोध का शमन हुए बिना, अहं का विगलन हुए बिना हम सहज और सरल नहीं बन पाते तथा इन ग्रन्थियों के कारण हमारे भीतर प्रेम, दया और करुणा के रस सूखने लगते हैं। आज तो वैज्ञानिकों और मनोचिकित्सकों ने सिद्ध कर दिया है कि यदि हमारे भीतर क्रोध की ज्वाला धधक रही है तो रासायनिक परिवर्तन होने लगता है और हम उच्च रक्तचाप, कोलाइटिस व पैप्टिक अल्सर जैसे रोगों को आमन्त्रण दे देते हैं। इसीलिए जैनाचार्यों ने क्षमाभाव की धारणा में अभिवृद्धि हेतु अभ्यास और साधना की बहुत ही सुन्दर और मनोवैज्ञानिक परिपाटी निर्मित की है। दैनिक, रात्रिक, पाक्षिक, चातुर्मासिक एवं सांवत्सरिक प्रतिक्रमण के माध्यम से हम स्वभाव (स्व+भाव) में स्थित होकर क्षमा भाव को धारण कर सकें, ऐसी व्यवस्था है।

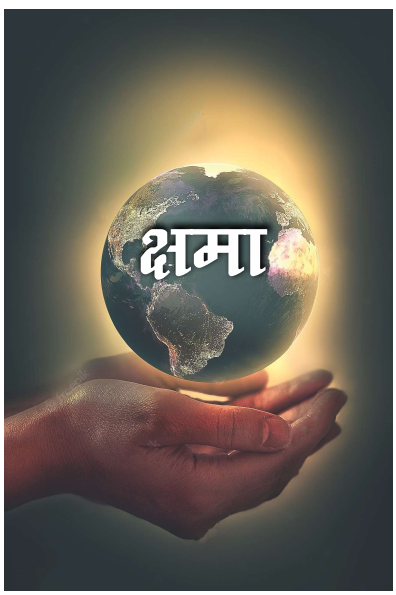

वास्तविक स्थिति का विश्लेषण करें तो स्पष्ट होता है हमने क्षमायाचना को औपचारिकता ही मान लिया है। क्षमाभाव के बाहरी कलेवर को तो हमने संभाले रखा है, परन्तु उसकी आत्मा को, उसकी चेतना को खो दिया है। फलत: **'खामेमि सव्वजीवे'** का पाठ प्रतिक्रमण की पाटी रूप में रह गया है और **'मिच्छा मि दुक्कडं'** मात्र यांत्रिकता व वाचिक स्थिति ही है। हम आत्मनिरीक्षण, आत्मालोचन, ध्यान और स्वाध्याय के माध्यम से क्षमा की गहराई को स्पर्श नहीं कर पाते। इस कारण ऊपर से क्षमायाचना तो कर लेते हैं, परन्तु हमारे भीतर की गाँठें नहीं खुल पाती। क्षमा का मर्म समझे बिना हम धर्म से जुड़ नहीं पाते।

पर्वाधिराज पर्युषण आत्मगुणों के प्रकटीकरण और भाव विशुद्धि की भूमिका तैयार करता है। इस अवधि में हम तपाराधना कर स्वयं से जुड़ने की तैयारी करते हैं, कर्मों की निर्जरा करते हैं और वर्षभर के कार्यों का लेखा-

जोखा करते हैं। संवत्सरी के अवसर पर हम प्राणी मात्र के प्रति मैत्री भाव को विस्तार देते हैं। **'मित्ती मे सव्वभूएसु'** तथा **'वेरं मज्झं न केणइ'** द्वारा यह प्रकट करते हैं कि मेरी सर्व जीवों से मैत्री है और किसी से कोई वैर नहीं है।

चूंकि हमें अपनी आत्मा को ही वास्तविक स्थिति से परिचित कराना है अत: हमें स्पष्ट रूप से देखना है कि जिनके साथ संबंधों में कटुता आई है, मनमुटाव हुआ है, जिनसे हमने छल-कपट किया है, उनसे क्षमा मांगी या नहीं? जिनसे हमारे सम्बन्ध अच्छे रहे हैं, उनसे क्षमायाचना कर लेना ही पर्याप्त नहीं है। हम शिष्टाचारवश खमतखामणा कर लेते हैं तो हार्दिकता का अभाव रहता है। आवश्यकता है कि हम क्षमा मांगने से पूर्व अपने भीतर गहरा उतरें। क्रोध के साथ अहं को भी छोड़ें और शल्यरहित होकर सहजता से क्षमा प्रदान करते हुए क्षमायाचना करें।

क्षमापर्व की सार्थकता इसी में है कि हम अपने दोषों के प्रति सजग रहें, स्व-दोष दर्शन के पक्षधर बनें और आत्मचेतना का स्पर्श कर सर्व जीवों को **'एगे आया'** अर्थात् एक आत्मा रूप में मानें। अन्य शब्दों में कहें तो जब साधक तप करता है, प्रायश्चित्त, विनय, ध्यान, स्वाध्याय में लीन होता है तभी समस्त दोषों से संबंध छूटता है। यही है चेतना से आत्म-साक्षात्कार।

जो परिपाटी के तौर से **'मिच्छा मि दुक्कडं'** बोल देते हैं, परन्तु दोषों को दोहराते रहते हैं, वे क्षमा का मर्म नहीं समझते। जब तक समता और क्षमा के भाव हमारे अन्दर जागृत नहीं होते और अपने दोष न दोहराने का संकल्प नहीं उठता तब तक **'मिच्छा मि दुक्कडं'** का कोई अर्थ नहीं। सचमुच क्षमापर्व सम्पूर्ण विश्व के लिए अमूल्य निधि है। आज के हिंसा, तनाव, संघर्ष से युक्त युग में यदि मानवता की रक्षा और सच्ची सुख-शांति की प्राप्ति सम्भव हो सकती है तो मात्र क्षमा भाव धारण करने की प्रक्रिया से ही हो सकती है। अत: आवश्यकता है कि हम अपने कषायों को उपशान्त करें व क्षमा को सार्थकता प्रदान करें।

भक्ति रस

क्षमा : मूल भी, फूल भी

-मोनिका मिन्नी, अहमदाबाद

पनप रहा जीवन हमारा, राग-द्वेष की छाँव में।
क्रोध-कलह की कटुक बेड़ियाँ, पड़ी हुई हैं पाँव में।।

पापों का हो मंथन सही, कर्मों की हो आलोचना।
मन में तनिक संशय ना हो, हो दिल से क्षमायाचना।।

जीव मात्र के प्रति भी, क्रूरता मन में ना हो।
बंधुत्व की भावना हो, बैर किसी से ना हो।।

दिल से क्षमा की याचिका हो, दिल से क्षमा का दान भी।
खमाकर सर्व जीवों से, गल जाता है अभिमान भी।।

'क्षमा वीरस्य भूषणम्', ये धर्म का भी मूल है।
हर गलती को गले लगाता, ये ऐसा पावन फूल है।।

क्षमा विवेक

-डॉ. आभा किरण गाँधी, धागड़मऊ

क्षमा हृदय का चंदन है,
विभाव दशा का शमन है।
स्वभाव में अक्षय आनन्द है,
क्षमा धर्म ही परम विनय है।।

दुनिया में दो तरह के मूर्च्छित व्यक्ति हैं। पहले तो वे जिन्हें मोह-माया से उपरत होने के लिए कोई मार्गदर्शक ही नहीं मिलता और दूसरे वे जो साधना के पथ पर कदम तो बढ़ा देते हैं, पर उन्हें मंजिल नहीं मिलती। साधना के पथ पर कदम बढ़ा देने पर भी यदि व्यक्ति को मंजिल नहीं मिलती है तो वह स्वयं को ऐसे कोहरे से घिरा पाता है, जहाँ उसे ऐसे गुरु या मार्गदर्शक की आवश्यकता अनुभव होती है, जो उस कोहरे को हटाकर आत्मा पर लगी सींखचें और काराएँ बिखेर सकें। महावीर प्रभु उस मार्ग के हर पथिक के हाथ में आत्म-जागरण का दीप थमाना चाहते हैं। वे जानते हैं कि जब तक आत्म-जागरण का दीप प्रज्ज्वलित नहीं होगा तब तक व्यक्ति द्वारा की जाने वाली सब क्रियाएँ राख पर लीपापोती के समान हैं। धार्मिक लोगों के द्वारा की जाने वाली प्रार्थनाएँ, प्रतिक्रमण और अन्य कोई भी धार्मिक अनुष्ठान तब ही सार्थक हो सकते हैं जब उनके हाथ में आत्म-जागरण, आत्म-सजगता एवं अप्रमत्तता का दीप हो।

व्यक्ति के आत्मगुणों के विकास में जो चीज सबसे ज्यादा सहायक बनती है वह है जागृति। अत: सतत् आत्म-जागृत रहकर पूर्वोपार्जित कर्मों का क्षय करें। लोग कहते हैं कि क्रोध नहीं छूटता, बुजुर्ग हो जाने पर भी भीतर के विकार नहीं छूटते।

> "भला जब माफी मांगकर कलह दूर की जा सकती है तो फिर वैर और गुस्सा रखकर मन में घुटन क्यों रखी जाए।"

बहुत मालाएँ फेर लीं, बहुत सामायिक एवं प्रतिक्रमण कर लिए, पर मनोविकार नहीं छूटते। प्रभु कहते हैं- छूट सकते हैं, बशर्ते होश और सजगता रखी जाए। अगर होश हर कार्य के साथ जुड़ा रहे तो गलत-गलत छूट जाएगा और अच्छा-अच्छा रह जाएगा।

वे क्षमाशील हैं, जो किसी के क्रोध से उत्तप्त नहीं होते और सहिष्णुता से विषाग्नियों को भी निस्तेज कर देते हैं। यदि हमने क्षणिक प्रमाद, आवेश में किसी के प्रति किंचित् भी अनुचित व्यवहार किया हो तो बिना किसी झिझक के तत्काल क्षमायाचना कर लें। भला जब माफी मांगकर कलह दूर की जा सकती है तो फिर वैर और गुस्सा रखकर मन में घुटन क्यों रखी जाए। वैर जीवन में बहने वाला नाला है और क्षमा अमृत का झरना है। नाले से बाहर निकलें व झरने के शुद्ध निर्मल जल में स्नान करें। "उवसमेण हणे कोहं" क्षमा से क्रोध का हनन करें। क्रोध दिवाला है और क्षमा दिवाली है। 56 इंच का सीना उसका नहीं होता जो प्रतिदिन कसरत करता है, बल्कि असली 56 इंच का सीना उसका होता है जो गलती करने वालों को माफ कर देता है। भगवान उन्हीं लोगों से प्यार करते हैं जो दयालु और क्षमाशील प्रकृति के धनी हैं। गलती किसी से भी हो सकती है। गलती होना प्रकृति है। गलती करने वाले पर चिल्लाना विकृति है। उसे सुधरने की सीख देते हुए क्षमा कर देना संस्कृति है। हम गुस्से

> "उवसमेण हणे कोहं"
> क्षमा से क्रोध का हनन करें।

को थूक कर क्षमा करेंगे तो प्रभु की कृपा बरसेगी और उससे दिल को शांति मिलेगी।

क्षमा धर्म से बढ़कर जग में,
उत्तम कोई धर्म नहीं है।
क्षमा बिना शुभ कर्म करो सब,
तो भी वह शुभ कर्म नहीं है।।

> "क्रोध दिवाला है और क्षमा दिवाली है।"

क्षमा का सर्वोत्तम उदाहरण धरती माता है। धरती माता का दूसरा नाम है क्षमा। धरती पर लोग कूड़ा-कचरा डालते हैं, हल, फावड़ा, ट्रैक्टर आदि से उसको काटते हैं, परन्तु धरती सब सहन करती हैं। सहन ही नहीं करती बल्कि उपकार स्वरूप नाना प्रकार के अन्न, फल, वनस्पति, सोना-चाँदी, हीरे-जवाहरात आदि देकर हमें सम्पन्न बनाती है। इसलिए पृथ्वी को क्षमाशीला नाम से भी विभूषित किया गया है। क्षमा सर्वोत्तम परम तप है।

क्रोड वर्ष तक तप तपे,
एक सहे जो गाल।
यामें नफो है घणो,
मेटे मन की झाल।।

> "गलती होना प्रकृति है। गलती करने वाले पर चिल्लाना विकृति है। उसे सुधरने की सीख देते हुए क्षमा कर देना संस्कृति है।"

एक साधु पंचाग्नि आदि घोर तप करता है और एक सामान्य गृहस्थ अपशब्द, गाली आदि समभाव से सहन कर लेता है तो वह गृहस्थ उस तपस्वी साधु से श्रेष्ठ है।

एक बार एक तत्त्व गोष्ठी में प्रश्न उपस्थित हुआ कि सबसे बड़ा साधु कौन? अनेक उत्तर प्राप्त हुए। किसी ने कहा कि जो आचार्य पद पर हो, किसी ने कहा जिसके सर्वाधिक शिष्य हो, किसी ने कहा जो सबसे उत्तम वक्ता हो तो किसी ने कहा जो सबसे अधिक त्यागी-तपस्वी हो। अन्त में एक विशिष्ट तत्त्ववेत्ता ने उत्तर दिया कि सबसे बड़ा वह है जो दस घूँट कटु वचनों को पीकर भी बदले में बीस घूँट अमृत के (सारभूत तत्त्व) पिला देवे। ऐसा क्षमाशील महापुरुष ही कर सकता है।

> "Who has not forgiven an enemy has yet not tasted one of the best enjoyment of the life."

क्रोधी कुढ़-कुढ़कर मरे,
जैसे अग्नि झाल।
क्षमावंत सुखिया रहे,
पीवे अमृत घाल।।

क्षमा परम सुख का स्रोत है। प्रभु महावीर से पूछा गया- क्षमा का फल क्या है? प्रभु ने फरमाया- "**खमावणयाए णं पल्हायणं भावं जणयइ**" अर्थात् क्षमा से जीव को प्रसन्नता (विशिष्ट सुख) की अनुभूति होती है। पाश्चात्य संस्कृति वालों ने भी क्षमा को जीवन का सर्वोत्तम सुख बताया है। कहा है- Who has not forgiven an enemy has yet not tasted one of the best enjoyment of the life अर्थात् जिसने एक भी शत्रु को क्षमा नहीं किया, उसने जीवन का सर्वोत्तम आनंद (सुख) अनुभव नहीं किया।

क्षमा वीरस्य भूषणम् :

क्षमा को दुर्बलता या कायरता का प्रतीक कहना भ्रम है। जो क्षमा के सही स्वरूप को नहीं समझते वे प्राय: ऐसा कह देते हैं। आत्मविश्वास के लिए कषाय रूपी विकारों से की गई अनुचित प्रवृत्तियों के लिए अन्तरमन को निर्मल करने हेतु अन्त:करण से क्षमायाचना करना भला कायरता या भीरूता कैसे हो सकती है? महात्मा गाँधी कहा करते थे कि दुर्बल की क्षमा या अहिंसा तो कायरता हो सकती है, किन्तु सबल एवं निर्भय व्यक्ति की क्षमा या अहिंसा उसका भूषण है। दुर्बल भी यदि क्षमा को सही रूप में अपनाता है तो वह भी उसका गुण है। क्षमा वशीकरण मंत्र है। वीरों की क्षमा किस प्रकार शोभा

देती है इस विषय में कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' की ये पंक्तियाँ मननीय हैं–

क्षमा शोभती उस भुजंग को, जिसके पास गरल हो।
उसको क्या जो दंतहीन, विषहीन, कायर और सरल हो।।

जो मनुष्य दूसरों को क्षमा नहीं कर सकता वह अपने को भी क्षमा नहीं कर सकता। तन पानी से साफ होता है और मन पश्चात्ताप के आँसुओं से निर्मल होता है। क्षमा में सभी दैवीय और मानवीय गुण समाहित होते हैं। किसी कवि ने कहा है–

क्षमा शांति का हृदय द्वार है, क्षमा शक्ति का सुमन हार है।
क्षमा दिव्य ऐश्वर्य सृष्टि का, क्षमा मनुज का उपहार है।।
क्षमा हृदय की दिव्य ज्योति है, क्षमा सृष्टि का मोती है।
इसको पा कुछ शेष न पाना, वसुधा दिव्य चमकती है।।

यह सत्य है कि मानव कभी उतना सुन्दर नहीं लगता जितना उस समय लगता है जब वह किसी से क्षमा मांग रहा हो या क्षमा प्रदान कर रहा हो।

क्षमा धर्म का प्राण है, आराधना है विवेक

-प्रतिभा तिलकराज सहलोत, निम्बाहेड़ा

भक्ति रस

मन की ग्रन्थियाँ खुले, वैर विरोध मिट जाएँ।
स्नेह प्रेम के सुमनों से, अन्तरघट सज जाएँ।।

क्रोध, मान का परिशोधन कर, मन का बोझ घटाएँ।
जिनसे हृदय आहत होता, वे सभी बातें भूल जाएँ।।

जो मिला भाग्य से, उसे सन्तोष से अपनाएँ।
राग-द्वेष को अल्प कर, मैत्री भाव सरसाएँ।।

तुच्छ बातों में उलझ कर, दूरियाँ ना बढ़ाएँ।
विशाल हृदय के स्वामी बन, क्षमादान कर पाएँ।।

बिखर जाए अहम्, चित्त सरल स्वच्छ बन जाए।
आत्म उन्नति हित, कषाय रहित निःशल्य बन जाएँ।।

मृगावती, चंदनबाला के जीवन का, अनुशीलन कर पाएँ।
क्षमा देकर क्षमा माँगकर, समभावों में रम जाएँ।।

रहे नियंत्रित योग हमारे, कल्मषता धुल जाए।
स्वदोषों को देख, आत्म-आलोचना कर पाएँ।।

अपनी-अपनी भूल सुधारें, सच्चे मन से खमे खमाएँ।
हाथ जोड़ मिच्छामि दुक्कडं, सब जीवों से कर पाएँ।।

जिनवाणी श्रवण से, अज्ञान अंधेरा मिट जाए।
'प्रतिभा' प्रशस्त भावों से, विवेक जगा क्षमा अपनाएँ।।

श्रवण विवेक

-सजग, नीमच

प्रवचन श्रवण का सुअवसर,
धर्म पथ पर हो अग्रसर।

श्रवण शब्द का सामान्य अर्थ है सुनना तथा विवेक का अर्थ है समझदारी। जब हम समझदारी के साथ कोई बात या जानकारी सुनते हैं तो वह हमारे लिए उपयोगी, लाभप्रद तथा हमारी उन्नति में सहायक हो सकती है। इस लेख के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया गया है कि हमें अपने जीवन में श्रवण विवेक का पालन करने के लिए किन मुख्य बातों का ध्यान रखना अवश्यक है।

जैन धर्म में साधु-साध्वियों द्वारा धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए धार्मिक प्रवचन (उपदेश) या धर्मदेशना की परंपरा रही है। जिसमें धर्म की सैद्धांतिक बातों को सरल तथा समझने योग्य भाषा में समझाने का प्रयास किया जाता है। जिसको सुनने से पाप कर्मों की निर्जरा के साथ व्यावहारिक जीवन में भी लाभ प्राप्त होता है।

दृष्टांत 1 – एक बार एक शिष्य अपने गुरु के पास पहुँचा और कहने लगा- ''गुरुजी! मैं आपसे एक व्यक्ति के बारे में एक बात कहना चाहता हूँ।''

यह सुनकर गुरु ने शिष्य से कहा- ''तुम्हारी बात सुनने से पूर्व मैं तुमसे कुछ प्रश्न करूँगा, उसके बाद ही तुम्हारी बात सुनूँगा।''

ऐसा कहकर गुरु ने शिष्य से प्रथम प्रश्न पूछा- ''तुम मुझे जो बात बताना चाहते हो क्या वह बात सत्य है?''

शिष्य- ''सत्य या असत्य मैं नहीं बता सकता, लेकिन मैंने ऐसा किसी से सुना है।''

गुरु ने दूसरा प्रश्न पूछा- ''क्या यह बात उस व्यक्ति विशेष के गुण के संबंध में है?''

शिष्य- ''गुण के संबंध में नहीं है अपितु उस व्यक्ति के अवगुणों के संबंध में है।''

गुरु जी तृतीय प्रश्न पूछते हैं- ''क्या यह जानकारी मेरे लिए उपयोगी है?''

शिष्य- ''नहीं, यह जानकारी आपके लिए उपयोगी तो नहीं है।''

उपरोक्त वार्तालाप के पश्चात् गुरु अपने शिष्य से कहते हैं कि ''जो बात सत्य नहीं है, जो बात किसी के गुण के संबंध में नहीं है और जो बात मेरे लिए उपयोगी नहीं है इस प्रकार की बात सुनकर मुझे कोई लाभ प्राप्त नहीं होगा, इसलिए तुम मुझे यह बात मत बताओ।''

दृष्टांत 2 – एक बार एक कुएँ में दो मेंढ़क गिर गए। उन्होंने बाहर निकलने के लिए कुएँ की दीवार पर चढ़ना शुरू किया। चढ़ते हुए वे थोड़ी ऊँचाई पर पहुँचे और नीचे गिर गए। उन्होंने पुन: प्रयास किया और इस बार भी थोड़ी ऊँचाई तक पहुँचे और फिर गिर गए। तीसरे प्रयास में वे दोनों कुएं की कुल गहराई के आधे भाग तक पहुँच गए, लेकिन तभी अचानक उनका संतुलन बिगडा और वे पुन: नीचे गिर पड़े।

यह देखकर कुएँ के बाहर खड़े उनके साथी चिल्लाने लगे- ''अरे तुम लोग व्यर्थ ही प्रयास कर रहे

हो। तुम इस कुएँ से बाहर नहीं निकल सकते। अब तो तुम्हें आजीवन इस कुएँ के अंदर ही रहना पड़ेगा।'' उनकी चिल्लाने की आवाज सुनकर एक मेंढ़क ने तो ऊपर चढ़ने का प्रयास छोड़ दिया किंतु दूसरा मेंढ़क प्रयास करता रहा। ऊपर चढ़ने का प्रयास करते हुए वह कई बार नीचे गिर पड़ा। उसको इस प्रकार बार-बार असफल होते हुए देखकर ऊपर खड़े मेंढ़क और जोर से चिल्लाने लगे- ''अरे मूर्ख! तुम बार-बार असफल होने के बाद भी ऊपर आने का प्रयास क्यों कर रहे हो? यह तुम्हारी नियति है कि तुम्हें आजीवन इस कुएँ के भीतर ही रहना पड़ेगा।'' लेकिन वह मेढ़क बार-बार ऊपर चढ़ने का प्रयास ही करता रहा और प्रयास करते-करते वह अंततः कुएँ से बाहर निकलने में सफल हो गया।

उसे बाहर आया देखकर सभी मेंढ़क अचम्भित हो गए कि आखिर यह मेंढ़क बाहर कैसे आ गया? उनमें से एक मेढ़क ने पूछ ही लिया कि तुम इतने गहरे कुएँ से बाहर कैसे निकल आए और तुम्हें हमारी आवाज सुनाई नहीं दी क्या?

यह सुनकर उस मेंढ़क ने उत्तर दिया कि ''मेरा लक्ष्य तो कुएँ से बाहर निकलना था इसलिए मैंने तुम लोगों की बात को अनसुना करके अपना पूरा ध्यान केवल कुएँ से बाहर निकलने में लगा दिया। इसलिए मैं कुएँ से बाहर निकलने में सफल हो सका।''

उपरोक्त दोनों उदाहरणों से स्पष्ट हो जाता है कि हमें जीवन में अपने लक्ष्यों की प्राप्ति तथा उन्नति के लिए निम्न बातों को ध्यान में रखना चाहिए-

1. **धार्मिक प्रवचन श्रवण करें।**
2. **ज्ञानवर्धक जानकारी सुनें।**
3. **दूसरों की निंदा करने वाली बातें ना सुनें।**
4. **सकारात्मक तथा उपयोगी बातें ही सुनें।**
5. **नकारात्मक बातें ना सुनें तथा उन पर ध्यान न दें।**

मनोविज्ञान के अनुसार भी हम दिनभर में जितनी बातें सुनते हैं उनमें से अधिकांश बातें हमारे लिए अनुपयोगी होती हैं। जिन पर ध्यान देकर हम अपना समय और ऊर्जा व्यर्थ कर देते हैं। इसके साथ ही व्यर्थ की बातों में उलझने से हमें अपने जीवन के लक्ष्यों को प्राप्त करने में कठिनाई होती है।

हमें केवल उन बातों को ही ध्यान से सुनना चाहिए जिन बातों से हमारी धार्मिक उन्नति तथा ज्ञानवृद्धि हो सकें। अभी चातुर्मास काल चल रहा है तो साधु-साध्वियों के प्रवचन श्रवण का सुअवसर है। प्रवचन सुनकर आप अपने पाप-कर्मों की निर्जरा की दिशा में आगे बढ़ेंगे।

रचनाएँ आमंत्रित

500-1000 शब्द सीमा

आप संघ के मुखपत्र के नियमित पाठक हैं यह हमारे लिए हर्ष का विषय है। श्रमणोपासक के धार्मिक अंक विभिन्न विषयों पर आधारित होते हैं। आगामी **15-16 सितंबर 2023** का धार्मिक अंक **'संघ-सेवा विवेक'** पर आधारित रहेगा।

इसी क्रम में **15-16 अक्टूबर 2023** का धार्मिक अंक **'धर्म स्थान संबंधी विवेक'** विषय पर आधारित रहेगा। सम्माननीय पाठकगण अपनी रचनाएँ शीघ्रातिशीघ्र भिजवाने का लक्ष्य रखें। यदि आपके पास श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ द्वारा साधुमार्गी परिवारों को जारी M.I.D. (ग्लोबल कार्ड) नं. हो तो उसका उल्लेख अवश्य ही करें। प्राप्त मौलिक एवं सारगर्भित रचनाओं को समाहित करने का लक्ष्य रहेगा। विषय सन्दर्भित आपकी रचनाएँ- लेख, कविता, भजन, कहानी आदि **मो.: 9314055390, email : news@sadhumargi.com** पर हिन्दी व अंग्रेजी में सादर आमंत्रित हैं। उल्लेखित विषयों के अलावा भी आपकी सारगर्भित रचनाएँ भी आमंत्रित हैं।

– श्रमणोपासक टीम

क्षमा : अवसाद से दूर होने का मार्ग

-रोमिका नवलखा, सूरत

जैन धर्म में क्षमा को बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। क्षमा से संसार को जीता एवं पार किया जा सकता है। क्षमा उत्तम धर्म है। क्षमा का सहारा लेकर लाखों-करोड़ों लोगों ने मोक्ष एवं आत्मिक शान्ति प्राप्त की है। इसी को एक लड़की की कहानी से समझने का प्रयास करते हैं।

एक लड़की के पाप कर्मों के उदय से जीवन में कठिनाइयों का दौर चल रहा था। कॅरियर निर्माण के चरम स्तर पर उसका एक्सीडेंट हो गया और उसे अपनी नौकरी गंवाकर पूरा महीना बेड रेस्ट पर रहना पड़ा। बेड रेस्ट पर रहने से उसे खाना पचना कम हो गया और उल्टियाँ ज्यादा होने लगी। उसके माता-पिता घबरा उठे। उस लड़की को उससे मिलने आने वालों की बातें तीक्ष्ण बाणों-सी लगतीं। उसके दोस्तों से भी उसका जुड़ाव कम रहने लगा। अकेलेपन के कारण उसे सारी दुनिया भयानक और डरावनी लगने लगी। कुछ समय पश्चात् वह ठीक तो हो गई किंतु कॅरियर में आई रुकावट के कारण पुन: नौकरी नहीं मिलने से उसका गुस्सा और बढ़ गया। कुछ समय पश्चात् माता-पिता ने उसकी शादी करवा दी। चिन्ता और शोक ने इतना सता लिया कि अपच व उल्टी की समस्या के साथ-साथ सिरदर्द, मतिभ्रम एवं स्ट्रेस की समस्या भी रहने लगी और डिप्रेशन, एंग्जाइटी एवं निराशावाद ने उसे घेर लिया। उसका शरीर तो मानो सूखे पत्ते जैसा हो गया। वह जितना सोचती उतनी ही बेचैनी बढ़ती। उसका ध्यान पूरा खत्म हो गया। एक भी काम न तो अच्छे से हो पाता और न ही उसे किसी काम में संतुष्टि मिलती। तनाव इतना बढ़ गया कि एक-दो बार तो वह अपनी बच्ची को स्कूल से लाना ही भूल गई। गलतियाँ होती रही और तनाव, चिड़चिड़ाहट बढ़ती गई। उसे अपनी जिन्दगी मानो एक काले बादल जैसी लगने लगी। दिन-ब-दिन उसकी उदासी व क्रोध बढ़ता गया।

संयोगवश कुछ समय पश्चात् उसकी पड़ोसन ने एक दिन सुबह उसे प्रवचन हॉल में आने का अनुग्रह किया। वह जानती थी कि पड़ोसन प्रतिदिन सुबह 9 बजे किधर जाती है, पर आज उसे पता चला कि वह अपने धर्म के मुनियों का व्याख्यान सुनने जाती है। वह यह सोचकर मान गई कि घर पर अकेला दु:खी होने से तो अच्छा ही है कि प्रवचन रूपी अमृतवाणी कानों में पड़ेगी। वह प्रवचन स्थल पर एक स्थान पर बैठ गई। उसकी पड़ोसन ने उसे मुँहपत्ती दे दी। प्रवचन शुरू हुआ और वह लड़की पूरे ध्यान एवं मनोयोग के साथ महाराज साहब के श्रीमुख से प्रवचन सुनने लगी। उस दिन प्रवचन का विषय **'क्षमा और संतोषमय धर्म'** था। मुनिश्री ने फरमाया कि ''इंसान आज के दौर में बहुत भागता है, बहुत सहता है, बहुत पुरुषार्थ करता है, फिर भी मानसिक तनाव और कषायों के अधीन हो जाता है। जो इंसान मन में, अपने हृदय में भूतकाल की दर्दनाक बातें गाँठ बाँध कर रखता है और वर्तमान में जीना भूल जाता है, वह भला सुखी कैसे हो सकता है?

सुखी होने के लिए सबसे पहले क्रोध और

आरोप-प्रत्यारोप को त्यागना होगा। समझना होगा कि अतीत को बदला नहीं जा सकता, लेकिन वर्तमान को जरूर सुधारा जा सकता है और जो भी हमारे साथ हो रहा है वह हमारे की कर्मों का उदय है। क्रोध को समाप्त करने के लिए सर्वोत्कृष्ट साधन है क्षमा। क्षमा एक ऐसा हथियार है जिससे अनंत कर्मों के बंधनों एवं द्वेष की भावना पर विजय प्राप्त की जा सकती है। जीवन में शान्ति और संतुष्टि की लहर क्षमा से ही आती है। इसलिए जीवन के हर कदम पर क्षमा धारण करनी चाहिए। स्वयं क्षमा मांगने और दूसरों को क्षमा दान देने से इंसान स्वयं को हल्का महसूस करता है।

यहाँ एक बात महत्त्वपूर्ण है। इंसान दूसरों को, उनकी गलतियों को तो क्षमा कर देता है और समय के साथ सामान्य हो जाता है, किन्तु उसे खुद को माफ करने में कठिनाई होती है। वह खुद पर आक्रोश करता है, चिढ़ता है, अर्थात् सोचता है कि मेरे साथ ही ऐसा क्यों हुआ? मैंने कभी किसी का बुरा नहीं किया, मैं बहुत दुर्भाग्यशाली हूँ, इत्यादि जिससे उसका आत्म-सम्मान खत्म हो जाता है। सबसे ज्यादा जरूरी है खुद को उतना ही आत्म-सम्मान देना जितना वह अपने प्रिय मित्रों को देता है।''

प्रवचन की एक-एक बात उसके हृदय पर सटीक लगती गई और उसका मन प्रफुल्लित हो गया। दिमाग में हलचल होने लगी और वह स्वयं को तरोताजा महसूस कर रही थी। उसे आज वह सीख/शिक्षा मिल गई थी जो उसे अतीत रूपी गहरे सागर से बाहर निकालने में सहायक सिद्ध हुई। अब उसकी टेंशन, चिड़चिड़ापन आदि कम होने लगे और उसने मन ही मन संकल्प कर लिया कि खुद के साथ दूसरों को भी क्षमादान देकर स्वयं भी सभी से क्षमायाचना कर जीवन को समता का सागर बना लेगी और यह दुर्लभ मानव जीवन इस तरह अतीत के बारे में सोचकर बर्बाद नहीं करेगी।

एक प्रवचन ने उस लड़की को सही मार्ग दिखा दिया, उसका नजरिया बदल दिया। अत: हमें भी प्रतिदिन प्रवचन श्रवण करना चाहिए। क्या पता कब हमें भी वह जीवन परिवर्तनकारी अपूर्व अवसर मिल जाए!

भक्ति रस

क्षमा से होता बेड़ा पार

-लता बोथरा, बेल्लारी

प्राचीन से ही क्षमा वीरों का बना है भूषण,
सुना, सुना, सुना, बहुत सुना।
पर जब वास्तविकता में मौका मिला,
तब जीव वाला अजीव पाषाण मैं बना।।
क्षमा के दो अक्षर, क्ष से अभिमान का क्षय कर,
मा कहता मान का विनाश कर।
कहना और करना दोनों काम है अलग,
जो कर गया वो बन गया धीर, वीर, गंभीर।।
क्षमा कोई वरदान नहीं, माँगी और मिल गई,
क्षमा तो है भावना, डूबो तो मुक्ति मिल गई।
मिच्छामि दुक्कडं बोला अनंत बार, पर माँगी नहीं मन से एक बार,
यदि अल्फाज सच्चा होता तो, इस जीव का होता बेड़ा पार।।
क्षमा कहते हम सहोदर, सहचर, सहवासी व सभी से,
पर कह नहीं पाते अरि, रिपु, अमित्र, अरनि से।
बड़ा बनना है आसान द्रव्य से, किंतु है कठिन भाव में क्षमा रखना,
जब क्षमा का प्रसंग आता, तब विवेक भूल जाते ख्याल से।।

जिज्ञासा-समाधान
(पंचम-समिति विषयक)

प्रश्न मात्रक में मल-मूत्र विसर्जन करने के पश्चात् उसे एक मुहूर्त्त यानी अड़तालीस मिनिट के भीतर ही बाहर ले जाकर परठना अनिवार्य है, ऐसा किस शास्त्र में विधान है? किस शास्त्र में ऐसा कहा है कि एक मुहूर्त्त के बाद बाहर परठने पर मुनि प्रायश्चित्त का भागी होगा?

उत्तर किसी भी शास्त्र में ऐसा कोई विधान नहीं है कि मुनि द्वारा मात्रक में मल-मूत्र का विसर्जन किया गया हो तो एक मुहूर्त्त के भीतर ही उसे बाहर जाकर परिष्ठापन करना होगा। एक मुहूर्त्त के बाद बाहर जाकर परिष्ठापन करने पर भी शास्त्रों में किसी प्रकार का प्रायश्चित्त नहीं बताया गया है।

प्रश्न तो फिर उच्चार-पासवण युक्त पात्र को परठने संबंधी शास्त्रीय नियम क्या है?

उत्तर दिन के समय मात्रक में उच्चार-पासवण का विसर्जन करना पड़े तो उसे बाहर ले जाकर परठने की कोई भी काल मर्यादा किसी भी आगम में नहीं बताई है किन्तु रात्रि में उच्चार-पासवण मात्रक में विसर्जित करना पड़े तो श्री निशीथ सूत्र के तीसरे उद्देशक में स्पष्ट निर्देश किया है कि उसे सूर्योदय के पूर्व परठे तो मुनि को संयम में दोष लगेगा जिसके शुद्धिकरण हेतु उसे प्रायश्चित्त करना होगा। तात्पर्य यह है कि रात्रि में मात्रक में उच्चार-पासवण का विसर्जन किया हो तो उसे सूर्योदय के पश्चात् परठना ही शास्त्रीय विधि है।

प्रश्न शास्त्र के मूलपाठ में ऐसा न भी बताया हो किन्तु शास्त्रों की प्राचीन व्याख्याओं में तो ऐसा वर्णन किया होगा कि मात्रक में उच्चार-पासवण के विसर्जन के बाद एक मुहूर्त्त के भीतर-भीतर ही उसको बाहर ले जाकर परठ दिया जाए?

उत्तर वर्तमान में आगमों पर निर्युक्ति, चूर्णि, भाष्य, वृत्ति आदि विपुल प्राचीन व्याख्या साहित्य उपलब्ध है। इनमें कहीं भी ऐसा कोई उल्लेख नहीं है कि मात्रक में विसर्जित उच्चार-पासवण को एक मुहूर्त्त के भीतर ही बाहर परठना अनिवार्य है। एक मुहूर्त्त के भीतर न परठने पर कहीं भी प्रायश्चित्त नहीं बताया है।बल्कि इसके विपरीत श्री निशीथ सूत्र के भाष्य, चूर्णि इत्यादि में आगम के आशय को स्पष्ट करते हुए बहुत साफ शब्दों में बताया है कि रात्रि में मात्रक में विसर्जित उच्चार-पासवण को सूर्योदय के पूर्व बाहर ले जाकर परठना निषिद्ध है एवं ऐसा करने वाले मुनि को अपने इस दोष की शुद्धि के लिए प्रायश्चित्त करना आवश्यक है।

प्रश्न तो क्या मात्रक में रहे उच्चार-पासवण को रात्रि में बाहर जाकर परठना सर्वथा निषिद्ध है?

उत्तर ऐसी बात नहीं है। व्याख्याकार फरमाते हैं कि दिन में गृहस्थों का आवागमन बढ़ जाने से परठने योग्य अनुकूल स्थान न मिलता हो, इत्यादि कारणों से रात्रि में भी मात्रक में रहे उच्चार-पासवण को बाहर जाकर परठा जा सकता है, किन्तु यह विशेष परिस्थितियों में ही किया जाना चाहिए। सामान्यत: सूर्योदय के पश्चात् बाहर ले जाकर परठना ही शास्त्र का विधान है।

जहाँ परिस्थितिवश रात्रि में ही मात्रक को बाहर ले जाकर परठने की अनुमति दी है, वहाँ भी यह नहीं लिखा गया है कि विसर्जन के एक मुहूर्त्त के भीतर ही बाहर जाकर परठा जाए। अत: आगम व व्याख्या ग्रन्थ एक स्वर से इस तथ्य का समर्थन करते हैं कि मात्रक में उच्चार-पासवण विसर्जन करने के एक मुहूर्त्त के भीतर ही बाहर ले जाकर परठना अनिवार्य नहीं है।

साभार- जैन सिद्धांत मंजूषा श्रमणोपासक

क्षमा वीरस्य भूषणम्

-संध्या धाड़ीवाल, रायपुर

सॉरी, माफी, खमत खामणा, मिच्छा मि दुक्कडं,
क्या इन शब्दों में सिमट गई है आज क्षमा की परिभाषा?
कहाँ गई वह क्षमा? जो कभी थी सभ्य लोगों की भाषा,
इतना सस्ता, इतना हल्का, न समझना क्षमा को दोस्तों!
संवत्सरी को क्षमापर्व क्यों कहा संध्या? जरा सोचो तो!

श्रमण महानों के दस गुणों में, पहला गुण 'खंति' कहा आगमकारों ने,
खंति का अर्थ क्षमा और क्षमा का अर्थ समता कहा वाचनाचार्यों ने।
क्षमता का मतलब आपकी अपनी सामर्थ्य, समझाया गुरु-भगवंतों ने,
कहा बहुश्रुत जी ने, अपने भीतर छिपी क्षमता, संभावनाओं को जानो,
आज छोटा-सा बीज हूँ, कल बरगद बन सकता हूँ मानो।।

निराशाओं को तनिक न स्थान दो मन में,
मैं अनंत शक्तिसम्पन्न हूँ, ऐसा विश्वास जगाओ जीवन में।
दृढ़ संकल्प ही है जो, कड़ाके की सर्दी में भी पसीना ले आता है,
अनुकूल, प्रतिकूल परिस्थितियों में, समभाव से रहना सिखलाता है।।

इस पंचमकाल में प्रतिकूलताओं द्वारा, पग-पग पर हमारा स्वागत होता है,
डर जाता है, घबरा जाता है, असहिष्णु दुर्भाग्य को कोसता है,
सच्चा साधक कभी नहीं घबराता, सहनशीलता अपनी बढ़ाता है।
निमित्त को दोष नहीं देता, नित नई ऊँचाइयाँ पाता है।।

'क्षमा' का विलोम 'क्रोध' है, जो मन को खिन्नता से भर देता,
मन की गहरी पर्तों में, भय व अशांति का जहर उड़ेल देता।
महावीर कहते हैं हे गौतम! मन की क्षमता को पहचानो,
अनुकूलता, प्रतिकूलता दोनों को ही अपना मित्र मानो।।

खंति का व्यावहारिक अर्थ, अक्रोध प्रभु ने बतलाया,
सहनशीलता, माफ करना, माफी मांगना भी क्षमा का रूप है समझाया।
न ही कोई व्यक्ति, न ही घटना, न दुःख का कारण वातावरण है,
मेरे भीतर उठने वाला क्रोध ही, मेरे दुःख का एकमात्र कारण है।
क्षमा, क्षमता, सहनशीलता, तीनों ही दुःख निवारण है,
कायर नहीं कर सकता क्षमा, क्षमा तो वीरों का आचरण है।

हम साधनाशील साधक हैं, कष्टों से रूबरू होना सीखें,
कठिन परीषहों को सहने में, हम न रह जाएँ कहीं पीछे।
व्यंगबाण चाहे हृदय को भेदे, चाहे गालियों की हो बौछार,
'क्षमा विवेक' का कवच पहनूँ मैं, बहे आनंद के झरने हजार।।

किसी ने कहा भी है-
कष्ट जी भर के सहना खुशी से यहीं, प्रेम मदिरा की कोई जरूरत नहीं।
पीना अपमान के घूँट जमकर यहीं, प्यार, नफरत के बदले बढ़ाना सदा।
महावीर के शासन का गौरव बढ़ाना सदा, क्षमा मांगना और सहनशील बनना सदा।
राम शासन का गौरव बढ़ाना सदा।।

भक्ति रस

अंतगड सूत्र : एक अमूल्य कृति

-बी. शांतिलाल पोखरना, विजयनगरम्

धन्य-धन्य है दिवस आज का, पर्व पर्युषण की हो जयकार।
अंतगड सूत्र पढ़-सुन, हर जीवन का हो उद्धार।।

कितना खूँखार था अर्जुनमाली, किया खूब नरसंहार,
सेठ सुदर्शन का सान्निध्य पा, मिला भगवान का आधार,
कर्मों का नाश कर, तप-साधना से किया भवसागर पार।। धन्य-धन्य है....

पा आशीर्वाद माँ का, बढ़े साधना पथ पर लिया क्षमा-धार,
धधक रहे सिर पर अंगारे, कष्टों से न मानी हार,
जगी आत्मा भीतर की, सिद्ध-बुद्ध-मुक्त हुए गजसुकुमाल।। धन्य-धन्य है....

न होती उम्र वैराग्य की, सिद्ध किया ज्ञान धर्म का सार,
खेल-खेल में चलाई नाव पात्र की, थे चरमशरीरी अणगार,
चढ़ धर्म की नाव, किया भवसागर पार जय एवन्ता अणगार।। धन्य-धन्य है....

न थी कमी धन वैभव की, ठाठ था अति अपरंपार,
जीवन के अंतिम समय, प्रभु-वाणी सुन सबने लिया संयम धार,
मोक्षगामी उन भव्य (नब्बे) आत्माओं को करे वंदन बारम्बार।। धन्य-धन्य है....

नीमच चातुर्मास समाचार

संयम में है शुद्धाचार, राम गुरु की जय-जयकार।
नीमच में छाई तपस्या की बहार, जन-जन में खुशियाँ अपार।।

धर्म हमारे जीवन का प्राण बने – आचार्य श्री रामेश
जो दृश्य में उलझ जाता है वह अदृश्य तक नहीं पहुँच पाता – उपाध्याय प्रवर

युग निर्माता आचार्य श्री रामेश एवं बहुश्रुत वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. के साधना महोत्सव चातुर्मास में धर्माराधना एवं तपस्या की धूम

श्री गगन मुनि जी म.सा., साध्वी श्री सुभग श्री जी म.सा., साध्वी श्री खंतिप्रिया श्री जी म.सा., साध्वी श्री जयति श्री जी म.सा. एवं साध्वी श्री चंदना श्री जी म.सा. के मासखमण तप पूर्ण

अन्य अनेक जनों के विभिन्न तपस्याएँ जारी

जैन स्थानक, राठौर परिसर, नीमच (म.प्र.)।

वर्तमान के वर्धमान हो, जिन मार्ग में गतिमान हो।
भक्तों के भगवान हो, हुक्मसंघ के प्राण हो।।

देश-विदेश में जिनकी कठोर संयम साधना की गूँज है, ऐसे साधना के शिखर पुरुष, युग निर्माता, उत्क्रान्ति प्रदाता, जन-जन के भाग्य विधाता, नानेश पट्टधर आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा., बहुश्रुत वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-8 एवं शासन दीपिका साध्वी श्री जय श्री जी म.सा. आदि ठाणा-45 के साधना महोत्सव चातुर्मास में धर्मप्रेमी जनता उनके आध्यात्मिक आलोक से निरन्तर आलोकित हो रही है। धर्म की पावन गंगा निरन्तर प्रवाहित हो रही है। महापुरुषों के पावन दर्शन एवं अमृतवाणी से आध्यात्मिक ऊर्जा प्राप्त कर भक्तों का जीवन धन्य हो रहा है। उभय गुरु-भगवंतों की कृपा से श्री गगन मुनि जी म.सा., साध्वी श्री

चंदना श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुभग श्री जी म.सा., साध्वी श्री खंतिप्रिया श्री जी म.सा., साध्वी श्री जयति श्री जी म.सा. ने अपूर्व आत्मबल का परिचय देते हुए मासखमण की दीर्घ तपस्या सानन्द पूर्ण की। साध्वी श्री मल्लिका श्री जी म.सा., साध्वी श्री कर्णिका श्री जी म.सा. मासखमण तप की ओर अग्रसर हैं। अन्य कई चारित्रात्माओं एवं श्रावक-श्राविकाओं के दीर्घ तपस्याएँ निरन्तर गतिमान हैं। तेले की लड़ी के साथ उपवास, एकासन, आयम्बिल की लड़ियाँ भी निरन्तर जारी हैं। विभिन्न आध्यात्मिक एवं तत्त्वज्ञान शिविरों के माध्यम से धर्म के मर्म को समझने का प्रयास धर्मप्रेमी जनता कर रही है। **'लोच में क्या सोच'** कार्यक्रम के तहत अभी तक 120 से ऊपर लोच सम्पन्न हो चुके हैं। देश-विदेश से श्रद्धालु भक्तों एवं दर्शनार्थियों का ताँता नीमच शहर में लगा हुआ है। सामायिक, प्रतिक्रमण, जैन सिद्धान्त बत्तीसी आदि सीखने की होड़ लगी हुई है। प्रत्येक रविवार को बच्चों के शिविर में नैतिक एवं आध्यात्मिक संस्कार चारित्रात्माओं द्वारा प्रदान किए जा रहे हैं।

साधना, उपासना, आराधना

16 जुलाई 2023। प्रात: रविवारीय समता शाखा में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने समता आराधना कर गुरुदेव द्वारा प्रदत्त आयाम को सार्थक बनाया। तत्पश्चात् तरुण तपस्वी आचार्य भगवन् ने मंगलपाठ प्रदान कर भक्तों पर अनुपम कृपा बरसाई। श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने सामायिक, प्रतिक्रमण, जैन सिद्धान्त बत्तीसी की कक्षा में विशेष मार्गदर्शन प्रदान किया। समीक्षण ध्यान योग प्राणायाम शिविर के त्रिदिवसीय कार्यक्रम में डॉ. सत्यनारायण शर्मा ने समीक्षण ध्यान एवं योग का गहन अभ्यास करवाया।

विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए विश्ववंदनीय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''धर्म करने की तीन अवस्थाएँ हैं- 1. साधना, 2. उपासना और 3. आराधना। साधना दीर्घकालिक होती है। लम्बे समय तक चलते हुए मन शिथिल हो जाता है। मन की उस शिथिलता को दूर करने के लिए उपासना को स्वीकार किया जाता है। थोड़े समय के लिए आत्मा से परमात्मा का सम्बन्ध जोड़ना उपासना है। उपासना, साधना को गति देने वाली होती है। आराधना परीक्षा है, जिसमें उत्तीर्ण होना या अंक प्राप्त होना ही आराधना है। आराधना पूर्णत: हासिल कर ली तो 15 भव में मोक्ष हो जाएगा। सुनना एक साधना है। उस पर विचार करना उपासना है और इसे जीवन में उतारना आराधना है। आज श्री गगन मुनि जी म.सा. के मासखमण तप और श्रीमती सरोज जी आशीष जी कांठेड़ मासखमण के रथ पर आरूढ़ हो रहे हैं। संकल्प शक्ति की दृढ़ता के कारण ही सफलता मिलती है। धर्म हमारे जीवन का आधार बने।''**

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि अच्छे लोगों की संगति करनी चाहिए। बुरे लोगों की संगति नहीं करें। आचार्य भगवन् की आज्ञा की आराधना करें एवं उनके आयामों को जन-जन तक पहुँचाएँ।

श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि अनुकूलता पतन की ओर ले जाती है और प्रतिकूलता जीवन में जागृति लाती है। अनुकूलता दु:ख है, प्रतिकूलता सुख है। गरम-गरम खाना दु:ख है, लेकिन समभावपूर्वक जो मिले वो खाना सुख है। श्री गगन मुनि जी म.सा. ने मासखमण करके अपने आत्मबल का परिचय दिया है।

साध्वी श्री सुहर्षा श्री जी म.सा. ने फरमाया कि गुरुचरणों में आराधना करने का अवसर हमें प्राप्त हुआ है। आचार्य भगवन् निरन्तर फरमा रहे हैं कि धर्म की आराधना करो, तप की आराधना करो। भगवन् के वचन जीवन में उतार लें तो जीवन सफल हो सकता है।

साध्वी श्री सुरुचि श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुहर्षा श्री जी म.सा., साध्वी श्री यतना श्री जी म.सा. आदि

साध्वीवर्याओं ने *''महापुरुषों ने तप की महिमा गाई है''* तपस्या गीत प्रस्तुत किया।

शासन दीपिका साध्वी श्री जय श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुनीता श्री जी म.सा., साध्वी श्री कृतिका श्री जी म.सा., साध्वी श्री कर्णिका श्री जी म.सा. आदि साध्वी मण्डल ने *''तपस्वी तुम धर्मसभा की शान हो, मासखमण तप करने वाले महान हो''* तपस्या गीत प्रस्तुत किया।

आरुग्गबोहिलाभं की बहिनों ने तपस्या गीत *''तपस्या रोग मिटाए, तपस्वी की महिमा अपरम्पार''* एवं समता बहूमण्डल ने गीतिका *''पल-पल तपस्या के गुण हमें गाने हैं''* प्रस्तुत की।

संघ मंत्री व महेश नाहटा ने तपस्वियों के त्याग से प्रेरणा लेने का निवेदन किया। आचार्य भगवन् ने तपस्या अनुमोदना में 101 नवकार महामंत्र की माला जपने का आह्वान किया। अनेक भाई-बहिनों ने तुरन्त ही इसके पच्चक्खाण ग्रहण किये। अन्य कई त्याग-प्रत्याख्यान हुए। 45 से अधिक तेले एवं प्रचुर संख्या में एकासन, आयम्बिल, उपवास, सामायिक, संवर आदि भी हुए।

गुरु की वाणी सुख देने वाली

17 जुलाई 2023। प्रात:कालीन भक्तिमय प्रार्थना की स्वर लहरी के पश्चात् परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् ने असीम कृपा कर मंगलपाठ प्रदान किया। सामायिक, प्रतिक्रमण, जैन सिद्धान्त बत्तीसी की कक्षा में श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने विशेष मार्गदर्शन प्रदान किया।

विशाल धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''गुरु की वाणी सुख देने वाली है। दृश्य और अदृश्य दोनों में से किसका महत्त्व बड़ा है। जो दिख रहा है उससे नहीं दिखने वाला बड़ा है। शरीर दिखता है, इसके भीतर रहने वाली आत्मा नहीं दिखती। दवाई दिखती है, पर उसके अन्दर रहने वाले घटक नहीं दिखते। जो नहीं दिखता उसकी ताकत दिखने वाले से ज्यादा होती है। जो दृश्य में उलझ जाता है वो अदृश्य तक नहीं पहुँच पाता। पाँच पदों को नमस्कार करना तब सार्थक होता है जब अनुभव के साथ जुड़ जाता है। केवल एक शब्द सभी इच्छाओं को पूर्ण करने वाला है। कहा जाता है कि 8 करोड़ 88 लाख 88 हजार 888 बार नवकार महामंत्र का जाप किया जाए तो तीर्थंकर गौत्र का बंध हो जाता है। यह जाप बिना किसी अशुद्धि से पूर्ण शुद्ध विधि से किया जाए तो परिणाम ज्यादा श्रेष्ठ होता है। हमारा जितना ध्यान क्रियात्मक विधि पर है, उतना भावनात्मक विधि पर नहीं है। हमारा मन सधना चाहिए। नमस्कार, नमन में जो ताकत है वह संसार की किसी भी चीज में नहीं है।''**

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि घर-परिवार, कपड़े-लिबास आदि बदलते हैं, पर अपनी आत्मा को उत्कर्ष की ओर नहीं बढ़ाते। साध्वी श्री स्वागत श्री जी म.सा. ने फरमाया कि करोड़ों जन्म के संचित् कर्म तपस्या, स्वाध्याय से नष्ट हो जाते हैं। तपस्या आत्मशुद्धि, कर्मनिर्जरा के लिए करनी चाहिए। साध्वी श्री खंतिप्रिया श्री जी म.सा. ने मासखमण तप पूर्ण कर शासन का गौरव बढ़ाया है। साध्वी श्री स्वागत श्री जी म.सा., साध्वी श्री यतना श्री जी म.सा., साध्वी श्री प्रणाम श्री जी म.सा. ने *''जय-जय हो तपस्वी''* गीत प्रस्तुत कर सबको भावविभोर कर दिया।

शासन दीपिका साध्वी श्री जय श्री जी म.सा. आदि साध्वीवृन्द ने *''धन्य है जिनवाणी गुरुवर''* गीत प्रस्तुत किया। संघ मंत्री ने सभी तपस्वियों के उत्कृष्ट तप की सराहना की। धार्मिक क्रिया-विधि शिविर में साध्वी श्री सुरुचि श्री जी म.सा. ने विशेष मार्गदर्शन देते हुए फरमाया कि विधि के साथ भाव जुड़ेगा तो क्रिया सार्थक हो पाएगी। साध्वी श्री खंतिप्रिया श्री जी म.सा. ने पूर्व में 8, 9 तपस्याएँ व कई बार लगातार एकासन भी किये हैं।

सामायिक, प्रतिक्रमण, जैन सिद्धान्त बत्तीसी की कक्षा में विशेष धर्म तत्त्व का बोध कराया गया। दोपहर में महापुरुषों के सान्निध्य में आगम वांचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि हुए।

साध्वी श्री खंतिप्रिया श्री जी म.सा. के गुरुकृपा से मासखमण तप सम्पन्न हुआ। साथ ही चारित्रात्माओं एवं श्रावक-श्राविकाओं में दीर्घ तपस्याओं का क्रम जारी है।

संतोष सबसे बड़ा धन

18 जुलाई 2023। प्रात: भोर की पहली किरण के साथ ही मंगलमय प्रार्थना के पश्चात् तरुण तपस्वी आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करते हुए मंगलपाठ का श्रवण कराया। सामायिक, प्रतिक्रमण, जैन सिद्धान्त बत्तीसी की कक्षा में श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. विशेष बोध प्रदान कर रहे हैं।

प्रवचन सभा में उपस्थित विशाल जनसमूह को अपने पावन श्रीमुख से भगवान महावीर की अमृतवाणी का रसपान कराते हुए आचार्य भगवन् ने **धम्म सद्धा चालीसा** का पाठ करते हुए अपनी दिव्यदेशना में

''धर्म श्रद्धा हृदय धरूँ धर्म बने मुझ प्राण।
धर्म आराधन नित करूँ, धर्म सदा सुख त्राण।।
एकै साधे सब सधे, सब साधे सब जाय।''

गीतिका प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि **''एक को साध लो, सारे कार्य अपने आप सिद्ध हो जाएँगे। सभी कार्यों को एक साथ साधने जाएँगे तो एक भी हाथ में नहीं आएगा। एक कार्य भी नहीं सध पाएगा। एक को साधें और अच्छी तरह से साधें। *''दुविधा में दोनों गए, माया मिली न राम''*। जब दो तरफ ध्यान रहता है तो एक भी चीज पकड़ में नहीं आती है। केवल धर्म को साध लिया तो सारी चीजें अपने आप सध जाएँगी। धर्म की आराधना करते हुए यदि हमारे पास कुछ भी नहीं हो तो भी बहुत बड़ी निधि होती है, वह है संतोष। *''जब आवे संतोष धन सब धन धूलि समान''*। हम इसे कितना मानते हैं, आत्मचिंतन करें। धर्म की आराधना करते हुए मन बहुत जल्दी ऊब जाता है, पर पैसे कमाने में नहीं ऊबता।''**

श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि मन, वचन, काया से जो आराधना करता है, वह आराधक कहलाता है। श्रद्धा और विश्वास कार्य करते हैं। प्रार्थना करने से जो शक्ति प्राप्त होती है वह पूरे दिन शरीर को सक्रिय रखती है।

साध्वी श्री किरणप्रभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री ज्योतिप्रभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री विजेता श्री जी म.सा., साध्वी श्री गुणरंजना श्री जी म.सा. ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। सभा में उपस्थित हजारों लोगों ने उनोदरी तप करने का प्रत्याख्यान आचार्य भगवन् के मुखारविन्द से ग्रहण किया।

धार्मिक क्रिया-विधि शिविर में साध्वी श्री सुरुचि श्री जी म.सा. ने सामायिक, प्रतिक्रमण आदि शुभ भावों के साथ करने की प्रेरणा दी। श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने धर्म तत्त्व का बोध प्रदान किया। दर्शनार्थियों का ताँता लगा रहा।

ईमान है तो जीवन की आभा है

19 जुलाई 2023। मंगलमय प्रात:कालीन बेला में सुमधुर स्वरों में मंगल प्रार्थना में भगवान महावीर एवं *''मन हुक्मी-हुक्मी गाए जा''* की स्वर लहरियों से माहौल भक्ति से सराबोर हो गया।

बड़ी संख्या में गुरुभक्तों की उपस्थिति गुरुनिष्ठा एवं समर्पणा को प्रत्यक्ष परिलक्षित कर रही थी। विशाल

धर्मसभा में अमृतवाणी का गुंजार करते हुए मानवता के मसीहा आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि **''धर्म जब मेरा प्राण बनेगा तो कभी भी धर्म को छोड़ा नहीं जाएगा। जैसे प्राण छूटने पर शरीर छूट जाता है, वैसे ही धर्म छूटने से मेरा जीवन छूट जाएगा। जीवन की आभा धर्म से है, अभिमान से नहीं। धर्म चला गया तो सब कुछ चला गया। हमारे में कालुष्य भरा हुआ है। इस कारण आत्मा और परमात्मा के दर्शन नहीं होते। राग-द्वेष की गहरी पर्तें पड़ी हैं। मन को साध लें तो मोक्ष दूर नहीं है। *''नर नारायण बन जाएगा, जो सोया सिंह जगाएगा।।''* सोये हुए मन को जगाने की आवश्यकता है।''**

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने सुबाहु कुमार के जीवन चरित्र का वर्णन करते हुए फरमाया कि हम मैकअप से नहीं आचरण से सुंदर बने। शासन दीपिका साध्वी श्री जय श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने *''जो भी सुने जिनवाणी, वैसा जीवन बन जाए''* भक्ति गीत प्रस्तुत किया। साध्वी श्री खंतिप्रिया श्री जी म.सा. के मासखमण का पारणा सानन्द सम्पन्न हुआ। जय-जयकार और केसरिया-केसरिया गीतों से माहौल गूँज उठा।

धार्मिक क्रिया-विधि शिविर में साध्वी श्री सुरुचि श्री जी म.सा. ने पच्चक्खाण के नियम एवं शुद्ध विधि की जानकारी दी। श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने प्रात: और दोपहर में तत्त्वज्ञान की शास्त्रोक्त प्रभावना की।

20 जुलाई 2023। प्रात:कालीन मंगलमय प्रार्थना में प्रभु महावीर की वाणी का संगान हुआ। पश्चात् आयोजित विशाल धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए विश्ववंदनीय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''देव, गुरु, धर्म पर आस्था और विश्वास है, किन्तु अभी भी अज्ञान अंधकार भी है। अज्ञान का कारण है थोड़ा-सा भी कष्ट, विपत्ति आने पर हम इधर-उधर ताकने लग जाते हैं। कोई मजार की ओर जाता है तो कोई ओर कहीं चला जाता है। ज्ञान यह है कि कर्म उदय में हैं। अशुभ कर्म का योग है तो कहीं पर भी चले जाओ, कोई भी शक्ति आपको सुख नहीं दे सकती। जब तीर्थंकर भी कर्मों से बच नहीं पाए तो हम कैसे बच सकते हैं? उनको भी कर्म भोगने पड़े। कर्मों का भोग तो सभी को भोगना ही पड़ेगा। अच्छे या बुरे जैसे कर्म उदय में आएँगे, वैसे भोगने पड़ेंगे। धन बढ़े या न बढ़े, मन में शांति रहनी चाहिए। स्थानकवासी परम्परा के अनुसार फोटो को नमस्कार नहीं करना चाहिए। हम समझते हैं कि हम गुरु महाराज को नमस्कार कर रहे हैं, जबकि वह फोटो जड़ है। इस अज्ञानता को दूर करना है।''** सुनंदा चारित्र का सरस चित्रण आचार्यदेव ने फरमाया। लव जिहाद की प्रवृत्ति से दूर रहने का आह्वान आचार्य भगवन् ने किया।

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने सुबाहु कुमार के जीवन चरित्र का सुन्दर विवेचन करते हुए सुन्दर संस्कारों को जीवन में प्रतिस्थापित करने की प्रेरणा दी। शासन दीपिका साध्वी श्री जय श्री जी म.सा., साध्वी श्री अर्पणा श्री जी म.सा., साध्वी श्री विजेता श्री जी म.सा., साध्वी श्री चेतन श्री जी म.सा., साध्वी श्री विराट श्री जी म.सा., साध्वी श्री किरणप्रभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुरुचि श्री जी म.सा. आदि साध्वीवृंद ने *''पुण्यवानी का ठाठ लगा है अनुपम आज, राम मेरे मन भाए''* गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। चारित्रात्माओं एवं श्रावक-श्राविकाओं में दीर्घ तपस्याओं का क्रम जारी है।

अनरिटायर्ड शिविर में श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने श्रावक के 12 व्रतों का सुंदर विवेचन फरमाते हुए व्रत ग्रहण करने की प्रेरणा दी। श्रावकों ने इन व्रतों को समझकर आत्मसात् किया। **'लोच में क्या सोच'** कार्यक्रम जारी है। तत्त्वज्ञान की विभिन्न कक्षाएँ निरन्तर चल रही हैं।

अपने तीखे वचनों को बदलो

21 जुलाई 2023। आज के दिवस का मंगलमय शुभारंभ प्रार्थना की पावन पंक्तियों के साथ हुआ। राठौर परिसर में आयोजित विशाल धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए आगमज्ञाता आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्य-मधुर वाणी में फरमाया कि **''शरीर की रक्षा हम बहुत बार करते हैं और जन्म-जन्मान्तरों से करते आए हैं, पर शरीर की रक्षा कभी नहीं हो पायी है। अन्ततोगत्वा शरीर यहीं छूटता है। हमें आत्मा की रक्षा करनी है। हमारे मन के शुभ विचार आत्मा को सुगति दिलाने वाले होते हैं। हमारा धर्म कहता है कि मन के प्रत्येक विचार को बदलो। मन के विचार बदलेंगे तो ही हम धर्म के मार्ग पर बढ़ सकेंगे। धर्म कहता है कि अपने तीखे वचनों को बदलो। तीखे वचनों के बजाय सत्य एवं प्रिय वचन बोलने चाहिए। हम सोचते हैं कि हम स्पष्ट, साफ-साफ बोलने वाले हैं। बहुत अच्छी बात है। पर आप साफ-साफ सुनने वाले भी हैं या नहीं? साफ वक्ता को साफ श्रोता भी होना चाहिए।''**

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने सुबाहु कुमार का जीवन चरित्र फरमाते हुए दान के स्वरूप पर प्रकाश डाला। शासन दीपिका साध्वी श्री जय श्री जी म.सा. आदि साध्वीमण्डल ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए।

साधना से आत्मा की अनुभूति होती है

22 जुलाई 2023। मंगलमय प्रार्थना के उच्चारण से सम्पूर्ण माहौल धर्ममय बन गया। तत्पश्चात् आयोजित धर्मसभा में गुरुभक्तों की अपार जनमेदिनी को मार्गदर्शन प्रदान करते हुए प्रशान्तमना आचार्य भगवन् ने फरमाया कि **''श्रद्धा से निज को पहचानो, सत्य धर्म को तब ही जाना जा सकता है। धर्म की पहचान कब होगी? जब धर्म की श्रद्धा हमारे भीतर प्रकट हो जाएगी। धर्म श्रद्धा में झूलेंगे तब हमारी पहचान होगी कि मैं कौन हूँ, मेरा क्या स्वरूप है? मैं कहाँ से आया हूँ और मुझे कहाँ जाना है? जब सम्यक्त्व प्राप्त होता है तभी हम अपनी पहचान करने में समर्थ होते हैं। तब यह भाव पैदा होता है कि शरीर और आत्मा भिन्न है। आत्मा शरीर नहीं है और शरीर आत्मा नहीं है। जिस दिन आत्मतत्त्व शून्य हो जाएगा उस दिन शरीर की सारी क्रियाएँ क्षय हो जाएगी। साधना से आत्मा की अनुभूति होती है। कल की चिन्ता हमें नहीं करनी चाहिए। आज का दिन ही बिना चिन्ता के जी लें। आज का दिन बिना भय के जी लें, कल का दिन सुखद ही होगा।''**

सुनंदा चारित्र की सुन्दर एवं सरस व्याख्या का श्रवण कर जनता आत्मविभोर हो नयी-नयी प्रेरणाएँ ग्रहण कर रही हैं।

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि अशुभ विचार कर्मबन्धन के कारक हैं। श्रेष्ठ विचार और आचरण को जीवन में आगे बढ़ाएँ। शासन दीपिका साध्वी श्री जय श्री जी म.सा. आदि महासतीवर्याओं ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। अनरिटायर्ड शिविर में श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने श्रावक के बारह व्रतों की सुंदर व्याख्या करते हुए व्रत धारण करने की प्रेरणा दी। दिनभर दर्शनार्थियों का ताँता लगा रहा।

मन को पवित्र बनाएँ

23 जुलाई 2023। प्रात:कालीन रविवारीय समता शाखा समता आराधना में गुरुभक्तों का उत्साह देखते ही बनता था। चतुर्विध संघ की साक्षी में आयोजित विशाल धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए सिरीवाल प्रतिबोधक आचार्य भगवन् ने फरमाया कि **''मन निर्मल, पवित्र होगा तो ज्ञान की गंगा प्रवाहित होगी। मन के दूषित हो जाने से**

वह ज्ञान गंगा दूषित हो जाती है। मन को पवित्र बनाए रखना बहुत जरूरी है। पुण्यानुबंधी पुण्य का योग होता है तो मन पवित्र बना रहता है। वहाँ कामवासना, विषयवासना जन्म नहीं ले पाती और निष्काम भाव से मन पवित्र रहता है। ज्ञान की आराधना, दर्शन की आराधना, चारित्र की आराधना निष्काम भाव से होनी चाहिए। जहाँ कामना प्रवेश कर जाती है वहाँ पवित्रता का हनन होने लगता है। जिसका मन निर्मल और पवित्र होता है, उसमें ज्ञान गंगा का प्रवाह बढ़ता जाता है। हम सोचते हैं कि हमें ज्ञान चढ़ता नहीं है, याद नहीं रहता है। हम केवल अपनेपन को पवित्र बना लें तो याद भी रहने लगेगा और ज्ञान भी बढ़ने लगेगा। जो ज्ञान हमने पाया है वह ज्ञान दूसरों को आगे से आगे देते जाना। ज्ञान यदि अटक गया तो वह ज्ञान खण्डित हो जाएगा। ज्ञान चेतना को जगाने के लिए हमारा पुरुषार्थ निरन्तर होना चाहिए। ज्ञान के प्रताप से हम अपने मन को शान्त रख सकते हैं।''

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने अपने प्रेरक उद्‌बोधन में फरमाया कि हमारा आहार सादा और सात्विक होना चाहिए। हमें जीने के लिए खाना है, ना कि खाने के लिए जीना है। साध्वी श्री चेतन श्री जी म.सा. ने भावविभोर होकर फरमाया कि गुरुकृपा और गुरुभक्ति से हम गुरु सेवा में आने में समर्थ हुए हैं। सूरज की एक किरण अंधकार को भगा देती है। वैसे ही गुरु के सान्निध्य से जीवन शुद्ध, निर्मल और पवित्र बन जाता है। गुरुकृपा सोए इंसान का भाग्य जगा देती है। नीमच संघ बहुत ही भाग्यशाली संघ है, जिसे आचार्य भगवन् के चातुर्मास का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

शासन दीपिका साध्वी श्री जय श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। इस अवसर पर अनेक तपस्याओं के प्रत्याख्यान हुए। मालवा सहित देश के अनेक स्थानों के श्रद्धालुओं ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया।

दूसरों के कार्यों की समीक्षा दु:ख का कारण है

24 जुलाई 2023। मंगलमय भोर के साथ ही प्रार्थना द्वारा मंगलमय दिन का शुभारंभ किया गया। तत्पश्चात् परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य भगवन् ने उपस्थित गुरुभक्तों पर कृपा बरसाते हुए मंगलपाठ श्रवण कराया।

नीमच में चतुर्विध संघ की उपस्थिति में चातुर्मास के ठाठ के साथ प्रतिदिन प्रार्थना, प्रवचन, ज्ञानचर्चा, आगम वांचनी, प्रश्नोत्तरी, सामायिक, प्रतिक्रमण एवं तपस्याओं से जन-जन का जीवन पावन हो रहा है। आज के दिवस पर आयोजित विशाल धर्मसभा में उपस्थित जनसमुदाय को संबोधित करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने फरमाया कि **''शान्त बनोगे तो स्वस्थ रहोगे, सुखी रहोगे। चारों तरफ अशान्ति का वातावरण छाया हुआ है। लोग प्रतिकूल हैं, मन कमजोर है। जो चाहते हैं वैसा होता नहीं है। चारों तरफ आग जल रही है। उसमें बर्फ कैसे बना रह सकता हूँ। गुरु कहते हैं कि अपने आप में आ जाओ। एक ही दिशा में चलते जाओ। यह शान्ति का सूत्र है। हम दूसरों के कार्यों की समीक्षा में लगे रहते हैं। यह बहुत बार दु:खों का कारण बन जाता है। घर-परिवार में रहने वाले लोग एक-दूसरे की समीक्षा करते रहते हैं कि दूसरे के मन में मेरे प्रति कैसी भावना है। अगर सामने वाला जान-बूझकर उसके विरोध में काम कर रहा है तो वह समीक्षा उसके भीतर आग लगाने लगती है। जिसका स्वयं पर जितना विश्वास है, उतना ही वह दूसरों पर भी रखता है।''**

श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि क्रोध, राग-द्वेष एवं लोभ से कर्मबंधन द्विगुणित होता जाता है। मन को बदलने की जरूरत है। जब तक राग-द्वेष की प्रवृत्ति रहेगी तब तक कल्याण होने वाला नहीं है।

शासन दीपिका साध्वी श्री जय श्री जी म.सा. आदि साध्वीवृंद ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए।

धर्म सकारात्मक सोच है

25 जुलाई 2023। प्रात:कालीन मंगलमय बेला में प्रभु भक्ति से सराबोर प्रार्थना का लाभ लेने के पश्चात् आयोजित धर्मसभा में विश्ववंदनीय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में देशना देते हुए फरमाया कि **''धर्म का नाम सुहाना लगता है, लेकिन जब धर्म पर जीना होता है तो कठिनाई खड़ी हो जाती है, क्योंकि हमने धर्म के महत्त्व को समझा नहीं है, जाना नहीं है। इसलिए उस दिशा में हमारा प्रयत्न नहीं हो पाता है। यदि हम बुलंदियों पर होंगे तो धर्म के आधार पर ही होंगे। धर्म के प्रति श्रद्धा महत्त्वपूर्ण है। धर्म सकारात्मक सोच है। सही रास्ते का चयन कर उस पर चलते रहें। भय के कारण मन कुण्ठित होता है। भय का कारण है सदाचार के पालन का अभाव। सत्य के साथ भय नहीं आता। भय को यदि गले नहीं लगाएँगे तो भय अपने आप ही नहीं आएगा। धर्म श्रद्धा प्रगाढ़ है तो भय से डरने की कोई जरूरत नहीं है। जो भी मोक्ष गया वह श्रद्धा के बल पर ही गया। जो जा रहा है वह श्रद्धा के बल पर जा रहा है और जो जाएगा वह भी श्रद्धा के बल पर ही जाएगा। एक बार श्रद्धा का दामन थाम लिया तो श्रद्धा कहीं भटकने नहीं देगी।''**

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि श्रावक श्रद्धावान, विवेकवान एवं कर्त्तव्य पालन करने वाला होता है। शासन दीपिका साध्वी श्री जय श्री जी म.सा., साध्वी गुणरंजना श्री जी म.सा., साध्वी श्री ज्योतिप्रभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुरुचि श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुभग श्री जी म.सा. आदि महासतीवर्याओं ने *''सागर सी गहराई, पर्वत सी ऊँचाई है, गुरु महिमा का अंत नहीं, ग्रन्थों की सच्चाई में''* गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। आचार्य भगवन् ने लोगस्स की 15 माला का प्रत्याख्यान करवाया। अन्य अनेक तपस्याओं के प्रत्याख्यान हुए। जावद एवं कानवन समता महिला मण्डल ने प्रतिदिन एक घण्टा मौन एवं एक विगय का त्याग आदि अनेक प्रत्याख्यान ग्रहण किये। ऐसी वाणी बोलिए शिविर में श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने हितकारी, प्रियकारी, मधुर एवं सत्य वचन बोलने की प्रेरणा दी।

दोपहर में मांगलिक से पूर्व श्री गगन मुनि जी म.सा. ने साधु जी के पाँच महाव्रत- अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह की विस्तृत व्याख्या की। मध्यप्रदेश के कैबिनेट मंत्री श्री ओमप्रकाश जी सकलेचा ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लेकर मार्गदर्शन प्राप्त किया।

प्रज्ञा से धर्म की समीक्षा करें

26 जुलाई 2023। मंगलमय प्रात:कालीन प्रार्थना से सम्पूर्ण वातावरण भक्तिमय बन गया। प्रवचन बेला में आयोजित धर्मसभा में अपार जनमेदिनी की उपस्थिति उभय गुरु-भवगंतों के अतिशय को मुखर कर रही थी। इस धर्मसभा में नवम् पट्टधर आचार्य प्रवर श्री रामलाल जी म.सा. ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''प्रज्ञा से धर्म की समीक्षा करें। असाता वेदनीय कर्म का उदय होते ही हमें असाता पैदा होती है। असाता का कारण राग है। कोई बहुत प्रिय चीज हमसे अलग हो रही हो और हमारा भीतर उसको सहन करने में समर्थ नहीं हो रहा हो तो ऐसे में हमारे भीतर जो रसायन उत्पन्न होगा, वह रोग को पैदा करने वाला होगा। भगवान महावीर को रक्तातिसार हो गया, फिर भी वे दु:खी नहीं हुए। उन्हें कोई परेशानी नहीं हुई। खंदक ऋषि की चमड़ी उधेड़ी गई, पर उन्हें कोई कष्ट नहीं हुआ। हमारी स्थिति में कोई नकारात्मक परिवर्तन होता है तो हमें दु:ख होता है।''**

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि सत्य मार्ग पर चलने वाला कभी दु:खी नहीं हो सकता। शासन दीपिका साध्वी श्री जय श्री जी म.सा. आदि महासतीवर्याओं ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। उभय गुरु-भगवंतों की कृपा से साध्वी

श्री जयति श्री जी म.सा. ने अपूर्व आत्मबल का परिचय देते हुए मासखमण तप कर जिनशासन का गौरव बढ़ाया है। आप श्री जी पूर्व में तेला, अठाई, नौ, अढ़ाई वर्ष तक एकान्तर तप एवं लगातार 45 एकासन आदि अनेक तपस्याओं से अपना जीवन सजाया हुआ है। साध्वी श्री चन्दना श्री जी म.सा. (बड़ीसादड़ी वाले) के 27 उपवास के साथ तपस्या गतिमान है।

श्रीमती कंचनदेवी सुभाषचंद जी कांकरिया-कोलकाता ने तत्त्वज्ञान का विशेष बोध कराया। ऐसी वाणी बोलिए शिविर में श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने कटु एवं अप्रिय वचन नहीं बोलने की अद्भुत प्रेरणा दी। दीर्घ तपस्याओं के उपलक्ष्य में आचार्य भगवन् के श्रीमुख से 3 दिन तक भोजन में जो आ जावे उसकी कोई प्रतिक्रिया नहीं करने का संकल्प हजारों लोगों ने ग्रहण किया।

ज्ञानोदय संस्था के कमल जी, मीतल जी, प्रमोद जी गोधा, नवीन जी गट्टानी, अनिल जी चौरसिया आदि ने गुरुदर्शन कर विभिन्न विषयों पर चर्चा करते हुए महापुरुषों से मार्गदर्शन प्राप्त किया।

नैतिकता से जीवन बनता है

27 जुलाई 2023। प्रात:कालीन मंगलमय प्रार्थना में पंच परमेष्टि वंदना के स्वरों से सम्पूर्ण माहौल गुंजित हो उठा। सामायिक, प्रतिक्रमण, जैन सिद्धान्त बत्तीसी की कक्षा में श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने मार्गदर्शन प्रदान किया।

विशाल धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए भक्तों के भगवान आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि **''नैतिकता से जीवन बनता है। ईमान से जीवन सुशोभित होता है। सत्य से जीवन की प्रतिष्ठा होती है। नैतिकता, ईमानदारी और सच्चाई जिस जीवन में नहीं हो वह जीवन कैसा जीवन? भरत जैसा भाई मिलना बहुत मुश्किल है। युग नहीं बदला, हम बदल गए हैं। आज भाई से बढ़कर कोई शत्रु नहीं होगा। इसके पीछे कारण है केवल धन और सम्पत्ति। धन के बंटवारे के कारण मन में भेद हो जाता है। राम जैसे भाई सहज रूप से राज्य का त्याग कर वनवास के लिए निकल जाते हैं। भरत राज्य स्वीकार नहीं करते। दोनों के विचार अटल हैं। राम के कहने पर राजाज्ञा मानकर भरत राज का संचालन करते हैं, पर राज सिंहासन पर बैठने को तैयार नहीं होते। एक संन्यासी जैसा सादगीमय जीवन जीया भरत ने। हम भी प्रेरणा लेकर परिवार में आनन्द, स्नेह, प्रेम की भावना को आगे बढ़ाएँ। आज सब स्वार्थ सिद्धि में लगे हुए हैं। स्वार्थ त्याग सबसे कठिन तपस्या है। हम समस्या का नहीं समाधान का अंग बनें।''** सुनन्दा चारित्र का सुंदर चित्रण आचार्यदेव ने फरमाया।

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने वेशभूषा एवं पहनावे को शालीन रखने की प्रेरणा दी। साध्वी श्री विराट श्री जी म.सा. ने फरमाया कि आचार्य भगवन् व उपाध्याय प्रवर की कृपा से नीमच में धर्म गंगा बह रही है। नीमच की वर्षों की भावना फलीभूत हुई। साध्वी श्री जयति श्री जी म.सा. ने 31 उपवास करके रामेश शासन के गौरव में चार चाँद लगाए हैं। साध्वी श्री चेतन श्री जी म.सा., साध्वी श्री किरणप्रभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री अनुराग श्री जी म.सा., साध्वी श्री विजेता श्री जी म.सा., साध्वी श्री यतना श्री जी म.सा., साध्वी श्री निरामय श्री जी म.सा. आदि ने *''राम गुरु की शिष्या तू ने कर दिया कमाल, मासखमण तप को किया स्वीकार''* तपस्या गीत प्रस्तुत किया। साध्वी श्री ज्योतिप्रभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुवर्णा श्री जी म.सा., साध्वी श्री विराट श्री जी म.सा., साध्वी श्री किरणप्रभा श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने *''राम गुरु आए हैं, तप का ठाठ लगाए हैं''* गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। केसरिया-केसरिया गीतों से सम्पूर्ण सभा गूँज उठी।

साध्वी श्री चन्दना श्री जी म.सा. के 28 उपवास के प्रत्याख्यान हुए। साध्वी श्री मल्लिका श्री जी म.सा. 18 उपवास, साध्वी श्री कर्णिका श्री जी म.सा. के 12 उपवास सहित अनेक चारित्रात्माओं के तपस्याएँ गतिमान हैं।

तपस्या के क्रम में कई श्रावक-श्राविकाओं के भी दीर्घ तपस्याएँ जारी हैं। ऐसी वाणी बोलिए शिविर में श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने हित मित वचन के टिप्स देते हुए अभद्र शब्दों के प्रयोग से बचने की प्रेरणा दी। श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने महामंत्र नवकार का सुन्दर विवेचन किया।

28 जुलाई 2023। दैनिक मंगलमय प्रार्थना के पश्चात् चतुर्विध संघ की उपस्थिति में आयोजित विशाल धर्मसभा में जन-जन की आस्था के केन्द्र आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''राग, द्वेष, क्रोध, मान, माया, लोभ के प्रहार चारों तरफ से होते हैं। इनके प्रभाव से धर्म ही बचाव कर सकता है। धर्म से मन पवित्र रहता है। पावन और पवित्र मन आत्मा को तृप्त करने, आत्मा को संतुष्टि देने वाला होता है। कार्य की सफलता के लिए मन में अटूट विश्वास होना जरूरी है। मन में उलझन है तो व्यक्ति की गति अवरुद्ध हो जाती है। वह संकल्प-विकल्प में रहता है। जीवन में चुनौतियाँ आती हैं, उनको स्वीकार करना पड़ेगा। चुनौतियों को स्वीकार करके जो निराकरण कर लेगा वह सफलता प्राप्त कर सकता है। जो उनसे घबरा कर पीछे हट गया, वो मंजिल प्राप्त करने में समर्थ नहीं हो पाता है। धर्म श्रद्धा हमारे जीवन का समाधान है। सही रास्ता धर्म श्रद्धा से ही नजर आता है।''** सुनंदा चारित्र का सरस व्याख्या प्रस्तुत कर आचार्यदेव ने सभी को भावविभोर कर दिया।

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि काँटों जैसी वेदना सहन करेंगे तो हम गुलाब के फूल जैसे निखरेंगे। हम रोजाना तीन मनोरथों को दोहराते रहेंगे तो एक दिन हमारी भावना सुफल हो जाएगी। संसार के रिश्ते-नाते भटकाने वाले होते हैं। अच्छे कार्यों को हमें कल पर कभी नहीं टालना चाहिए। धर्म का पल्ला पकड़कर आगे बढ़ेंगे तो सुख की अनुभूति होगी।

शासन दीपिका साध्वी श्री जय श्री जी म.सा. आदि साध्वीवृन्द ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। तपस्याओं के अनेक प्रत्याख्यान हुए। तत्त्वज्ञान की विभिन्न कक्षाएँ निरन्तर जारी हैं।

तपस्या किसी कामना से नहीं होनी चाहिए

29 जुलाई 2023। मंगलमय प्रभात के साथ श्रद्धा-भक्ति से ओत-प्रोत प्रार्थना से जन-जन का हृदय पावन हो गया। राठौर परिसर में आयोजित विशाल धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए मानवता के मसीहा आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''धर्म की पहचान करो। चिन्तन करो कि मैं कौन हूँ तो धर्म की पहचान हो जाएगी। जब तक हमने आप को नहीं पहचाना तब तक धर्म की पहचान नहीं होगी। धर्म की पहचान किए बिना धार्मिक क्रियाएँ करते रहेंगे तो वे क्रियाएँ विशेष लाभप्रद नहीं होंगी। धर्म की पहचान होने के बाद जो भी धर्मक्रियाएँ होगी वे विशेष फलदायी होंगी। अखण्ड श्रद्धा मन में रहेगी तो ही कल्याण होगा। अपने आप में स्थिर हो जाना धर्म है। जब आत्मा का बोध होगा तब ही धर्म पर श्रद्धा होगी। तपस्याएँ निरन्तर चल रही हैं। तपस्या किसी कामना से नहीं होनी चाहिए। धर्म की आराधना भौतिक सत्ता-सम्पत्ति की कामना, यश, मान, कीर्ति के लिए नहीं होनी चाहिए।**

साध्वी श्री चंदना श्री जी म.सा. (बड़ीसादड़ी वाले) के मासखमण आज पूर्ण हो रहा है। उन्होंने अपने मन को मजबूत बना लिया। आज वे मासखमण के रथ पर आरूढ़ हो रही हैं। सुशील जी कटारिया, सरिता जी मुणत, विपिता जी गांधी, संजय जी चौधरी, जुबिन मुणत आज मासखमण के रथ पर आरूढ़ हो रहे हैं। अभिषेक जी कांठेड़ मासखमण से दो कदम पीछे हैं। आज उनके 28 की तपस्या है। तपस्या में शान्त भाव व समाधि में रहना चाहिए। अधिकांश तपस्याओं में उत्तेजना ज्यादा आती है।'' आचार्यदेव ने सुनंदा चारित्र का सरस व मार्मिक चित्रण प्रस्तुत कर सभी को अभिभूत कर दिया।

श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि धर्म एक ऐसा दर्पण है जो आत्मा का परिचय कराने वाला है। बाहरी दर्पण आपके शरीर का परिचय कराता है, लेकिन अगर आत्मा का परिचय करना है तो धर्म रूपी दर्पण में देखना होगा। साध्वी श्री अर्पणा श्री जी म.सा. ने मेवाड़ी भाषा में आचार्य भगवन् को अमृत पुरुष निरुपित करते हुए फरमाया कि आप श्री जी उत्कृष्ट ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार, वीर्याचार का पालन करते हैं तथा औरों से भी पालन करवाते हैं। आज गुरु कृपा से साध्वी श्री चंदना श्री जी म.सा. (बड़ीसादड़ी वाले) के मासखमण तप की आराधना पूर्ण हो रही है। साध्वी श्री अर्पणा श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुरुचि श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुभग श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुहर्षा श्री जी म.सा., साध्वी श्री अनुमिता श्री जी म.सा. आदि द्वारा तप का ठाठ लगा है। *''हो रही जय-जयकार, चंदना श्री जी म.सा. ने तप करके सबकी बढ़ाई शान''* बधाई गीत प्रस्तुत किया।

संघ मंत्री ने सभा का संयोजन करते हुए तपस्वियों से प्रेरणा लेने का आह्वान किया। कई त्याग-प्रत्याख्यान हुए। केसरिया-केसरिया गीतों से पूरा माहौल गुंजायमान हो उठा। धन्य तपस्वी, धन्य तपस्वी स्वर अनवरत मुखरित हो रहे थे। देशभर के अनेक स्थानों से श्रद्धालुओं का आवागमन निरन्तर जारी है।

निरन्तर ज्ञानार्जन का लक्ष्य होना चाहिए

30 जुलाई 2023। परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य भगवन् द्वारा प्रदत्त आयाम 'रविवारीय समता शाखा' में आज के दिवस पर गुरुभक्तों की उपस्थिति से गुरु समर्पणा स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रही थी। धर्मोल्लास के वातावरण में श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने धर्म एवं तत्त्वज्ञान का बोध कराया।

विशाल धर्मसभा को अमृतवाणी का पावन रसपान कराते हुए विश्ववंदनीय आचार्य भगवन् ने धर्म सद्धा चालीसा का पाठ करते हुए अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''धर्म की श्रद्धा दिन-दिन बढ़ती रहनी चाहिए। अंतरमन से धर्म की आराधना करने पर श्रद्धा विकसित होगी। प्रतिदिन नया ज्ञान सीखें। कर्मों का क्रोड खपावें तो तीर्थंकर नाम गौत्र का बंध होता है। प्रतिदिन कुछ नया ज्ञान सीखने वाला कर्मों को क्षय कर आत्मबोध प्राप्त करता है। एक गाथा भी याद करें किन्तु तन्मयता से करें। ज्ञानावरणीय कर्म की निर्जरा होगी तो ज्ञान चढ़ने लगेगा। निरन्तर नया ज्ञानार्जन करने का लक्ष्य होना चाहिए। एक शब्द सीखें या पाँच शब्द, बूँद-बूँद से भी घड़ा भरता है। एक-एक शब्द यदि याद करने लगे तो एक महीने में 32 शब्द याद हो जाएँगे। 32 शब्दों से एक गाथा हो जाएगी। गाथा याद होने के बाद उस पर चिन्तन करेंगे तो श्रद्धा ठोस होती जाएगी।''**

आचार्यदेव ने सुनंदा चारित्र की सुन्दर व्याख्या प्रस्तुत की। प्रतिदिन 15 मिनट धर्माराधना करने का संकल्प अनेक भाई-बहिनों ने ग्रहण किया।

श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जब तक इच्छाओं के पीछे भागते रहेंगे तब तक सुख और समाधि नहीं मिलेंगे। व्यक्ति को सुख की तृप्ति मोक्ष में होगी। जो इच्छाओं का निरोध करता है वह मोक्ष को प्राप्त करता है।

शासन दीपिका साध्वी श्री जय श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए। प्रतिदिन दोपहर में महापुरुषों के पावन सान्निध्य में आगम वांचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी, जिज्ञासा समाधान आदि कार्यक्रम हुए।

शासन सेवा के लिए तत्पर भाइयों के लिए दो दिवसीय **'सर्वर दि डिसर्वर'** शिविर के आयोजन में श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने निष्काम भाव से संघ सेवा करने की अद्भुत प्रेरणा दी।

तपस्या सूची

संत-सती वर्ग	
मासखमण	श्री गगन मुनि जी म.सा. – 30 साध्वी श्री सुभग श्री जी म.सा. – 30 साध्वी श्री जयति श्री जी म.सा. – 31 साध्वी श्री खंतिप्रिया श्री जी म.सा. – 30 साध्वी श्री चन्दना श्री जी म.सा. – 30
उपवास	साध्वी श्री मल्लिका श्री जी म.सा. (गतिमान) – 24 साध्वी श्री कर्णिका श्री जी म.सा. – 18
श्रावक-श्राविका वर्ग	
आजीवन शीलव्रत	इंदरचंद जी लोढ़ा-इन्दौर, रामचन्द्र जी चौहान-रतलाम, कन्हैयालाल जी बाजेड़ा वीरेन्द्र जी लीलादेवी बैद-बोरीवली (मुम्बई), रामनारायण जी धाकड़, अखिलेश जी अंजना जी पंवार-कानवन, बाबुलाल जी मेहता, ईश्वरदान जी चारण-देशनोक, प्रकाशचन्द्र जी निर्मलादेवी बाफना-चित्तौड़गढ़
मासखमण एवं ऊपर	36 – संजय जी चौधरी, सरिता जी अशोक जी मुणोत (गतिमान), वीर भ्राता पुलकित जी गुलगुलिया (गतिमान) 31 – सरोज जी आशीष जी कांठेड़, भावना जी अरविन्द जी वया, सुशीला जी सागरमल जी पितलिया, विपिता जी शीतल जी गांधी, अभिषेक जी कांठेड़ 30 – सुशील जी कटारिया, जुबिन जी मुणेत, मंजू जी अजीत जी छिंगावत, रेखा जी प्रकाश जी आँचलिया
एकासन का मासखमण	उर्मिला जी अमृतलाल जी कोठारी, अंजना जी आंचलिया, करणमल जी कोठारी-भीण्डर, चेतनदेवी गौतमचंद जी बोहरा-चेन्नई
उपवास	28 – नेहल जी राजेन्द्र जी श्रीश्रीमाल-रतलाम, 27 – पुष्पादेवी पुखराज जी पगारिया (31 के प्रत्याख्यान) 26 – बुलबुल जी अंकित जी चौहान-झारड़ा (31 के प्रत्याख्यान) 22 – कलाबाई धींग (गतिमान), वनिता जी नपावलिया (गतिमान) 19 – सोनल जी विजय जी पितलिया-मन्दसौर (मासखमण के प्रत्याख्यान) 15 – अरुण जी बम्बोरिया 11 – नेमीचन्द जी चौरड़िया, सागरमल जी वया, मनीषा जी नलवाया, प्रीति जी नलवाया, रेणु जी कोठारी, ऊषा जी कांठेड़, प्रेमबाई कांठेड़ 9 – पंकज जी मोगरा, वंदना जी पीपाड़ा, सुशीलाबाई कटारिया, नैना जी खिंदावत, मंजुला जी नाहर, पराग जी नाहर, सुनील जी नलवाया, सोनिया जी खिंदावत, रिद्धि जी खिंदावत 8 – अनुराग जी नलवाया, वात्सल्य जी खाबिया, सुरेश जी गांधी, मिताली जी चौधरी, कोमल जी सोनी
आजीवन 10 ड्रेस	पारसमल जी पितलिया-मोरवन

-महेश नाहटा श्रमणोपासक

संक्षिप्त परिचय

मुमुक्षु श्री शांतिलाल जी छाजेड़

नाम	:	मुमुक्षु श्री शांतिलाल जी छाजेड़
जन्मस्थान	:	टीटवा, अमरावती (महा.)
मूलनिवास	:	धामणगाँव (रेलवे)
जन्मतिथि	:	भादवा बदी 6 संवत् 1936
व्यावहारिक शिक्षा	:	दसवीं
धार्मिक ज्ञान	:	भक्तामर, पुच्छिसु णं, आगम पठन-पाठन, प्रतिक्रमण

पारिवारिक परिचय

माताजी-पिताजी	:	स्व. श्रीमती मेहताब बाई-मोतीलाल जी छाजेड़
धर्मपत्नी	:	श्रीमती विमला बाई छाजेड़
भाई	:	स्व. श्री दयालाल जी छाजेड़
बहन-बहनोई	:	स्व. श्रीमती कमला बाई-बच्छराज जी पगारिया, धरणगाँव, स्व. श्रीमती पद्मा बाई-धरमचंद जी कोठारी, नेरपरसोपंत, कु. उमराव बाई छाजेड़
पुत्र-पुत्रवधू	:	श्री भूपेन्द्र कुमार जी-अनुपम जी, श्री रविन्द्र कुमार जी-रुचिता जी
पुत्रियाँ-दामाद	:	श्रीमती माला जी-राजेन्द्र कुमार जी बैद, वरोरा, श्रीमती बीना जी-सुभाष कुमार जी गेलड़ा, वणी, श्रीमती रचना जी-नरेन्द्र कुमार जी बैद, हिंगणघाट
पौत्र-पौत्रवधू	:	श्री पियूष जी-नेहा जी, श्री प्रतीक जी-मेघा जी, श्री तीर्थेश कुमार जी छाजेड़
पौत्री-दामाद	:	श्रीमती सपना-कमलेश जी चुत्तर, ओजस्वी जी छाजेड़

आचार्य प्रवर की विशेष आज्ञा से धामणगाँव में भव्य भागवती दीक्षा सम्पन्न

धामणगाँव। अनुपम दीक्षा प्रदाता परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. की विशेष आज्ञा से शासन दीपक श्री जयप्रभ मुनि जी म.सा., श्री अनन्य मुनि जी म.सा. के सान्निध्य में 89 वर्षीय मुमुक्षु श्री शांतिलाल जी छाजेड़ की भव्य भागवती दीक्षा 2 जुलाई 2023 को लालीबाई जैन स्थानक में उल्लासपूर्वक सम्पन्न हुई। वीर छाजेड़ परिवार द्वारा आज्ञापत्र समर्पित करने के पश्चात् इसी दिन प्रात: लगभग 9 बजे मुमुक्षु श्री शांतिलालजी छाजेड़ को तिविहार संथारे के प्रत्याख्यान मुनिश्री जी द्वारा कराए गए। दोपहर में मुमुक्षु निवास स्थान से शोभायात्रा प्रारंभ होकर दीक्षा स्थल पहुँची, जहाँ सैकड़ों श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति में शासन दीपक श्री जयप्रभ मुनि जी म.सा. द्वार दीक्षा विधि सम्पन्न हुई। उपस्थित सभी गुरुभक्तों ने अपने दोनों हाथ उठाकर दीक्षा अनुमोदना का लाभ लिया। नवीन नामकरण नवदीक्षित संत श्री उत्साह मुनि जी म.सा. की घोषणा होते ही सम्पूर्ण सभा जय-जयकारों एवं केसरिया-केसरिया गीत से गूँज उठी।

-विकास कुचेरिया

।। जय गुरु नाना ।। जय महावीर ।। जय गुरु राम ।।

भव्य स्वाध्यायी समागम एवं सम्मान समारोह

16-17 सितम्बर 2023, नीमच (म.प्र.)

शनिवार प्रातः 8.30 बजे से रविवार सायं 5.30 बजे तक

दो दिवसीय कार्यक्रम

आत्मीय आमंत्रण

समस्त पूर्व व वर्तमान स्वाध्यायीगण सादर आमंत्रित हैं।
कृपया पधारकर अपनी गरिमामयी उपस्थिति से श्रीसंघ के सौभाग्य में अभिवृद्धि करें।

मुख्य आकर्षण

- महापुरुषों का पावन सानिध्य
- अनुभवी स्वाध्यायियों का मार्गदर्शन
- स्वाध्यायी विकास पर खुली चर्चा
- वर्ष 2019 से 2023 में स्वाध्यायी सेवा देने वाले सभी स्वाध्यायियों को उपहार भेंट

Disconnect To Connect

विशेष कार्यक्रम

17-सितम्बर 2023 । दोपहर 1.00 बजे
नीमच (म.प्र.)

:: गरिमामयी उपस्थिति ::
श्री अ.भा.सा.जैन संघ के राष्ट्रीय पदाधिकारी व विशिष्ट अतिथिगण

विशेष - पुरुष स्वाध्यायी कृपया सफेद कुर्ता पायजामा व महिला स्वाध्यायी केशरिया परिधान में पधारें।

इस अवसर पर अत्र विराजित तरुण तपस्वी, शास्त्रज्ञ, प्रशांतमना, नानेश पट्टधर, परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. व बहुश्रुत वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनि जी म. सा. आदि ठाणा के दर्शन, वंदन, प्रवचन का लाभ सहज ही प्राप्त हो सकेगा।

कृपया सामायिक उपकरण साथ लावें ।

आयोजक
श्री साधुमार्गी जैन संघ, नीमच

शौकीन मुणोत	अशोक मोगरा
अध्यक्ष	मंत्री

आवास
अभिषेक कांठेड़
8770482540

समारोह संयोजक
सुशील गोरेचा
7999890760

आवास, उपहार एवं अन्य व्यवस्था सुनिश्चित करने हेतु कृपया शीघ्र रजिस्ट्रेशन करायें।
Google link : https://forms.gle/fwSEek5nzkbKYvAH9

समता प्रचार संघ

(अंतर्गत - श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ)

संयोजक मण्डल एवं निष्काम संघ सेवी टीम

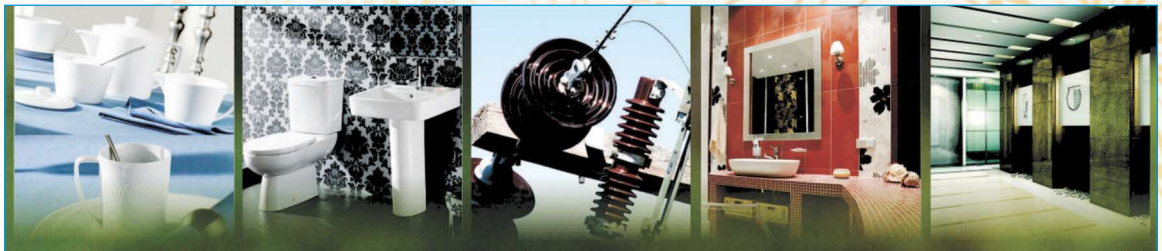

Serving Ceramic Industries Since 1965

हुं शिं उं चौं श्री जग नाना राम चमकते भानु समाना
तरुण तपस्वी, प्रशांतमना, आचार्य-प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में कोटिशः वंदन

A Premier Clay Specialists in The Country...

- 48 years of experience with efficient processing technology and high-quality deposits of raw materials.
- Extraction, Processing and Refining of industrial minerals, particularly Ball Clay, China Clay, Bentonite, Silica Sand, Quartz, Potassium & Sodium Feldspar.
- In-depth knowledge of the market and understands the need for high-grade raw materials in the ceramic industries.
- Extraction of raw materials to the final delivery of the finished product, all of our procedures are subjected to ongoing quality monitoring.
- Export good quantity of minerals to various countries.
- Import of many others minerals and raw materials for Indian ceramics industries.

JLD MINERALS
Jaichand Lal Daga group

Corporate Office :
1st Floor, Labhuji Ka Katla,
Bikaner-334001, Rajasthan, INDIA

Phone : +91-151-2220380 / 2521624 / 3294234
FAX : +91-151-2522768, Mobile No. 09829217944
Email : wbcclay@yahoo.com

www.jldminerals.com

SIPANI
RITZY. POETIC. URBANE

CONTRIBUTING TOWARDS THE CANCER TREATMENT

PATIENT ROOM

RECEPTION HALL WITH PARENTS' PHOTO

RK Sipani and Daga Family donated a 390 bed charitable hospital for the poor and needy at KIDWAI Memorial Institute of Oncology.

The block was inaugurated by Shri Kumaraswamy, the honourable Chief Minister of Karnataka on 22nd Dec 2018.

We look forward to contributing to a better world with our upcoming charitable ventures.

RK Sipani Foundation

#439, 18th Main, 6th Block, Koramangala, Bangalore - 560 095
Contact: Prakash 9448733298, Sipani Office: 08041158525 | Email: sipanigrand@gmail.com

संघ से संबंधित विभिन्न जानकारियां

प्रकाशक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

प्रधान कार्यालय

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401
(राज.) फोन : 0151-2270261
helpdesk@sadhumargi.com

अध्यक्ष एवं प्रधान संपादक

गौतम चन्द जैन, मुम्बई

सह संपादिका

श्रीमती मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

श्रमणोपासक सदस्यता

केवल भारत में	1,000/- (15 वर्ष के लिए)
विदेश हेतु	15,000/- (10 वर्ष के लिए)

वाचनालय हेतु (केवल भारत में)

वार्षिक	50/-

संघ सदस्यता

साधारण सदस्यता	500/-
आजीवन सदस्यता	5,000/-

साहित्य सदस्यता

15 वर्ष	(केवल भारत में)	3,000/-

संघ केन्द्रीय कार्यालय के विभिन्न विभागों से कार्य सम्पादन हेतु सम्पर्क करें :-

E-mail : ho@sadhumargi.com

बैंक खाता विवरण

Shree Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh, Bikaner

State Bank of India

SCAN & PAY

Account No. : 31264126681
IFSC Code : SBIN0003401
Branch : G.S. ROAD, Bikaner
Mob. : 7073311108
E-mail : **accounts@sadhumargi.com**

व्हाट्सएप और ई-मेल आईडी

श्रमणोपासक	: 9799061990	news@sadhumargi.com
श्रमणोपासक समाचार	: 8955682153	
साहित्य	: 8209090748	: sahitya@sadhumargi.com
महिला समिति	: 7231033008	: ms@sadhumargi.com
समता युवा संघ	: 7073238777	: yuva@sadhumargi.com
धार्मिक परीक्षा	: 7231933008	examboard@sadhumargi.com
कर्म सिद्धान्त	: 7976519363	
परिवारांजलि	: 7231033008	: anjali@sadhumargi.com
विहार	: 8505053113	: vihar@sadhumargi.com
पाठशाला	: 9982990507	: Pathshala@sadhumargi.com
शिविर	: 7231833008	: udaipur@sadhumargi.com
ग्लोबल कार्ड अपडेशन	: 6265311663	: globalcard@sadhumargi.com

-: सूचना :-

निवेदन है कि किसी भी कार्य के लिए सम्बंधित विभाग से ही सम्पर्क करें। इससे आपका कार्य सुगम और त्वरित गति से हो सकेगा।

कार्यालय समय – प्रात: 10:00 से सायं 6:30 बजे तक
लंच – दोपहर 1:00 से 1.45 बजे तक

आवश्यक सूचना

सभी संघ सदस्यों से निवेदन है कि कृपया कोई भी नकद भुगतान (Cash Payment) श्री संघ के किसी भी सदस्य, कार्यालय अधिकारी को किसी भी प्रवृत्ति में करें तो केन्द्रीय कार्यालय के लेखा विभाग (Accounts Department) को सूचना जरूर देवें। इससे आपको पक्की रसीद शीघ्र ही भिजवाई जा सकेगी।

मो.न. 7073311108 पर व्हाट्सएप करें।

जय गुरु नाना जय महावीर जय गुरु राम

YOUR TRUST

RAKSHA® PIPES

OUR GUARANTEE

INDIA'S MOST TRUSTED BRAND

FLEXIBILITY IS OUR STRENGTH
RAKSHA
SHAND GROUP
SINCE 1977

Sri Shantilal, Sanjay, Ajay & Tushar Shand

SHAND GROUP OF INDUSTRIES

No. 52, 7th Cross, Wilson Garden, Bengaluru - 560027.INDIA
Phone: +91-80-22235726, 22271902, 22225734.
Fax: +91-80-22234779. E-mail: mkt@shandgroup.com

Diamond Duroflex
Diamond DUROLON
DURO RING LEAK PROOF SEAL TECHNOLOGY
Now with new M.R.O. Technology Resists high impact
LEAK PROOF
IS 15778 : 2007
CM/L NO : 2526149
ENVIRONMENT FRIENDLY LEAD FREE
cftri CERTIFIED
UV STABILIZED
LUCALOR FRANCE

FIRST TIME IN INDIA
ISI FITTINGS WITH ADVANCED CO-MOULDED DURO RING SEAL

www.shandgroup.com रक्षा जीवन भर की सुरक्षा www.rakshapipes.com

रचनाकारों अथवा लेखकके विचारों से संपादक की सहमति होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र बीकानेर ही रहेगा।

प्रधान सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक गौतम चन्द जैन के लिए जैन आर्ट प्रेस, बीकानेर के लिए साक्षी प्रिंटर्स, जयपुर (राज.) में मुद्रित प्रतियाँ 25100

प्रेषक : श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर - 334401 (राज.), फोन नं. 0151-2270261

@absjainsangh
www.facebook.com/HOSadhumargi